

हिन्दुस्तान, मुम्बय, ता० ३० ३०

Swamiji File
1

शरणागार्थियों के सम्बन्ध में

शरणागार्थियों द्वारा शांति की प्रतिज्ञा— ईसाई धर्म-भेद का विरोध करेंगे—शरणागार्थियों के लिए नौकरी के प्रयत्न

(इसारे मिलीय संवाददाता द्वारा)
जिमका (डाक से) । थोड़े दिनों के
पुच्छ के बाद विमान, मे पुरे मानि स्वामि
ही गई है और मगर धार: प्रवेक विमान
या गया है । पानु, ओमनी राजकुमारों
अर्थात् के अन्धों में "कुल गहरी और"
मुसलमान नहीं रहे गये हैं ।

श्री राजकुमारी जी ने स्वास्थ मन्त्रीजी
होने के बाद पहिली बार अपने घर आने
पर अन्धों के हिन्दू-सिख शरणागार्थियों से अन्-
रोध किया कि बचे हुए मुसलमानों को श्री
मानिपूर्वक प्रदत्त करने दिशा जान । उन्होंने
हुआ और आजकल प्रकट किया कि इस
शान की शांति में भी बली पड़ी । उनको
मान्य सुनने के लिये ही विमान बन-
मसदाक एकत्रित हुआ था उसने जाति
रखने और महात्मा गांधी का अनुसरण
करने तथा मोताप सरकार को समर्थन
करने की प्रतिज्ञा की ।

सिक्ख के दो पहलू

एक ओर जहाँ पकिस्तान में पड़े
हुए हिन्दू-सिख शरणागार्थियों के लिए भारत
सरकार द्वारा मोताप सरकार को समर्थन
करने की प्रतिज्ञा की ।

शरणागार्थियों की सेवा
आमनुरोध

शरणागार्थियों की सेवा

शरणागार्थियों की सेवा

गुरुप कलगी, नई दिल्ली: श्री दीवानाब
पल्लू चौधुराज मन्दीर, अन्धकारों, जिन्हा,
भिरौदाली के बने में ।

श्री केदारनाथ भट्टाचार्य, बकील,
निलदवाचार, मेरठ: श्री अमरनाथ भट्टाचार्य,
कुण्ड बजार, मवाल भन्नी, लाहौर के
घरे में ।

श्री राधकृष्ण, पुर नं० ६३२५, २४,
दरियातज, दिल्ली: श्री रामचन्द्र गुरवारी,
तम्बाक के धागारी, मोल बाजार, लाहल-
पुर के घरे में ।

शाहपुरा में शरणागार्थियों की

सहायतार्थ धन संग्रह

साहपुरा (डाक से) । स्वामीय
मेवाभावी व्यक्तियों ने शरणागार्थियों के
लिए चन्द एकत्रित किया है । पंद्रह मी
रुपया: वाक्युचित समिति की रुकम में से
प्राप्त हुआ है तथा अन्य महायता प्राप्त
की जा रही है । एकत्रित रुकम को देने
वरिष्ठकर शरणागार्थियों को ओहने के लिए
शिक्षा दी जायगी ।

नमक लही मिलता

अजकल यहाँ नमक नहीं मिलता
जितने आम लोगों को समीकत हो रही है ।
गमों में किमाल नमक लेने अते हैं पर
नमक के अभाव में निराश लोचन
पड़ता है ।

वांसवाड़में असाधारण स्थिति घोषित

वांसवाड़ा (डाक से) । वांसवाड़ा
सरकार ने हाल ही में एक आदिनेस प्रकाशि
कर राज्य की स्थिति को असाधारण घोषित
कर दिया है । इस आदिनेस द्वारा राज्या-
विकाशियों को अर्जीन अधिकार दिये गये
हैं । राज्याधिकारी जिनपर जान करेगे
या जो सकमन्दों के साथ देखे या सम्पर्क
रखने पाये जायेंगे, उन्हें निरपत्ता करने
उनकी हलक्यों पर पारिवी लगाने, उन्हें
मुजरबद करने, उनकी जयदाद जका
करने, आदि की कठोर से कठोर कार्रवाई
कर सकेंगे । प्रजामंडल द्वारा बलवाई जाने
वाली मोल, पाठशाळा, गुद्रण, प्रशासन

दिल्ली में हो रहे अन्तरीष्ट्रीय श्रम संस्था के परि

अन्तरीष्ट्रीय

युवतप्रांति में शांतिकार्य

श्री सुहरावर्दी से बातचीत

श्री सुहरावर्दी तथा श्री दिनदा मेहता
२८ अक्टूबर को मेरठ आये । सां साहल
भन्दी अहमद के यहाँ आने कुछ प्रमल
व्यक्तियों ने अनुमन स्थिति पर बातचीत
की जिनमें श्रीमता कमला चौधरी सरपा
विमान परिपद तथा श्री जयकुर्मीमह जिन्हा
भन्दीमेरठ मेरठ ने विशेष रूप से भाग लिया ।
श्री जयकुर्मीमह जिन्हा रजिस्ट्रार ने
श्री सुहरावर्दी को प्रान्तीय सरकार के
मानि रखने के कार्य को बतलाने हुए
कहा कि आप मेरठ के एक भी मुसलमान
को पेच नहीं कर सकेंगे जिने वह
जिन्हालत हो कि हमने उसकी रक्षा के लिए
कई बर्षों को है ।

श्रीमता कमला चौधरी ने आने
कहा कि हम एक भी मुसलमान को
आने यहा में जाने नहीं देना चाहते और
हम उनके साथ बैसा ही जनीय करना
चाहते हैं जना महात्मा गांधी का
आदेश है । इसी का यह नतीजा है कि हमारे
प्रांत के मुसलमान जाति के साथ रह
सकेंगे, लेकिन कमिन्समा में जाका नेताजी

श्रीमदार, २७ अक्टूबर
अोजन अन्तरीष्ट्रीय श्रम
संघ से संसार के विभिन्न
की उच्च बनाने में प्रयत्न
अन्तरीष्ट्रीय श्रम सं-

अन्तरीष्ट्रीय श्रम सं-
वास्तविकताओं और मज
जिन्हाल कर श्रमिकों के
के सम्बन्ध में निर्णय
सभी समितियों में प्रतिनि
इन प्रकार होता है :-
निजि, एक कारखानेदे
और एक श्रमिकों का

अठारह बजे पुराने
उद्देश्य सामाजिक न्याय
और स्वाधीनता
अन्तरीष्ट्रीय कार्रवाई
की दया सुनाने की
के प्रांत को उच्च बनाय
नया ही साथ आधि
स्वाधिन की प्रामाणिक
अन्तरीष्ट्रीय श्रम

अने बातें ने के

प्रांत में है ।
प्रांत में है ।
प्रांत में है ।
प्रांत में है ।

प्रांत में है ।
प्रांत में है ।
प्रांत में है ।
प्रांत में है ।

प्रांत में है ।
प्रांत में है ।
प्रांत में है ।
प्रांत में है ।

प्रतिशोध या बदला

—श्रीरामसिंहासन शास्त्री, व्याकरणाचार्य—

उद्धुद प्राणी-स्वार्थबाध और अप-कार दो कारणोंसे प्रतिशोधमें प्रवृत्त होते हैं। अपना चारा खाते देख बैल दूसरे बैलपर झपटता है। अपना टुकड़ा छीनते देख कुत्ता दूसरे कुत्तेको काटता है। पर बैल और कुत्ते अपने मारनेवालोंको भी नहीं भूलते, अबसर पाते ही उनपर दूट पड़ते और उन्हें मार-काट लेते हैं।

सृष्टिका सबसे विवेकशील प्राणी मनुष्य, पूर्णतया अभिज्ञताके साथ उपर्युक्त तीनों कारणोंमेंसे एक-दो या सबके कारण प्रतिशोधके लिए प्रवृत्त होता है। उसकी बुद्धि जब जितनी विकसित रहती है उसी अनुपातसे वह उच्च, मध्यम और अधम प्रतिशोध करता है। बालक चोटें बड़नेवालेकी कलाई दाँतोंसे काट लेता है और अनोच शिशु, जिसे कोई प्राकृतिक प्रतिशोधके अस्त्र—सिवा नाखूनके—प्राप्त नहीं रहते, चिड़नेपर या तो अपने नन्हें-नन्हें नाखूनोंसे मुँह नोच लेता है या मचल पड़ता है। और सस्याग्रह कर लेता है। किशोरावस्थाके बच्चे देखा प्रयत्नसे सिरफ़ूटीवत् तक ही संतुष्ट हो जाते हैं तो सभ्य, सुशिक्षित, राजनीतिज्ञ, राष्ट्र-विश्वासा नरमेवपर। श्रियां गरक-पान, कूपपतन और प्राणविसर्जनतक पहुँचती हैं तो मुकवि मेंढौबा लिखने और लेखककी कटु आलोचना करनेतक। तात्पर्य यह है कि प्रायः प्रत्येक व्यक्ति इस रोग-का रोगी होता है और चिरकालिक साहित्य भी इसका प्रत्येक देश, काल और भाषामें समर्थन करते जान पड़ते हैं।

यदि हम संस्कृत साहित्यपर इष्टिपात करें तो शायद होगा कि वेद भगवान् हमें अपने विशेषियोंके प्रतिशोध करनेको कहते हैं—‘सर्वं तं भस्मबाह्वुः’ रामायण-

ही मिली। तब उठकर सैन्यसंग्रह किया और अन्तमें वह विजयी हुआ। इसी प्रकार महाकवि माघने भी उद्धव, भीष्म और बलरामके मुखसे कहावा है कि—‘दुखोंके अपमानसे दुःखी होकर भी जो बिना बदला लिये जीता है वह केवल अपनी माताको प्रसन्नदेना पहुँचानेके लिए ही पैदा हुआ है—संसारमें उसका कोई उपयोग नहीं। पैरोंसे रौंदी जाकर ऊपर उड़ने और अन्तमें शिरपर चढ़ बैठनेवाली तुच्छ घूँस भी, अरि-निष्ठति-विदग्ध-हृदय अकर्ण्यसे लाख गुना अच्छी है। शत्रुओंके उन्नत भाल और मूर्खोंपर खेळमें ही जो अपना पैर नहीं रख सकता उसकी निरात्म्य कीर्ति कैसे दिशा-प्रतिदिशाओंमें गूँजेगी? वेणीसंहार या प्रायः सभी उत्कृष्ट काव्य प्रतिशोधो-त्तेजक वाक्योंसे भरे पड़े हैं। यहाँतक कि स्वयं भगवान्ने अमरीषके अपमानका बदला दुर्वाससे चुकाया जो कभी अपने अपमानके प्रतिशोधमें बेजारी शकुन्तला-का जीवन ही चौपट कर चुके थे। स्थाली पुलाक न्यायसे प्रदर्शित किये गये उपर्युक्त उद्धरणोंसे यह सिद्ध है कि हिन्दू संस्कृति जिन कथाओं, किंवदन्तियों और रीति-रिवाजोंसे बनती है उनमें प्रतिशोधकी भावना भी मुख्य है।

इस्लामका सारा साहित्य-प्रवर्धकोंको दूँड़नेके लिए जोड़ यदि हम शान्ति और धर्माके अग्रदूत, महात्मा ईसा-प्रवर्तित पारचाय सम्प्रदायके पके मूर्खामिथिक कवियोंकी कृतियाँ देखें तो उनमें भी प्रतिशोधके सैकड़ों उदाहरण मिलेंगे। महाकवि शेक्सपियरके ‘जेल्स नाइट और डाट यू विल’ नाटकमें हम देखते हैं कि वेबार्थिचन और वियोलाके वैधपरिवर्तनसे

तुहास्तु गावः क्षमयन्ति पापं दवास्तु गावलिधिं नयन्ति।
संरक्षितारोपनयन्ति विचं गोभिर्न दुःखं भवमस्ति किञ्चित् ॥

अब प्रश्न यह है कि इसका उपाय क्या है? प्रथम उपाय हम लोगोंको अवश्य। सरकार सुनती नहीं। वाम, दान, भेद केवल इन्हीं तीन नीति-योंसे काम लेना है। बड़ी-बड़ी गोशाला कीजिये। चन्दा कीजिये। बहुत-सी गऊ खरीदिये। मुसलमानोंको हाथ जोड़िये, समझाइये, लालच दीजिये, हिंदुओंके ही कारण तुम्हारी जीविका है यह निश्चय करा दीजिये, इसका उदाहरण उनको प्रत्यक्ष करके दिखला दीजिये। सरकारसे भी—चाहे जूने, चाहे न जूने—हस्ता करते जाइये, अखबारोंमें भी धूम मचाये रहिये। महीनेमें एक लेख इसीपर सही, आधुनिक सदा इसका चरचा रखिये, चाहे काम ही चाहे न हो बके जाइये। वच, यही सब उपाय हैं। सरकारी कान कोसाइले बड़ी अवधि रखते हैं, होरा रहेगा तो अवश्य कुछ होगा।

कालनीतिके प्रभावसे भारतवर्षके और विषयमात्रमें आप लोगोंका बम-नीगत रक्त-स्रोत शीतल और स्थगित है, केवल एक इसीके नाममें कुछ उत्पन्न और प्रभावित होता है। इसमें भी शिथिल हुआ तो इतिमी और जीवन-संस्कार! आशामात्रकी समाप्ति है, इसको दूरतक सोच लीजिए। उसी आर्य तेजोमय रक्तको सतेज करने ही को यह संग्रह प्रकाशित होता है। लीजिये और देखिये कि आपके यावत् पूर्वपुरुषमात्रको इस विषयका कितना आग्रह था, और कुछ नहीं हो सकता तो प्रकाश बन निवारण हो जाय तो भी हम कृतार्थ होंगे।

—हरिदचन्द्र।

जो भ्रम पैदा हुआ था उसके कारण ओलीवियाके एक इताया प्रेमीने महा-भयानक आक्रमण बियोलोपर किया था और उसके भाईका रक्त, कतान ड्यूकके चचाको चोट पहुँचानेके प्रतिशोधमें पकड़ा गया था। एक दूसरे विश्वविख्यात नाटक ‘मर्चेंट आफ वेनिस’ में साइलकका प्रतिशोध तो निष्ठ है ही, पर किरिचयनों-का बेचारे यहूदीकी लड़की मगा लेने और रक्त अपहरण करनेके अतिरिक्त स्वयं न्यायाधीशका साइलककी जायदाद जप्ती-का हुक्म देना भी कम मजेदार नहीं है। अग्रजोम प्रचलित इन्द्रियुद्ध, एक दूसरेके खूले प्रतिशोधका सत्य मार्ग समझा ही जाता है।

पर यदि हम उपर्युक्त उद्धरणोंको प्राचीन या अस्मय युगका कार्य मानें और आज, जब सभ्यताका सूर्य अपने प्रचण्ड तेजसे संसारको आलोकित कर रहा है, उस युगपर इष्टिपात करें तो भी हम प्रतिशोध प्रचुर परिमाणमें पावेंगे। इस महायुद्धमें दुनियाके सर्वश्रेष्ठ व्यक्ति-योंतकने बार-बार दुहराया था कि ‘हम अमुक देशसे इसका प्रतिशोध लेंगे’। और प्रतिशोधकी जो कारवाइयां विरवमें हुईं उनसे कमसे कम आधुनिक विचारक तो अपविजित न रहे होंगे। स्वयं हमारे इस अग्रजोम देशमें भी अगस्त सन् १९२२ के बाद प्रतिशोधकी भी ज्वलन्ती लीपापोती (पृष्ठ ६ काव्य ४ में)

हिन्दू शासनम काश्मार

—श्रीजनार्दन शास्त्री वरकले—

अतिप्राचीन कालमें निसर्ग-रमणीय इस पवित्र प्रदेशपर नागर्द नामक राजा राज्य करता था। दीर्घकालतक इसीके पूर्वजोंने इस देशपर शांतिपूर्वक शासन किया। उस समय यहाँ सनातन वैदिक धर्मका प्रचार था। बाद सन् २४५ में सम्राट् अशोकने बौद्ध भिक्षुक भेजकर बौद्धधर्मका प्रचार करवाया।

बौद्ध-शासनमें। सम्राट् अशोकके राज्यकालसे ही आधुनिक इतिहास मिलता है। उस समय उत्तर भारतमें बौद्धधर्म जोरपर था। काश्मीरको अशोक-साम्राज्यमें मिला देनेके बाद वहाँ कई बौद्धमठ बन-वाये गये। भीनमर शहर सम्राट् अशोकने ही बसाया था। उसने मित्र और यूनानसे परभरके काम करनेवाले कई कारीगर अपने यहाँ बुला लिये और उनसे कई कलापूर्ण इमारतें बनवायीं। आज काश्मीरसे बौद्धधर्म छुट हो गया है। सम्राट्का बसाया शहर भी उस अवस्थामें आज नहीं है, फिर भी उसके ध्वंसावशेष आज भी इस बातकी घोषणा करते हैं कि किसी समय एक बड़े पराक्रमी सम्राट्ने यहाँ राज्य किया था। इस पराक्रमी राजाने सनातन वैदिकधर्मके भक्तोंको तोड़ खानेकी पूर्ण कुचैला की थी।

इसके बाद काश्मीरके दूसरे प्रतापी नरेश महाराजा कनिष्क हुए। इसके राज्य-कालमें भी बौद्धधर्मका बड़ा प्रभाव था और तीसरी बौद्ध समा भी हुई थी। आगे चलकर भगवान् आद्य-शंकराचार्यके तपोब्रह्मसे पुनः भारतमें सर्वत्र सनातन वैदिक धर्म संस्थापित हुआ। बौद्धधर्म छुट होता गया। बादके सभी राजा-महाराजा वैदिक धर्मानुयायी ही हुए।

काश्मीरके विजय और पराक्रमी राजाओंमें राजा इषका नाम विशेष उल्लेख्य है। वे बड़े साहसी, लेझकी और सब कलाओंमें प्रवीण तथा राजाओं-

प्राज्ञमय बर्गके हाथोंमें देते हुए कुछ वर्षतक राज्य किया। शाह मीरके बाद काश्मीरके कई मुसलमान शासक बने परन्तु सभी अयोग्य होनेके कारण वहाँ पुनः अराजकता फैली। आगे चलकर सन् १४२० में कैतुल काबुलदीन नामक राजा गद्दीपर बैठा। वह शासकोंका बड़ा ही भक्त था—उसने उनके किए केवल ‘कर’ ही माग नहीं किया, प्रत्युत कई नाशगों-को जागीरें भी दीं। मुसलमान होते हुए भी उसने कई मन्दिरोंका जर्जरदार कर-बाया था। अबतक काश्मीरके शासक मुसलमान होते हुए भी राज्यभवन हिंदू-का ही होता और राजाओंके अतिरिक्त प्रायः सभी शासक हिन्दू ही रहा करते थे। परन्तु सन् १५८६ में सम्राट् अकबरने इसपर विजय प्राप्त की और इस प्रकार काश्मीर इस्लामी शब्दके नीचे आ गया।

सम्राट् अकबर तीन बार काश्मीर गये और वहाँ ‘हरिपर्वत’ नामक किला बन-बाया था। अकबरके बाद जहाँगीरने जहाँपर शाहीमार बगीचा और निवात-बाग बनवाया। आगे मुगल-सम्राट्को औरसे मुसलमान सुबहार नियुक्त किये जाने लगे। स्वार्थवश वे हिन्दूको सताते, फलतः मुगल-साम्राज्य भी टोका होता गया। अन्ततः वह भी समय आ गया जब काश्मीरकी अमानुष अफगानी शासनमें आना पड़ा।

अफगानी शासन अभिशाप अफगानोंका शासन हिन्दुओंके लिए ईश्वरका अभिशाप था। वे प्रजाका रक्त चूसनेमें ललक भी नहीं शिथिल करते थे। कहा जाता है कि अफगानोंके लिए आद-मीका सिर काट केना एक फूल तोड़नेसे अधिक महत्त्व न रखता था। वे लोग हिन्दुओंको बोरेमें भरकर ताताबमें फेंकवा दिया करते थे। हिन्दुओंपर चार्मिक कर भी लगा दिया था। इस कारण (पृष्ठ ४ काव्य १ में)

हुआ। कांग्रेसी नीति बालूकी भीतकी नई कुछ ही घंटों में मेरे सामने ही दह गयी, मैं मुसलमानों के विरुद्ध हो गया। महात्मा गांधीका प्रतिदिनका कोबाहलपूर्ण राग मुझे बेचुरा माहम पड़ने लगा दिया। मैं विश्वास करने लगा कि कांग्रेसकी मुस्लिमपरस्त नीति, सर्वथा अनुपयुक्त और अनुचित है।”

ये शब्द हैं पंजाबके एक प्रसिद्ध कांग्रेसी कार्यकर्ताके जो उन्होंने रेकके एक हिस्सेमें मुद्रित किये। उनका नाम है सरदार हरनाम सिंह। यह प्रसिद्ध हो गया था कि किसी अततायीके हाथों उन्होंने समाधि ले ली है पर ईश्वरकी जीला, वे अपने अनुजके साथ अपने जुड़बियोंकी खोजने पर खाबाद जा रहे थे।

आज मुझ जैसे अनेक कांग्रेसी व और कांग्रेसके पक्षपाती बिचारकोंका यह डड निश्चय हो गया है कि ९९ प्रतिशत मुसलमान भारतका हित नहीं चाहते। चौधरी खलीकुल्लामों वराचीमें बैठे नकारे की चोट करते हैं—“भारतीय सरकार मुसलमानोंकी भक्तिमें अविश्वास क्यों करती है?” माननीय पंतजी उनसे यह क्यों कहते हैं कि “अपनी भक्ति परित्यक्त?” वे भक्त हैं, महामक्त हैं। बारम्बार वे कह रहे हैं कि हम भारतके प्रति अट्टा रखते हैं।” किन्तु मियाँ खलीकुल्लामों साहब, क्या और घटाना एक साथ नहीं चल सकता। गणितका प्रश्न सामने है। या तो जमा ही, कीजिये या घटाइये ही। मुसलमानोंको अपनी दुंगी चाल दूर करनी ही होगी। भारतके हिन्दू और कांग्रेसी बहुत, बोझा खा चुके हैं। गांधीजीने बार-बार मियाँ जिनाके द्वार पर जाकर हाथ पेटाया, पर रोटीके स्थान पर जाकर हाथ पैलाया, पर रोटीके स्थान पर पत्थर ही प्राप्त हुए। पंत मंत्रिमंडलने भी पिछली बार अपने हिन्दू-निर्वाचकों की चिन्ता न करते हुए मुसलमानोंको प्रसन्न करनेमें कुछ उठा न रखा।

पर अब समय बदल गया है। मुसलमानोंका पुण्यस्थल, पाकिस्तान बन चुका है। हिन्दुस्थान तो नापाकि-

स्तान, मधुरा, अलीगढ़ जलपुरमें युक्त देशी कारखाने मिले। मसजिदों और क़ोंसे बम, बन्दूक, कारतूस, तलवार तथा अन्य शस्त्रास्त्र प्राप्त हुए। क़ोंमें मुर्दे इन बन्दूकोंकी सीख रहे थे और मसजिदोंमें फरिश्ते। जलपुरकी अमनसभाके एक वज्रव्यवसायीके घरसे इतनी साराजी बरामद हुई कि वह कई जिबोंके लिए पर्याप्त थी। युक्तप्रान्त तथा मध्यप्रान्तमें जहाँ भी तलाशियाँ हुई, हथियार पकड़े गये। पता नहीं, मद्रास और बम्बई क्यों चुप हैं? अजमेर शरीफ भी मौन धारण किये हैं? क्या इन स्थानोंपर फरिश्ते ही रहते हैं? क्या वहाँ पाकिस्तानी सुगन्ध नहीं पहुँची? क्या सरदार पटेलका कबन केवल युक्तप्रान्त, दिल्ली और मध्यप्रान्तके ही लिए था?

जिजाचीशोंने घोषणा की कि तीन या चार दिनोंके अन्दर मुसलमान अपने हथियार जमा करें। गांधीजीने भी प्रार्थना की। पर क्या इन चेलावनिशोंका असर हुआ? कितने हथियार जमा हुए? जमा करते भी क्यों? आगे चलकर भारतभक्तिका प्रदर्शन जो करना है? इधर मैनीतालके जिलेमें जीपकारमें कोई दूत पाकिस्तानका सन्देश पहुँचा रहा था? कहते हैं कि वही जीपकार नजीबाबाद (जिला बिजनौर) दिखायी पड़ी। वह सन्देशवाहक वहाँ दो दिन ठहरा, फिर अदृश्य हो गया। कायदे आज़म मुसलमानोंकी सर्वस्व स्वाहा करनेका आदेश देते हैं। मियाँ रजनफर उन्हें बगाते हैं। क्या इसका कुछ भी अर्थ नहीं। आज भी मुसलिम लीगके अधिकारी भारतभूमिको ऊसर करनेवाले बीज बोनेमें गुतरूपसे लगे हैं। मुसलिम लीग आज भी भारतमें पैर जमाये है। मुसलिम नेशनल गार्ड, जिसने पंजाबकी पाक बनानेमें सबसे अधिक सहायता दी, जिसने हिन्दुओंको बहिस्तकी सेर धरायी, हिन्दु जियोंको हुरीका पद दिखवाया और हिन्दू बालकोंको ‘गिलमान’-सेरामें भरती करा दिया, आज भी पूरे रोके आगे बढ़ रही है जब कि राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ चिन्तने कानूनी तत्त्ववारके नीचे कुचक दिया गया है। आज

रिक स्वर’ भी उठे। In Public Domain. Digitized by eGangotri निर्यात कामरे और बादरार मिनोके दो परिचय और गडकरी का ‘अखंड दीपावली’ प्रहसन बड़ा ही रोचक और सामयिक सिद्ध हुआ है। उक्त प्रहसन द्वारा लेखकने मियाँ स्तान और बीबी स्तानको पुनः एकमें मिलाकर अखण्ड दीपावली मनात हुए कई साम्दायिक, राजनीतिक गुरिभ्यां अप्रत्यक्ष रूपसे सुलझानेका प्रयत्न किया है। रा० रा० कामतका अर्थ शालविषयक लेख मननीय है।

अंक्रमें सबसे महत्वपूर्ण बात ‘कोयना नहर-योजना’ है। सताराके पास यह नदी है। नहरके बननेसे महाराष्ट्र वर्तमान गरीबीसे बहुत कुछ आण पा सकेगा। नये २ कल-कारखाने खुलेंगे, विद्युत इतनी

भी ‘पाकिस्तान’के पोषक जालोंकी संख्यामें दिल्ली और सहरनपुरसे भाग रामपुर चलेजाते हैं। कहते हैं १५ अगस्तको एकमुसलमान पुलिस कप्तानने राष्ट्रीय ध्वजका आदर नहीं किया तो वह इंस्पेक्टर बना दिया गया। हाय! बच, कोचसे उतारकर वेतकी कुर्सीपर बैठा दिया गया।

कानपुरके २०० सौ मुसलमान नौकर, जिन्होंने पाकिस्तानको चुना था, किसी मुसलमान बन्दुकी कपासे यहाँ ही रक गये। इनका प्रत्येक घर आज भारत मांकी पीठमें भोंकनेके लिए एकत्रित छुरोंसे भरा है। अनेक राष्ट्रीय मुसलमान भी बेष परिवर्तित लीगी ही हैं। कई लीगी कांग्रेसी बन गये हैं, खदर पहिने लगे हैं, ग्राम, नगर या जिला कांग्रेस-कमेटियोंमें भी आ गये हैं। ये भारतमें रहें, कौन मना करता है? पर भारतीय बनकर, भारतीय अट्टासे ओत-प्रोत होकर पहिलेकी भांति ही रहें, हिन्दुओंके साथ कथिते कच्चा मिड़ाकर देशकी उन्नति करें। पर विश्वास कैसे हो? मौलिक राजभक्ति तो कागजी फूड है। ‘हाथीके दांत खानेके और दिखानेके और’ भक्तिका प्रत्यक्ष प्रमाण तो अभीतक एक भी नहीं मिला है। इससे नापाकस्थानको छोड़कर पाकस्थानकी हज कर आये तो बेहतर है। फिर कागजी फूलोंसे हम भी तो बोझा न खा सकेंगे।

जिसमें बिना दवा खाये ही और लिले रोगोंके दूर करनेकी बहुत आसान विधियाँ लिखी हैं और जो सन् १९२६ ई० में गवर्नमेंटसे जन्त होकर अदालतसे छुट चुकी है मुफ्त भेज देगे परन्तु पत्रके साथ टाई आनेके टिकट आने चाहिए। रिया-सती टिकट न भेजें।

पता—डा० बी० एल० करयप, अध्यक्ष रसायन घर, २६ शाहजहाँपुर, यू० पी०

५००) सौ रुपये इनाम प्रेम यन्त्र

इस अवाचारण यन्त्र के पास रखने से आष घंटे अन्दर आपकी निष्ठुर से निष्ठुर प्रेमिका आपके प्रेम से बेचैन होकर आपके पैरों पर आ गिरेगी। प्रत्येक आपत्ति के बचानेवाले इच्छानुसार विवाह एवं समस्त अभिलाषाओं की पूर्ण करनेवाले सवगुण इस यन्त्रमें विद्यमान हैं—अधिक प्रशंसा करना व्यर्थ है बतौर नमूना फी यन्त्र केवल २) तीन यन्त्र एक साथ मंगानेपर केवल ५) डाक व्यय (—) अलग।

डी० पी० शाह साहब बलीमपुर (खीरी)

कोमल यमडीके
वाल निकालनेके लिये
बादशाही
साबू, पावडर, लोशन
सर्वोत्तम है।

सन्मार्ग में

विज्ञापन देकर लाभ उठाइये

हुकुमचन्द जूट मिल्स लि०

हुकुमचन्द नगर, नईहटी,
बी० ए० रेलवे

(स्थापित १९१६)

उच्च श्रेणीके हैसियन, बोरें, केनवस, तम्बू, सुतली, नेवार तथा ऊनी कम्बल आदिके निर्माता।

मैनेजिङ्ग एजेन्ट्स

रामदत्त रामकिसनदास

४ नकाबवाट स्ट्रीट, कलकत्ता।

गोवध महान् पातक

पहिले राक्षस आदिमियोंको खातेथे और अब आदमी पशुओं को खाते हैं जो बड़ासे बड़ा पाप है और जो नहीं होना चाहिये । मैं समस्त हिंदुओं, मुसलमानों और पारसियोंसे प्रार्थना करता हूँ कि वे ऐसे निरीह प्राणियोंका सारा जाना रोके और विशेषतः गायोंकी रक्षा तो होनी ही चाहिये ।

—महामना मालवीयजी—

गो गुहार

अरिहु दंत तुन धरइ ताहि मारत न सवल कोइ ।
हम संतत तुन चरहि वचन उचचरहि दीन होइ ॥
हिंदुहि मधुर न देंहि कटुक तुरकहि न पियावहि ।
पथ विशुद्ध अति सवहि वचन सहि शंभन जावहि ॥
सुन शाह अकबर ! अरज यह करत गऊ जोरे करन ।
सो कौन चूक मोहि मारियतु मुयेहु चाम सेवत चरन ॥

डूवती नैया

खायके घास औ पात सबै जलपान करें पुनि जाल तलैया ।
सांभ भये घर आपुहि आवत कोउ न चाहिय जाहि डूवैया ॥
है जगदेव सरूप गऊ यह ताहि सतावत कैसे कैसेया ।
गोवध टारन यत्न करो, नहि भारतकी अब डूवत नैया ॥
(संगृहीत)

तुरकी घरम बहुत हम खोजा, बहु बजगार करै ए बोधा ।
गाफिल गरब करै अधिकाई, स्वारथ अरथि बधैं ए गाई ॥
जाको दूध घाई करि पीजै, ता माता कौ बध क्यूं कीजै ।
लुहरैं थकै दुह पीया खीरो, ताका अहमक भखै सरीरो ॥
बेअकली अकलि न जानही, भूले फिरैं ए लोइ ।
दिल दरिया दीदार बिन, भिस्त कहां हैं होइ ॥

(अष्टपदी रमैणी)

प्रदेश - रानीतक आ चुके थे वे । अपने विजित देशके साथ वे दुर्दान्त दस्युओं का व्यवहार कर रहे थे ।

हजारों और लाखोंकी संख्यामें आर्य अपना घरबार छोड़कर भाग रहे थे। दक्षिणा पथ और मगधकी ओर । रमणियोंका अपहरण खुलेआम हो रहा था । वैभव शाली प्रासाद भस्मीभूत हो रहे थे । इधर देशके गुप्त षडयन्त्रकारियों और इन भले-बुरेकी गुप्तसंधि हो गयी थी । ब्राह्मणमन्त्री पुण्यमित्र निरय नवीन भयंकर समाचार सुनता । आज अशुभ विहारमें इतने शूल आवे । अशुभ नगरको भले-बुरे ने नष्ट कर डाला । पर रक्तके आँसू गिराने के सिवाय और कोई उपाय ही न था । सम्राटकी अहिंसा, नहीं नहीं कायरतासे वह निरुपाय था । सम्राटके आजके व्यवहारने ता उसे पूर्ण निराश बना दिया ।

‘मगवन् ! क्या आर्योंका अस्तित्व यों ही छुप्त हो जायगा । वोल्तो मगवन्, चुप क्यों हो ।’

प्रतिभा ! फिर भी मूक थी और अन्ततक मूक रही । महामन्त्री बड़बड़ाता ही गया—‘जो कलतक आनपर मर मिटते थे आज कायर हो रहे हैं । अहिंसा नहीं—कायरता—फिर इस कायरतासे बचनेका कोई उपाय ? कोई नहीं—नहीं—ओ ! मैं तो विश्विप्त हो जाऊँगा । शीघ्र ही—

‘वैय’ बरो महामन्त्री वैय’, प्रयत्न करो, प्रयत्न कानेपर ही फल मिलेगा ।

महामन्त्री चौंक उठा । वे किसके शब्द हैं ? क्या प्रतिभा बोल उठी ? नहीं—नहीं तो फिर ?

धूमकर देखा तो सेनापति खड़े थे ।

‘कौन सेनापति ! आओ, कैसे आवे ।’

‘उसी कामके लिए जिसने तुम्हें वि-

‘तो जा सकते हो ।’
दूत चला गया । शांतिको भंग करते हुए सेनापति बोला—‘देखो महामन्त्रीजी । इनसे निपटना ही होगा । मातृभूमिकी रक्षा करनी ही होगी ।’
महामन्त्री निवृत्त था । मौनने खीकृत्तिकी सूचना दी ।

‘सम्राट् ! कायगता छोड़िये ।’
‘शुद्धे कायर कहते हो महामन्त्री ! तुम प्रजापति तो नहीं हो, जानते हो मैं सम्राट् हूँ ।’

‘जानता हूँ । तुम सम्राट् हो, पर कायर । आर्य-संस्कृतिपर कुठाराघात करने-वाले नीच, पापी, अवम, देख आँख खोलकर देख वे आर्य भागते हुए—वे लजनाएँ, वे दुःखी हैं बच्चे, जलते हुए प्रासाद । वे दौड़कर मगधकी ओर आ रहे हैं, सम्राटको चिन्तित रहे हैं कि तुम्हारे नेत्रोंपर तो कायरताकी पट्टी ढँकी है ।’

‘तुम बंदी कर दिये जाओगे महामन्त्री !’

‘और मैं तुम्हें बंदित्वसे छुड़ा दूँगा सम्राट् । एक चमचमाही अति सम्राट्के कलेजेको पार कर गयी । सर्वत्र शांति थी ।

‘महामन्त्रीजीकी जय’ की हुंकार आकाशको चीर रही थी । प्रजाके आम्रह-से नहीं, उसके हठसे उन्होंने सत्ता अपने अधिकारमें ली । भले-बुरे आर्यभूमिसे भगा दिये गये और पुनः पंचनद प्रदेशपर पुनीत भारतीय पताका फहराने लगी ।

इतिहासके पृष्ठोंने भी संशयमें लिखा—‘मौर्य-सम्राट् बुद्धदेवको मारकर पुण्यामित्रने राज्यपर अधिकार कर लिया ।’

तथा कितने ही महापुरुषोंके जीवनमें गाय का धर्मित सम्बन्ध रहा है । वास्तवमें गाय हिन्दुओंकी संस्कृतिका प्रतीक है । गोवंशके नाशमें हिन्दु अपना विनाश तथा रक्षामें जीवन समझते हैं ।

मुस्लिम-कालमें
मुस्लिमकालमें आजकी तरह बड़ा हुआ गोवध तो था ही नहीं, बकरीद तथा अन्य पर्वों के समय जो गोवध होता था उसे भी देशके लोगोंकी धार्मिक भावना तथा आवश्यकताको दृष्टिमें रखते हुए बराबर हुमायूँ, अकबर, जहाँगीर तथा अन्य मुसलमान बादशाहोंने कतई बन्द कर दिया । कितने ही बादशाहोंने गोवध करनेवालोंके लिए मृत्यु-दंडका नियम रखा था ।

अंग्रेजोंने देशको स्थायी तौरपर पराधीन रखनेकी जो योजनाएँ बनायीं वे उनमें गोवंशका हास एक मुख्य तत्वबीज थी । अतः अंग्रेजी राज्यने देशके लोगोंको कमजोर तथा कायर बनाने और विदेशीको चमड़ा, हड्डी आदि भेजनेके लिए गोवधको जन्म दिया तथा बढ़ावा जिसके परिणाम स्वरूप दूध-चीका तो कहाँ डिकाना पेटभर अन्न भी नहीं मिलता । कमजोरी और रोग बढ़ गये, आयु कम और मृत्यु संख्या अधिक होती जा रही है । अंग्रेजोंने जो योजनाएँ देशको कमजोर करनेके लिए बनायीं उनमें वे सफल हुए ।

अब अंग्रेजी राज्य खत्म हो रहा है तथा स्वतन्त्र भारतका विधान बन रहा है इस विधानके बनानेवाले अंग्रेज या कसईखाने और चमड़ेके व्यापारियों या उन लोगोंके प्रतिनिधि नहीं जिनका काम गोवधसे है वरन् उन लोगोंके प्रतिनिधि है या उनकी शक्तिसे बने हैं जिनका गोवधसे धार्मिक तथा शारीरिक काम ही नहीं संस्कृति तथा धार्मिक सम्बन्ध भी है

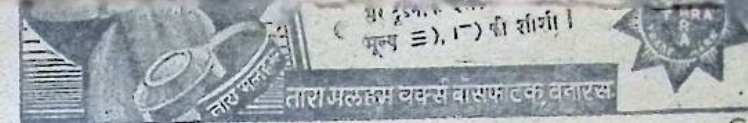
स्वराज्यका सञ्चन
स्वतन्त्र भारतके विधानमें गोवध-निषेधका नियम रखना धार्मिक, शारीरिक दृष्टिसे लाभदायक, सांस्कृतिक तथा वैधानिक दृष्टिसे उचित ही नहीं, करोड़ों लोगोंकी सद्भावनाका भी प्रतीक है, जिनके बचकर यह विधान बन रहा है । आखिर देशके नेता तथा विधान परिषद्के सदस्य अपने कर्तव्यका पालन करेंगे । यदि उन्होंने अपने मतदाताओं की भावना तथा परकाभकी परवाह न करके सांप्रदायिक हठको न छोड़ा तो देशके लोगोंका उनपरसे विश्वास उठ जायगा । गोवध बन्द न हुआ तो अंग्रेजी राज्य और स्वराज्यमें कोई भेद न होगा । साधारण आदमीकी दृष्टिसे गोवधका बन्द होना ही स्वराज्यका बड़ा सञ्चन है ।

बाबरका हुमायूँ के नामपत्र पत्रहवीं शताब्दीमें भारत आनेवाले यात्रियोंने ऐसी घटनाओंका उल्लेख किया है कि गोवध करनेवालोंको बादशाहने प्राणदण्ड तक दिया था । जब भारतका शासन सत्त तैमूर-वंशीय गुगल बादशाहोंके हाथ आया तब उसका प्रथम शासन बाबर हुआ मरते समय उसने अपने उत्तराधिकारने पुत्र हुमायूँके नाम एक पत्रलिखा था—

‘दे मेरे पुत्र भारतवर्षमें भिन्न-भिन्न संप्रदायके लोग हैं । परमात्माको बन्ध-वाद है कि उसने तुम्हारे हाथोंमें इस देशका शासनसत्त सौंपा है । तुम्हें अपने मनसे धार्मिक पक्षपात अलग कर देना चाहिये ।

प्रत्येक धर्मके नियमके अनुसार उनके साथ न्याय करना और विशेष कर गोवधसे परहेज रखना क्योंकि ऐसा करनेसे ही तुम भारत-वासियोंके हृदयपर विजय पा सकोगे और

(पृष्ठ ७ कालम १ में)



वह उस दुर्बल सरकारको, जो इस दुर्गतिसे उसको रक्षा न कर सकी, जो चाहे कहेगा—हमारे सुँहपर वह अवश्य ही घुमासे घूक देगा। यही मानव-प्रकृति है जो दुस्वभावा है और उसे ऐसा न मानना अपने आपको बोझा देना है।

परन्तु यह एक बात कहे बिना सारा खेल अधूरा ही रह जायगा कि 'अति-मानुष महारमा' सांसारिक रागद्वेषद्वन्द्व व्यक्तियोंकी अपेक्षा कुछ और ही सोचते हैं। वस्तुतः यदि मनुष्य उन्हींकी भूमिकामें पहुँच जाय तो इनकी बातें अत्यन्त शांतिप्रद प्रमाणित होंगी। इस भेणीके तीन महामंतीकी कथित होते हैं—भगवान् श्रीकृष्ण, बुद्ध भगवान् और एक कलियुगी महारमा। आइये, हम क्रमशः उन तीनोंकी विचारवायुओंका विवेचन करें—साक्षात्पूजायुक्त विद्याभक्तप्रवेशः प्रायोपु विचरन्ति नयेषु च नः प्रहृत्य। आकृष्य पाण्डववधूपरिधानकेशान् स्वस्थाः भवन्तु माय जीवति घात-राष्ट्राः ॥ —वेणीसंहार।

दुर्बलबलने, साक्षात्पूजामें जकोया, विप दिवा, जन-धरा सब जीन लिया और शैपदीकी साड़ी तथा केश खींच पाण्डवों-को समामें अपमानित किया। फिर भी उन्हें बारह वर्ष वनमें और एक वर्ष अज्ञात रूपसे बिताने पड़े। जब भगवान् सुलह कराने चले तो उन्हें उसने कोरा-सा जबाब ही नहीं दिया, गिरफ्तार भी करना चाहा। ऐसी स्थितिमें पाण्डवोंका प्रतिशोधके लिए पागल हो उठना स्वाभाविक था। परन्तु अर्जुनने जब 'कुरुक्षेत्रमें अपने सगे-सम्बन्धियोंको युद्धार्थ सज्जद देखा तो उन्हें कुलक्षय, मित्रश्रेष्ठ और राष्ट्रनाश खला और विरत हो, अनुप पँक भगवान्से उसने कर्तव्यकी जिज्ञासा की। भगवान्का उसे उनके साथ किये गये अपकारोंको याद दिला देना ही पर्याप्त होता, यदि वे 'प्रतिशोध' को ही उचित समझते। किन्तु ऐसा न कर उन्होंने उपदेश दिया कि—'अर्जुन! तू नपुंसकता छोड़, यह द्रो

अकोच्छिन्नं अवधिमं अजि-निमं अहासि मे।

येचतं उपनहन्ति घेरं ते सं न सस्मति ॥ ४ ॥

—अमपद, यमक वग्गा।
'इसने मुझे गाली दी, मारा, जीता या मेरी दिल्लगी उड़ायो' इस प्रकार जो सोचा करते हैं उनका वैर शान्त नहीं होता परन्तु जो इन बातोंको मनसे भुला देते हैं उसका वैर स्वयं शान्त हो जाता है। क्योंकि—

न हि घेरेण घेरणि

समन्तीध कुदाचञ्च।

अघेरेण च सम्भति

एस चम्मो सनोतनो ॥ ६ ॥

परेन च विजानन्ति

अयमेतथ यथासमे।

ये च तस्य विजानन्ति

ततो सम्भति मेधगा ॥ ७ ॥

—अमपद, यमक वग्गा।

जैसे अग्निसे अग्नि शांत नहीं होता उसी प्रकार वैरसे वैर शांत नहीं होता, वह अवैर (मित्रता) से ही शांत होता है। जो यह समझता है कि सारे झगड़ेकी जड़ हमारा विपक्षी है और अपना अपराध नहीं अंगीकार करता वह विवाद नहीं शांत कर सकता। शांत तो वही कर सकता है जो अपना अपराध मान ले। यदि हम प्रतिशोधके सुख चाहें तो वह असम्भव है, क्योंकि—

अयं घेरं पदवति,

दुष्कर्म सेति पराजितो।

उपसंतो सुखं लेति

हित्वा जयपराजयं ॥ ५ ॥

—अमपद, सुपुष्प वग्गा।

जयके बाद वैर बढ़ता है। पराजित दौब केनेके मातमें रहा करता है, अतः सदा सावधान रहना पड़ता है। यदि पराजित हो तो दुःख होता है और पराजित पुनः प्रयत्नशील होकर विजयी बनना चाहता है। इसलिये जब पराजय दोनों दुःखके कारण है। इसीसे तो वही होता है जो दोनोंसे किनारा बस जाता है।

जयं घेरं पदवति,

दुष्कर्म सेति पराजितो।

उपसंतो सुखं लेति

हित्वा जयपराजयं ॥ ५ ॥

—अमपद, सुपुष्प वग्गा।

जयके बाद वैर बढ़ता है। पराजित दौब केनेके मातमें रहा करता है, अतः सदा सावधान रहना पड़ता है। यदि पराजित हो तो दुःख होता है और पराजित पुनः प्रयत्नशील होकर विजयी बनना चाहता है। इसलिये जब पराजय दोनों दुःखके कारण है। इसीसे तो वही होता है जो दोनोंसे किनारा बस जाता है।

जयं घेरं पदवति,

दुष्कर्म सेति पराजितो।

उपसंतो सुखं लेति

हित्वा जयपराजयं ॥ ५ ॥

—अमपद, सुपुष्प वग्गा।

जयके बाद वैर बढ़ता है। पराजित दौब केनेके मातमें रहा करता है, अतः सदा सावधान रहना पड़ता है। यदि पराजित हो तो दुःख होता है और पराजित पुनः प्रयत्नशील होकर विजयी बनना चाहता है। इसलिये जब पराजय दोनों दुःखके कारण है। इसीसे तो वही होता है जो दोनोंसे किनारा बस जाता है।

जयं घेरं पदवति,

दुष्कर्म सेति पराजितो।

उपसंतो सुखं लेति

हित्वा जयपराजयं ॥ ५ ॥

—अमपद, सुपुष्प वग्गा।

भगवान् बुद्धने आध्यात्मिक प्रवृत्ति-वाले मानवके लिए यह सबसे भली बात कही है। ये विचार हमने ऊँचे और नीचे हैं मानो तारोंमें जाकर जगमगा रहे हों। स्वतः अद्वाये धिर नत हो जाता है, इन विचारोंको कार्यरूपमें परिणत करनेवाले और कहने-सुननेवालोंके प्रति भी। परन्तु इनमें एक बात हम कुछ प्राणियोंको खटकती है, वह है व्यक्तिकी स्वार्थपरा-यणता। उपर्युक्त विचारवाला समाज बनना निलांत असम्भव है। अतः इन विचारोंवाला विरला व्यक्ति ही हो सकता है। सम्भव है, वह चरम सीमातक सुखी भी हो जाय। परन्तु उसे न लोकसंग्रहकी पर्वाह होगी, न राष्ट्रकल्याणकी और न समाज तथा मानवसमुदायकी। तब वह हमारे लिए किस कामका? यह विचार तो किसी पहले दर्जेके व्यक्तिको ही शोभा दे सकता है जो कहनेकी क्षमता रखता हो कि 'कलिकलुषकृतानि यानि लोके मयि निपतन्तु विमुच्यतां स लोकः।' कलियुगी सारी आपत्तियाँ और पाप मेरे सिरपर आर्वे पर संसार उतरे बच जाय।

रही कलियुगी महारमाजीकी बातें। यद्यपि जीवित कविता आशय वर्णन करनेकी पद्धति नहीं है, क्योंकि उसे संशो-धन करनेकी सुविधा रहती है। पर यदि विचारा जाय तो उनकी बातें प्रायः इस भावकी होती हैं। और होती हैं एक सम्प्रदाय विशेषके लिए, यद्यपि वे स्वयं अपनेको सब सम्प्रदायोंका बतलाते हैं।

'यदि अमुक सम्प्रदायके एक आदमीसे भी बदला लिया गया तो मैं आगमें कूद पड़ूँगा। वह चाहे जो कुछ भी करे, शांतिपूर्वक सहे। नहीं तो स्वराज्य भाग जायगा। पहिले कभी मेरी बात मानी जाती थी, पर अब मेरी आवाज नकारखानेमें तूरीकी आवाज है। क्या मेरी आवश्यकता स्वराज्य दिलानेकी ही रही।

मैं पहले १२० वर्ष जीना चाहता था, पर अब ऐसी घटनाएं देखनेकी अपेक्षा मर जाना ही मेरे लिए सम-शता हूँ।' इत्यादि।

आप धार्मिक नहीं, राजनीतिक सुधारक हैं पर धर्मको ऐसा ढालना चाहते हैं कि वह राजनीतिके फर्मेंमें जँच सके। यदि राजनीतिकी दृष्टिसे वह ठीक नहीं जँचता तो उसमें परिवर्तन करके युवायुवायी बनाना आप उचित समझते हैं और उसे धर्म ही नहीं मानते जो आपके हल-हाम या आन्तरिक प्रेरणाके विरुद्ध हो। वस्तुतः प्रमाण प्रत्यक्ष, अनुमान, उपमान और भागम हैं। आन्तरिक प्रेरणा कोई प्रमाण नहीं। हाँ! 'सतां हि सन्देहपदेषु वस्तुषु प्रमाणमन्तःकरणप्रवृत्तयः' या 'हृदये नाभ्यनुशातः' को गौण प्रमाण माना है पर वह 'सताम्' ही सनका नहीं। सत्-की परिभाषा बड़ी दुःसह है, उसकी कचौटी-पर आना हँसीलेक नहीं। आपमें कतुस्वबुद्धि है, क्योंकि आप अपनेको 'स्वराज्य दिलानेवाला' समझते हैं। आप शास्त्रवचनोंमें अद्वा नहीं रखते, क्योंकि आप 'आगमें कूदने' को तैयार हैं। आप सुख-दुःखमें समान बुद्धि नहीं रखते, क्योंकि आप दुःखके कारण अब सौ वर्ष जीनेके बजाय मरना चाहते हैं। आप मानवमात्रके लिए कोई सिद्धान्त नहीं देते, प्रस्तुत एक सम्प्रदाय-विशेषके सिरपर अपना विचार जबरदस्ती ततोधिक अपनी पूर्वसेवाके बदलेमें ढाढ़ना चाहते हैं। आप न तो भगवान् कृष्णकी तरह लोक-संग्रहकी बात करते हैं, न बुद्ध भगवान् की तरह व्यक्तिस्वार्थकी ही बात करते हैं। आप 'प्रतिशोध' रोकनेके लिए कोई तर्कसंगत या सर्वमान्य सिद्धांत न देकर केवल दुहाई देते हैं। आपकी तरह भगवान् कृष्णने तो नहीं कहा कि 'अर्जुन! तू मेरा मित्र है, यदि मेरी बात मान न लड़ेगा तो मैं बोझोंकी रास गलेमें बांध-कर फाँसी लगा लूँगा।' या बुद्ध भग-वान्ने तो नहीं कहा कि 'मित्रा! यदि

—विशुद्ध पौष्टिक खाद्य पदार्थों पर ही—

स्वास्थ्य एवं शक्ति

निर्भर करती है

'मीमाणी स्टोर'

नं० ५, बड़तला स्टीट, कलकत्ता

गणेश जी और गणेश भाटाके महान निर्माता

अमरिकन

माडल

पिस्टल

लाइसेन्सकी आवश्यकता नहीं

इस पिस्तौलके उत्तम गुणोंसे लोग

परिचित हैं। उसके वर्णन करनेकी आव-

श्यकता नहीं, केवल इतना अलम् होगा

कि यह असली अमेरिकन पिस्तौलकी

भांति ही इसमें कारखाने रखनेका स्थान

बना है और चरली अपने आप चक्कर

लगाती हुई क्रमशः छ फायर करती है।

इसकी मयानक आवाज तथा चकाचौब

पैदा करनेवाली चिनगारियोंसे आकुओं

और जंगली जानवरोंकी भयभीतकर

भगानेके लिए अति उत्तम वस्तु है।

मूल्य नं० २२२२ ६॥), नं० ३३३३

७॥), नं० ४४४४ ८॥) शाट सहित।

फालतू कारतूस ४ दर्जन मू० ५), लट-

कानेकी चमड़ेकी पेटी मू० ५) प्रति पेटी,

सफाईके लिए तेल मूल्य १।) प्रति बोरी।

बिलिंगटन ट्रेडिंग कारपोरेशन

राजगढ़, लखीमपुर, (खोरी)

'सन्मार्गमें'

विज्ञापन देकर

अवश्य जाय उठाइये

अवश्य जाय उठाइये

अवश्य जाय उठाइये

अवश्य जाय उठाइये

अवश्य जाय उठाइये

अवश्य जाय उठाइये

अवश्य जाय उठाइये

अवश्य जाय उठाइये

एजेन्ट चाहिए

हमारे कारखाने की उम्दा आटोमेटिक गोपिटर पिस्तौल बेचने के लिए हर शहर व कस्बों में एजेन्ट चाहिए। (आईसेन्स की जरूरत नहीं) नमूना नीचे के पते से भेजाइए।

अनटाइ ट्रेडर्स, राजगढ़

लखीमपुर, खोरी।

पेटभर भोजन करिये

गेहसर—[गोबिन्दा] गेस चढ़ना या पदा होना, पेटमें पचनका घुमना, भूलकी कमी, पाचनका न होना, खानेके बाद पेटका भारीपन, बेचैनी, हृदयकी नि कता, हिमाग लगान्त रहना, नींद न आना, रस्तकी बकावट बरह शिकायतें दूर करके रस्त हमेशा नियमित लाभ आती है। अन्न पचाकर कड़ाकेकी भूल आती है, भातकोर शाकत होती है। शरीरमें रुधिर बढ़ाकर बलि पदान करती है। भात, लीबर, तिन्नी और पेटके हरएक रोगकी अद्वितीय दवा है। कोमत २० १।), तीनका १।), आकचर्च अन्न।

ता—दुग्धाशुपान फार्मेसी १ जामनगर

मारवा एजेन्ट—राजेश्वर एण्ड सन्स, खोरी

अवश्य जाय उठाइये

अवश्य जाय उठाइये

अवश्य जाय उठाइये

अवश्य जाय उठाइये

अवश्य जाय उठाइये

(१) मुहम्मदशाह गाजीशाह आ-
लम बादशाह (२) सैयद अताउल्ला
खा फिदवी (३) दरोगा अतिशयाना
हुगूर पुरनर दरबार, कुस्तदान।

पशुओंकी भारी कमी

हमारे देशकी ३६ करोड़ २० लाख एकड़ भूमिमें खेती होती है। ऊपि कमीशन १९२८ की जांचके अनुसार एक सौ एकड़ भूमि की कमी के लिए २० बैलोंकी आवश्यकता है। अतः हमारे भारतमें भूमिके लिए सवा सात करोड़ बैलोंकी आवश्यकता है। अन्तिम पशु-गणनाकी रिपोर्टके हिसाबसे भारतमें एक ही पांच करोड़। इसके अतिरिक्त २५ लाख हलों या पचास लाख बैलों, जितना काम जेंट और बैल भी चाहिये। अतः दो करोड़ बैल और भी चाहिये। इस भूमिके अतिरिक्त २५ करोड़ एकड़ ऐसी जमीन है जिसमें खेती हो सकती है तथा इसे खेतीके योग्य बनानेकी तजवीजें भी हो रही हैं। यदि पड़ी हुई भूमिमेंसे आधी भी खेतीके योग्य हो सकी तो इसके लिए दार करोड़ बैलोंकी और अधिक आवश्यकता है। अन्तिम पशुगणना-रिपोर्टके अनुसार देशभरमें दूध देनेवाली गायें पीने दो करोड़मेंसे एक करोड़ तथा बकरियाँ ७२ लाख हैं। सरकारी दूध रिपोर्ट १९४०में लिखे प्रतिपशु अलग-अलग दूध देनेके हिसाबके कुछ अनुमान तीस करोड़ दूध उत्पन्न होता है। आवश्यकता है ९७ करोड़ मनकी। इतना दूध पैदा करनेके लिए कमसे कम दो गुने या साढ़े पांच करोड़ दुधाल गायों तथा डेढ़ करोड़ बकरियोंको सबसे अधिक आवश्यकता है। सरकारी हिसाब तथा अनुमानके अनुसार ही इस समय देशमें सवाचार करोड़ बैलों तथा ७ करोड़ दुधाल पशुओंकी कमी है। इसके अतिरिक्त ऊपिकमीशनकी जांचके अनुसार दस लाख सांड और अधिक चाहिये।

विधान-परिषद्से मांग स्वतन्त्र भारतका विधान बन रहा है। देशके लोगोंकी पूरा तथा अच्छा भोजन देना तथा उनकी सन्तुष्टि, संस्कृति

सो रहे उनको बचा दे।
रो रहे, उनको हंसा दे।
आज अपने गानसे तू
मृतको जीवन नया दे।

श्रीपादसनाथसिंह गौतमजी ०५०

(पृष्ठ २ का समाप्ति से आगे)

अस्तव्यस्त करने क्यों चाहते हैं? इसे व्यवस्थित करनेमें हम और समय भी बगा है। अभीतक अमेरिकामें भी बीमा-कम्पनियोंका राष्ट्रियकरण नहीं हुआ है। ब्रिटेनमें भी इससे राष्ट्रियकरणकी आवश्यकता नहीं समझी जाती। सभी रोगोंका निदान राष्ट्रियकरणसे तो होगा नहीं। राष्ट्रियकरणके पौषक सावधान होकर विचार करें।

स्वराज्य तो हमें मिला पर देशमें साम्प्रदायिक अशान्ति फैलनेसे पश्चिमी पाकिस्तानस्थित हमारी शालाएँ पूर्णतया अव्यवस्थित हो गयीं। हमारे बहुते आहकोंको भारी झुंझते उठानी पड़ी। वहां सिर्फ व्यापारकी हानि नहीं हुई है बल्कि हमारे अविभाज्य आहकोंका सब कुछ नष्ट हो जानेसे वे प्रीमियमकी रकम भी निश्चित समझपर नहीं मिल पाती। बहुते आहकोंकी प्रीमियमकी रकम भेजनेकी सुविधा भी नहीं रही। इस प्रकार स्थिति अन्धकाराच्छन्न ही है। मुझे आशा है कि भारत पाकिस्तानमें शीघ्र शान्ति-स्थापित होगी और परस्पर व्यापारिक सम्बन्ध बालू रहेगा। दोनों ही राज्योंको अपने सान्नोंके द्वारा राष्ट्रकी पूर्ण बढाना चाहिये। निजी व्यवसायके बगैर औद्योगिकरणमें सफलता मिटना कठिन है। १९४७ का आर्थिक कानून निजी व्यवसायके लिए खतरनाक है। यदि भारत सरकारके वर्तमान अर्थमन्त्रीके आश्वासन ठीक हैं, तो हमें विश्वास है कि निजी व्यवसायकी उन्नतिपर भी ध्यान दिया जायगा। इससे पूर्णपतिव्योको उद्योग-धनमें अधिकधिक रकम फँसाने में विश्वास होगा और उन्नति भी होगी।

कामसेवाके एक और तो मध्य-निपटते दिल्लीके धरणापी - शिबिरमें वैनिक्ोंने कुछ अत्याचार किया है जिसपर गांधीजी उनके नाम रोये हैं। यह बहुत बुरा तरीका है। पैनीका अत्याचार रोकनेका? दण्ड तो सनातनी नेताओंके लिए है।

समाचार है कि पटनेके डाक्टर मह-मूदके रहनेके लिए ३०० रु० किराया-वाला बंगला मुफ्तमें मिला है। बिहार सरकारकी बचार्ह। अपने मन्त्रियोंका क्या रखना ही चाहिये। यू० पी० वाले ऐसी उदारताका कदम उठावेंगे या नहीं?

आजकल ब्रिटेनसे कोई सद्भावना-मण्डल हमारे देश ब्रिटिश इण्डियामें आया है जो कई नगरोंमें घूम चुका। इसके एक प्रमुख सदस्य हैं स्वामी अव्य-कानन्द। अव्यकानन्द ही ठहरे। उनके व्यक्तित्वके बारेमें हम अधिक कैसे जान सकते हैं? ये नये मस्तिष्कोंका निर्माण करेंगे। हूँ।

पुराने मस्तिष्कवाले स्वामी करपात्री-जी आदि जेलमें सड़ाये जा रहे हैं। 'नये मस्तिष्क'का निर्माण करनेवाले अव्यकानन्द लोग घूम घूमकर ब्रिटिश इण्डियामें सद्भावना फैला रहे हैं—नये ढंगकी। क्या समझो?

कहा जाता है कि परसों यहाँका कोई मुसलमान एक खोआआकेसे तीन पाव खोआ लेकर चट कर गया। उचित दाम माँगनेपर उसका खोआ फेंककर उठे पीटा मो। पुलिसने खोआआकेरी रिपोर्ट भी नहीं लिखी। मियाँजीको रिपोर्ट लिख ली। बाह ठीक ही तो है। पाकिस्तानके गंधे अंगूर खाते हैं, इण्डियाके मुसलमान खोआ मो न खाएँ। खोआ तो खोआ। खो जानेपर रपट-सपट कैसी?

कुमारी एलिजाबेथके विवाहके अव-सरपर लन्दनकी सड़कोंपर प्रत्येक राष्ट्रका

कांग्रेसवाले एक और तो मध्य-निपटते दिल्लीके धरणापी - शिबिरमें वैनिक्ोंने कुछ अत्याचार किया है जिसपर गांधीजी उनके नाम रोये हैं। यह बहुत बुरा तरीका है। पैनीका अत्याचार रोकनेका? दण्ड तो सनातनी नेताओंके लिए है।

समाचार है कि पटनेके डाक्टर मह-मूदके रहनेके लिए ३०० रु० किराया-वाला बंगला मुफ्तमें मिला है। बिहार सरकारकी बचार्ह। अपने मन्त्रियोंका क्या रखना ही चाहिये। यू० पी० वाले ऐसी उदारताका कदम उठावेंगे या नहीं?

आजकल ब्रिटेनसे कोई सद्भावना-मण्डल हमारे देश ब्रिटिश इण्डियामें आया है जो कई नगरोंमें घूम चुका। इसके एक प्रमुख सदस्य हैं स्वामी अव्य-कानन्द। अव्यकानन्द ही ठहरे। उनके व्यक्तित्वके बारेमें हम अधिक कैसे जान सकते हैं? ये नये मस्तिष्कोंका निर्माण करेंगे। हूँ।

पुराने मस्तिष्कवाले स्वामी करपात्री-जी आदि जेलमें सड़ाये जा रहे हैं। 'नये मस्तिष्क'का निर्माण करनेवाले अव्यकानन्द लोग घूम घूमकर ब्रिटिश इण्डियामें सद्भावना फैला रहे हैं—नये ढंगकी। क्या समझो?

कहा जाता है कि परसों यहाँका कोई मुसलमान एक खोआआकेसे तीन पाव खोआ लेकर चट कर गया। उचित दाम माँगनेपर उसका खोआ फेंककर उठे पीटा मो। पुलिसने खोआआकेरी रिपोर्ट भी नहीं लिखी। मियाँजीको रिपोर्ट लिख ली। बाह ठीक ही तो है। पाकिस्तानके गंधे अंगूर खाते हैं, इण्डियाके मुसलमान खोआ मो न खाएँ। खोआ तो खोआ। खो जानेपर रपट-सपट कैसी?

कुमारी एलिजाबेथके विवाहके अव-सरपर लन्दनकी सड़कोंपर प्रत्येक राष्ट्रका फहरा या बही 'यूनिजन बैक'।

गंगाजी एक फलोंगकी हो दूरी पर हैं १८ बड़े कमरे फल आदिसे युक्त। दाम लगभग ३००००) तीस हजार रुपये। पत्र-व्यवहार करें या स्वयं मिलें। व्यवस्थापक—'सन्मार्ग' काशी।

और लाटरीमें जीत तथा पराजयमें पाव हाता है। मुख्य तौबा २) बाँदा ३) सोने १०) झुआ आवित करनपर १००) इनाम आ सुबद्व आश्रम कृतोत्तराय (गया)।

स्नान की गरिमा

५



अर्धरात्रि का स्नान

भारतीय-व्योतिष-विचारकों के मतानुसार चन्द्र-ग्रहण का प्रभाव संसार के प्राणी मात्र पर पड़ता है। इसके दुष्परिणाम से बचने तथा उसे कम करने के निमित्त चन्द्र-ग्रहण के समय अर्धरात्रि में भी करोड़ों की संख्या में भारतीय नर-नारी साधारण एवम् तीर्थस्थानों में जा कर स्नान करते हैं। इस प्रकार का स्नान उनके बांछित फल-

प्राप्ति में कहां तक सहायक होता है यह तो उनके विश्वास का विषय है पर स्नान की महत्ता सर्वदा निर्विवाद है, विशेषकर जब स्नान "प्रीफेक्ट" साबुन से किया जाता है जो शरीर को न केवल स्वच्छ एवम् शान्त बनाता है वरन् स्नान के बाद भी अपनी स्निग्ध सुवास से त्वचा को प्रफुल्लित एवम् सुवासित रखता है।



प्रिफेक्ट
लॉयलेट सोप

वनस्पति तेलों से निर्मित

मोदी सोप वर्क्स, मोदीनगर, यू.पी.

मे०—सारा चन्द्र-विश्वनाथलाल, विश्वेश्वरगज बनारस।
मे०—सतनामप्रसाद, दारासाहब, चौक, बडिया।
मे०—विहारीलाल कुजुलाल, कमीशन एजेंट देवरिया।

गांधी महत्ता

काशी-नरेशका भाषण

‘बी काशी जीबदा’ विस्तारिणी गोशाला और पशुशाला का ६१ वां वार्षिकोत्सव कल अरराह्न ३ बजे गोशाला भवनमें काशी-नरेश महाराज श्रीविभूतिनारायणसिंहके सभापतित्वमें मनाया गया। सर्वप्रथम श्रीभीष्मदत्त वैद्यके मंगलाचरणके पश्चात् श्रीदेवीनारायण बक्रील और श्रीराजनारायणजी शास्त्री का स्वागत भाषण हुआ। मन्त्री श्रीजुल-किशोरजी शारदाने वार्षिक रिपोर्ट पढ़कर सुनायी।

गोशालाकी ओरसे प्रधानमन्त्री श्री-कहेयलाल खेतानने महाराजको अभिनन्दन-पत्र दिया। काशी-नरेशने अपने भाषणमें गायकी उपयोगिता बतलाते हुए जनतासे गोशालाकी अपील की। अन्य कई व्यक्तियोंने भजन और भाषणसे गायकी महत्तापर प्रकाश डाला।

गोशालाके लिए लगभग १२ हजार रुपया दान मिला। जनताने गोपूजन किया और गायोंको खीर, जलेबी, गुड़ आदि खिलाया।

श्रीछेदीलाल बालबाल बचे रातमें लाठासे हमला

कल लगभग ११ बजे रातमें चेतगंज छत्तेकी एक गलीमें चेतगंजके ग्युनि-सि-पक कमिश्नर श्रीछेदीलालपर कुछ लोगोंने सहसा लाठीसे हमला किया। श्रीछेदीलाल तो आक्रमणकारियोंके प्रहारसे भागकर दूर हो गये, पर उनके साथके मिहारीलाल नामक व्यक्तिको चोट लगी। मामलेकी रिपोर्ट चेतगंज थानेमें की गयी है। पिछले साल श्रीछेदीलालपर चेतगंजमें ही तेजाब भी फेंका गया था लेकिन वे बच गये थे।

—काशी पत्र विक्रेता संघकी बैठक आगामी एकादशीको राय ४ बजे टाउन-हालमें होगी।

—मेदपुर थानेकी पुलिसने विश्व-विद्यालय स्थित भंगी बस्तीमें दो छद्म-चिन्तोंको गिरफ्तार किया।

नवम्बरको सोनियर पुलिस कप्तान भीनेगी करेंगे। समाचार मिला है कि शहर कांसेके अध्यक्ष भीरुनाथ सिंह, उपाध्यक्ष भीरुसिंह सिंह, प्रोफेसर अपूर्वचन्द भट्टाचार्य, श्रीमानचन्द, मियां जमाल-उद्दीन अहमद तथा श्रीविजयनाथ पांडेयों भी उक्त पुलिस दलमें भरती होनेका आवेदन दिया है।

८ दिसम्बरको उपनिर्वाचन
किदवाईके रिक्त स्थानोंके लिए वनाई रहीं अहमद किदवाईके रिक्त स्थानके लिए नवम्बरके दूसरे सप्ताहमें उपनिर्वाचन होगा। २२ नवम्बरको नामजदगीका पर्चा दाखिल होगा। ४ दिसम्बरको मतदानपत्र खाना किये जायेंगे। ८ दिसम्बरको मत दानका पत्र भरकर रिजिग अफसरके पास भेज देना होगा।

खामेराकी बिक्रीमें व्यतिक्रम
कल सुबह मैदागिनपर बैजलाम द्वारिकाप्रसादकी दुकानपर फुटकर सीमेंट खरीदनेवालेवाके सैकड़ों व्यक्तियोंको काफी देरतक प्रतीक्षा करनेके बाद इधलिए निराश होकर पड़ा कि सप्ताई ईस-पेक्टर सीमेंट बिकवाने नहीं आये। खबर है कि सप्ताई अफसरका आदेश है कि बिना ईसपेक्टरकी उपस्थितिके सीमेंट की बिक्री न की जाय।

समाजवादी दलकी कार्यकारिणी
समाजवादीदलकी कार्यकारिणीकी गत बैठकमें श्रीगुनिराज सिंह दलके नये प्रचार एवं प्रकाश मन्त्री चुने गये। मुखमिजन सम्पर्कके लिए श्रीगुनिराजसिंह श्रीगया प्रसाद तथा मियां सनाउल्लाहा की एक उपसमिति बनी।

राष्ट्र-भाषा विद्यालय
श्रीराष्ट्र-भाषा विद्यालयका वार्षिकोत्सव २९ नवम्बरको सायंकाल ५ बजे होगा। युक्तप्रान्तके मंत्री माननीय सम्पूर्णानन्द इसका उद्घाटन करेंगे। इसमें श्रीराहुल सांकृत्यायन, बबितर सुमित्रानन्दन पंत, मल्लिकार्जुन, आचार्य नरेन्द्र देव, श्रीश्रीनारायण चतुर्वेदी प्रभृति विद्वान् आमन्त्रित हुए हैं।

जानेपर निजलाल In Public Domain Digitization by eGangotriमाने भी एक जुलूस निकाला था। पुलिसने उसे भी धर्म-तत्त्वमें लाठी वर्षा और ग्राँस गैस द्वारा भंग कर दिया। इस जुलूसकी मांग जमींदारी प्रथा और तिभागा प्रथा तोड़नेकी थी। इसका नतीजा माननीय श्री मोरको कुछ क्षति पहुंचायी है।

अध्यक्षका चुनाव
पश्चिमी बंगाल असेम्बलीमें
कलकत्ता, २१ नवम्बर। महाराज नरवानकी अध्यक्षतामें पश्चिमी बंगाल व्यवस्थापिका सभाकी प्रथम बैठक-प्रारम्भ हुई। श्रीईश्वरदास जालान अध्यक्ष और श्रीआशुतोष मलिक (दलित) उपाध्यक्ष चुने गये। विरोधी दलके मिर्वा रहमानने कहा कि सरकारको पूर्ण सहयोग प्रदान किया जायगा। गवर्नरने अध्यक्षकी ७॥ सी रुपये मासिक और उपाध्यक्षकी ३ हजार रुपये वार्षिक तनखाह नियत की है।

पूँचसे निकालनेका यत्न
काश्मीरमें भारतीय सेना द्वारा
नयी दिल्ली, २१ नवम्बर। रक्षा-मन्त्रीकी विज्ञप्तिमें कहा गया है कि भारतीय सैनिक काश्मीरके पूँच क्षेत्रसे आक्रमणकारियोंको निकाल बाहर करनेका निरन्तर प्रयत्न कर रहे हैं। जम्मूपर ५ सौ आक्रमणकारियोंका हमला हुआ पर उन्हें गहरी क्षति उठानी पड़ी। सैनिक विमान सेनाकी सहायता करते रहे। युनाइटेड प्रेसके विशेष संवाददाताने खबर भेजी है कि रावलपिंडीकी सड़कोंपर बहुत से सशस्त्र कबीलियोंको आजादीसे दहलते हुए देखा गया है। कहा जाता है कि वे काश्मीरपर आक्रमण करनेकी आशाकी प्रतीक्षा कर रहे हैं।

—कानपुर। प्रोफेसर ज्वालाप्रसादसिंहल को ‘जर्मने परिवर्तनीय और अपरिवर्तनीय बाते’ नामक निबन्धपर आगरा विश्वविद्यालयने पी० एच० डी० की उपाधि दी है।

—प्रयाग। आज यहाँ निशात टाकीके पास मजिस्ट्रेटकी मोटरसे एक युवक की मृत्यु हो गयी।

मन्दिर बना दिया गया। ये बाते हिंदू और सिखोंपर कलंक है। इससे इन धर्मोंका नाश हो जायगा। गुडगांवके पास एक गांवसे हिन्दुओं द्वारा भारतीय रोमन कैथोलिकोंपर अत्याचारका समाचार मिला है। उनको गांव छोड़नेके लिए भमकाया गया है। स्वतन्त्रता केवल हिन्दुओं तक सीमित नहीं रखी जा सकती। मुसलमानोंके विरुद्ध हिन्दुोंका क्रोध अभी नहीं शांत हुआ है। ईश-इशने कोई भी आक्रामक कार्य अभी तक नहीं किया है। उक्त रोमन कैथोलिक गोमाँव भी नहीं खाते। यदि यह घृणाभाव बना रहा तो भारतीय स्वातन्त्र्य अन्धकारमय है। क्या हिंदू-सिख और सबको नष्ट करना चाहते हैं? मैं भारत-का यह नाश देखनेके लिए जीवित नहीं रहना चाहता। मगधान भारतीय हिंदू-सिखोंको सन्तुष्टि दे। आज नेहरूजी, डाक्टर जोहिया, श्रीहरे कृष्ण महलव, श्री के० एन० दलाल और श्रीयोगेन्द्रनाथ मजुमदार गांधीजीसे मिले।

जिला बोर्डके मतदाता
जिला कांग्रेस पार्टीमेंटी बोर्ड बनासके संयोजक श्रीईश्वरचन्द्रसिंह सूचित करते हैं कि जिला बोर्डके मतदाताओंकी सूची सरकार द्वारा तैयार कर ली जा रही है। निकट भविष्यमें बोर्डका निर्वाचन होनेकी भी संभावना है। कांग्रेस उस निर्वाचनमें भाग लेगी। अतः यह आवश्यक है कि सूची सत्र प्रकारसे पूर्ण हो। ऐसे एक भी व्यक्तिका नाम छूटने न पाये जो मतदाता होनेकी योग्यता रखता हो। कांग्रेस जनोंको इस ओर अभीसे सचेष्ट हो जाना चाहिये और सूची तैयार करने वालों तथा जनता दोनोंसे ही सम्पर्क स्थापित कर इस कार्यको सम्पन्न करनेमें सहायक होना चाहिये।

‘हिंदू सेवा दल’ के स्वयंसेवक
कल सायंकाल काजीमण्डीमें ‘हिंदू सेवा दल’ के स्वयंसेवकोंने श्रीलाल बिहारी द्विवेदीको सलामी दी। श्रीद्विवेदीने सलामीका उत्तर देते हुए कांग्रेसके उस प्रस्तावकी निन्दा की जिसमें हिंदू समाज, अकाली दल और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघका विरोध किया गया है। अन्तमें उपस्थित व्यक्तियों और स्वयंसेवकोंने हिन्दू राष्ट्रके प्रतीक ‘भगवाण’ को सलामी दी।

—‘हिंदू सेवा दल’ के अस्थायी नायक श्रीगाममूर्ति शास्त्री नियुक्त किये गये हैं।

—नरबन परगनेके असना और अमड़ा केन्द्रोंसे गल्ला, नमक, मिट्टीका तेल, और दियासलाईका वितरण करके आरंभ हो गया। इन केन्द्रोंसे नरबन परगनेके लगभग ५० ग्रामोंमें जहाँ सुखा पड़ा है उपयुक्त वस्तुएं दी जा रही हैं।

वादे का भाव
(विश्व व्यवसायिक प्रतिनिधि द्वारा)
कल रातमें बाजार बन्द हुआ। सुबह १६१ पर खुला। इस समय १६२.॥ का भाव है।
आज ३ खेल
२॥ बजे, ५॥ बजे, और ८॥ बजे रातमें ग्रेट ओरिएण्टल सरकस
(नगरकी चर्चाका मुख्य विषय)
स्थापन:-पाण्डे धर्मशालाके पास, रामापुरा, बनारस।
उपया नोट करें:-शोमवारसे शुक्रवारतक खेल २ खेल
५॥ बजे, और ८॥ बजे रातमें

आजकी समस्याओंका अत्यन्त रोमांचक चित्र नई सड़क शरीरिन टाकीज बनारस में

NATIONAL STUDIOS Present



शुक्रवार २१, शनिवार २२, मंगल-वार २५, बुधवार २६ और शुक्रवार २७ नवम्बर १९४७ को
३ खेल—३॥—५॥ और ८॥ बजे रात
(रविवार २३ और सोमवार २४ नवम्बरको कोई खेल न होगा।)
नया ब्राण्ड और पूरी कपडो

रोटी

कलाकार
चन्द्रमोहन, सितारा, शेखमुस्तफा, अख्तरी फैजाबादी आदि
डाइरेक्टर:-महेश्वर
अवसर मत खोइए अपने मित्रों और परिवारके साथ पधारिये।

हिन्दोका एक मात्र अखिल भारतीय दैनिक पत्र

तारका पता 'सन्मार्ग' काशी

बी.सि.

15 अक्षर
3/4 इंच
1/2 इंच

धर्मो जयति नाधर्मः

सत्यं जयति नानृतम्

विज्ञापन दाताओंको संदेश

अपने विज्ञापनको

मासिक-सन्मार्ग

में देकर

अवश्य लाभ उठावें

डाक संस्करण



मूल्य डेढ़ आना

नमोऽस्तु रामाय सलक्ष्मणाय देव्यै च तस्यै जनकात्मजायै । नमोऽस्तु रुद्रेन्द्रयमानिलेभ्यो नमोऽस्तु चन्द्रार्कमरुद्गणैभ्यः ॥

देशिकद्वारा प्रकाशित १९३७

राजिरीकी हक्या १० १९४

राष्ट्रीय तथा भारतीय संस्कृति का
अभ्युदय

साप्ताहिक 'सन्मार्ग'

प्रति शुक्रवार को प्रकाशित
चन्दे की दर

वार्षिक १) कमाही २)

विज्ञापनके लिए पत्र व्यवहारकर

व्यवस्थापक—

साप्ताहिक 'सन्मार्ग' काशी

वर्ष २ अङ्क २६७

काशी सोमवार कार्तिक शुक्ल ११, संवत् २००४ वि०, ता० २४ नवम्बर १९४७ ई०

सं० पूर्ण ६३८

पाकिस्तानी पंचमांगियों को सतर्करहनेका निदेश?

समझौता-वार्ता प्रारंभ
फौजी सामान पकड़ा गया

हे.रा.बाद, २१ नवम्बर। भारत सरकारसे बातचीत करनेके लिए हे.रा.बाद वार्ता समितिके सदस्य नवाब मुहंमद नवाज खंभगी अफ्गानिस्तानमें दिल्ली गये। सदस्योंने देशीगव्य विभागके मंत्री श्री-मेननसे भेंट की। हे.रा.बादकी उपद्रवी मुसलमान संस्था मजलिसे इच्छादुल मुसलमीनके अध्यक्ष सैयद कासिम खंभगी सरदार पटेलके निमन्त्रणपर विचार विनि-मय करनेके लिए दिल्ली जा रहे हैं। वे हे.रा.बादके मुसलमानोंका दृष्टिकोण भारत सरकारके संमुख रखेंगे। उन्होंने एक आशा ज्ञायी थी कि राज्यमें शांति रखनेके लिए इच्छादुल मुसलमीनको सब प्रकार का प्रयत्न करना और गैरमुसलमानों

विद्रोहकी योजना विफल

युक्तप्रान्तके मुसलमानोंके नाम गुप्त पर्चे
सिन्धमें अल्पसंख्यकोंकी दयनीय दशा—

—बहावलपुरके प्रधान मन्त्री द्वारा सफाई

लखनऊ, २१ नवम्बर। प्रान्तके कतिपय भागोंमें मुसलमानोंमें ऐसे छपे पर्चे वितरित हुए हैं जिनमें उन्हें सावधान किया गया है कि दिल्ली तथा युक्तप्रान्तके विभिन्न शहरोंमें मुसलमानोंके यहां जो तलाशियां हुई हैं तथा धातु खनन बरामद हुए हैं उनसे युक्तप्रान्तीय सरकार सतर्क हो गयी है। सशस्त्र विद्रोहकी पाकिस्तानी योजना सम्प्रति विफल हो गयी है अतः मुसलमानोंको इस समय उसपर भरोसा नहीं करना चाहिये। सम्भवतः युक्तप्रान्तीय सरकार मुसलमानोंको पंचमांगी घोषित करके उनके विरोध पर कानून लागू करेगी। यह कानून लागू होने पर मुसलमानोंकी काफी संपत्ति उन्हें नुकसान हो सकती है। कहा जाता है कि उपर्युक्त आशयका पर्चा पाकिस्तान सरकारके गुप्त सूचना विभागकी ओरसे वितरित किया गया है।

अगले वर्षके अंत तक सभी 'कंट्रोलों' का अंत होगा

शीघ्रही महत्वपूर्ण सरकारी घोषणा होगी
खाद्यान्नके चोर बाजारी बढ़नेकी आशंका

नयी दिल्ली, २१ नवम्बर। नेशनल हेराल्डके विशेष प्रतिनिधिका कहना है कि कंट्रोल हटानेके संकल्पमें एक दो दिन में ही भारत सरकार महत्वपूर्ण घोषणा करनेवाली है। खाद्य विभाग संभवतः खाद्यान्न तथा जलानेके मूल्य नियंत्रण तथा यातायात परसे रोक हटा देनेके लिए सामान्य प्रशासनिक विभागोंके सहयोग से कार्य करेगी। भारत सरकार यह सिफारिश करने जा रही है कि पहले देशतों तथा छोटे कस्बों में राशन व्यवस्था ठीकी जाय और यह व्यवस्था देशभरमें ही लागू की जाय। इस प्रकारका कार्यक्रम बनाया जायगा जिससे अगले वर्षके अन्ततक देशमें किसी भी वस्तुपर नियंत्रण न रह सके। कुछ लोगोंका कहना है कि कंट्रोल हटाने की खाद्य चोरबाजारीमें चला जायगा और उस अवस्थामें उपद्रव भी हो सकते हैं। खाद्यान्नावसे अन्य वस्तुओंका मूल्य भी बढ़ सकता है।

गांववालोंका संघर्ष

सीमावर्ती आक्रामककारियोंसे

जालन्धर, २१ नवम्बर। पूर्वी पंजाबमें अब स्थिति खान्तर है। प्रान्तके किसी भागमें कोई बड़ी घटना नहीं हुई। सीमावर्ती मुसलमानोंने गुजरातपुरके एक थानेपर हमला किया था पर गांववालोंने मुक़ाबला किया। हताहतोंकी संख्या अज्ञात है।

सहिष्णुतासे ही हिन्दू धर्मका जीना संभव

अत्याचारोंसे भारतीय समाजका अन्वकारमग

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ स्वामीजी शीघ्र छोड़े जायं

—श्रीहन्द्रमोहन झा, बी० ए०, आनर्स—

राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जिस त्याग, तपस्या और उच्चादर्शके साथ काम कर रहा है वह केवल श्लाघनीय ही नहीं, बरन् देशके लिए कल्याणका स्रोतक है। संघका उद्देश्य है भारतवर्षके सांस्कृतिक गौरवका पुनर्स्थापन करना। इसी भावनासे अभिप्रेरित होकर वह निरन्तर आगे बढ़ रहा है। संघका उद्देश्य न अपना प्रचार करना है, न बाधादम्बर रखना। वह तो हिंदुओंके हृदयमें राष्ट्रियता, अनुशासन और संचयनका भाव भर रहा है। देशमें ऐसी संस्थाकी कितनी आवश्यकता है, यह सबको विदित ही है।

संघके उच्चादर्शसे बशीभूत होकर देशके लाखों बाल, युवक और वयस्क इसमें सम्मिलित हैं और देश एवं समाजके हितके लिए जोस काम कर रहे हैं। इसी जोस कार्यक्रमके कारण संघ इतना व्यापक और महत्वपूर्ण हो चुका है। संघमें न जातीयताका प्रश्न है और न गुटबन्दी या दलबन्दीका—सभी सदस्य समान हैं। श्रमीर-गरीब, किसान-मजदूर, छोटे-बड़े सभी भगवान्‌बन्ने नीचे एक हैं। एक-साथ उठते-बैठते हैं, एक विचारधारा रखते हैं, सबका एक हितकोण रखता है संघका लक्ष्य है देश, समाज और प्रत्येक व्यक्तिको चरित्रवान् बनाना और स्वयंसेवक इसीके अनुरूप शिक्षा ग्रहण करते हैं। कितना सुन्दर और समीचीन उद्देश्य है यह। इसीके कारण तो संघको आज युवकोंका सर्वश्रेष्ठ संस्था बननेका भविष्य मिल चुका है।

अवसरवादियोंसे सावधान

जहाँ एक ओर इतना व्यापक, गंभीर और कल्याणकारी कार्य हो रहा है, वहीं प्रतिस्पर्धाकारी संस्थाके अवसरवादी

अधार्मिकताके नामपर ?

बेनीपुरीजीका कहना है कि 'इस राष्ट्रियताके युगमें धार्मिकताके नामपर कुछ किया जाना अशुभ है।' यदि बेनीपुरीजीका राजनीतिसे सम्पर्क रहता तो वे ऐसी भद्दी बातें न लिखते। वे देख चुके हैं कि भारतका बटवारा हो गया। मुसलमानोंको पाकिस्तान मिल गया। सिंध, सीमाप्रांत, बलूचिस्तान, पंजाब और बंगाल (आंध्र ही क्यों नहीं) भारतसे विछिन कर दिये गये। जन-परिवर्तनका काम जारी है। राष्ट्रियताका आवरण देनेवालोंको अब भी इस विषयमें बेचैनी है। पाठक ही इसपर विचार करें कि यह सब धार्मिकताके नामपर हुआ अथवा बेनीपुरीजीकी 'अधार्मिकता'के नामपर ?

भारतीय युवक नपुंसक नहीं

बेनीपुरीजी लिखते हैं—'भारतीय युवकोंमें इतनी दुर्बलता और नपुंसकता आ गयी है कि फौजी शिक्षाके नामपर वे सब कुछ (?) करनेको तैयार हो जा सकते हैं।' भारतीय युवकोंपर नपुंसकताकी लाञ्छना लगाकर बेनीपुरीजी भारतीय युवकोंका घोर अपमान कर रहे हैं। वस्तुतः फौजी शिक्षा दुर्बलता अथवा नपुंसकताका स्रोतक नहीं। वह तो अनुशासन, संघटन और शक्ति-संचयनका साधन है। यही कारण है कि देशमें आज फौजी शिक्षाकी अनिवार्यता समझी जा रही है। युक्तप्रांत, मध्यप्रांत आदिमें तो इसके सम्बन्धमें योजना भी तैयार हो चुकी है। 'परेड करने, कसरत करने तथा जाडियों चकाने का अभ्यास' किसी भी दशामें अनुपयुक्त नहीं कहा जा सकता।—हाँ उसका दुःख

'धर्मसंघ-सप्ताह' और 'गो-सप्ताह' मनाइये

—श्री वज्रपाणि—

गत दो दिनोंसे 'धर्मसंघ-सप्ताह' आरम्भ हो चुका है। यों तो प्रत्येक सनातनी इसे प्रतिवर्ष मनाया करता है पर इस वर्षका सप्ताह कुछ विलक्षण स्थितिमें ही आ पड़ा है। सर्वप्रथम तो इस सप्ताहके प्रवर्तक-पूज्यवाद स्वामी श्रीकरपात्रीजी महाराज ही इस धार्मिक महापर्वमें हम-जोगोंसे दूर हैं, 'अपने देशमें अपने राज' के फलस्वरूप आजके शासक काळे अंग्रेजोंने गोवर्धनदीकी मांगपर उन्हें छः मासके लिए कारागार में बंद कर रखा है। दूसरे लिए कारागार में बंद कर रखा है। दूसरे नाममात्रकी भी धार्मिक तटस्थता-नीति-को त्यागकर आजके हमारे देशी शासक बिना धर्म और वर्णभेदका शासन इस पवित्र 'आर्यावर्त' पर चकाना चाहते हैं जो भारतके उज्ज्वल इतिहासमें कलंकस्वरूप होगा। तीसरे बिचामी हमपर खुलकर वार कर रहे हैं। उन्होंने हमारा धन लूटा, घरमें हिंसा बढ़ाया और जननाशकी तो पूछना ही क्या? हम आत्मरक्षार्थ सचेत होते हैं तो इन तशकबित राष्ट्रियोंका सिसे पैतक बरस शरीर जल उठता है। वे उतना भी नहीं स्वतंत्र होने देना नहीं चाहते। स्वयं भी वे हम जोगोंकी रक्षा कर सकते हैं तो वह भी बात नहीं, इस क्षणसे दूसरे क्षणमें जीवितका भरोसा नहीं रह गया है, विश्वव्यापी द्वितीय महासमरमें नित्योपयोगी अन्न-वस्त्रादिका बिना अभाव नहीं या उससे कहीं अधिक उन पदार्थोंके अभावमें हम भारतीयोंको आज उत्पीड़ित होना पड़ रहा है। संक्षेपमें हमारे ही व्यक्ति अपने हाथों अपना और हमारा सर्वनाश कर रहे उताऊ हैं। 'हिंदुत्व'को केवल इति

आवश्यकता न होगी। भला, जीवन-मरणकी घड़ीकी विलक्षणतामें भी कोई विप्रतिपत्ति हो सकती है ?

इस सरकार भारत-शत्रुओंसे देशकी रक्षा करनेमें असमर्थ हो रही है और उधर पण्डरपुरमें अन्त्यर्थोंको घुसाने की बालिश चेष्टाएं चल रही हैं। सनातनियोंके खलनादको भी न सुनकर 'राज-सत्ता-प्रभु' अधिकारियोंने बम्बई असेम्बली में 'अस्पृश्य-मंदिर-वेश' जिल' पासकर पण्डरपुरके श्रीविठ्ठलमंदिरमें अन्त्यर्थोंको घुसा ही दिशा, जब कि उसी मन्दिरके प्रसंगमें कुछ ही दिन पहिले खाने शुद्धी-ने मुंहकी खायी और बम्बई सरकार भी सनातनियोंके सक्रिय संघटनसे भलीभांति परिचित हो चुकी थी। समझते-बूझते हुए भी सरकारका यह कृत्य सिवाय राजमदके और कुछ नहीं कहा जा सकता। वह पुच्छि और सेना परिष्कृत शब्दोंमें पाणविक बलके सहारे धर्मप्राण हिंदुको कुचक बालना चाहती है। आखिर भूत-पूर्व कांग्रेस अध्यक्ष आचार्य ज्ञानानंदकी यह शुद्धबोधना कि 'अंग्रेजोंसे हमारा युद्ध समाप्त है, अब अपने ही उन धार्मिकोंसे हमें लड़ना है और कड़कर किसी भी प्रकार विजय पानी है जो वर्णभेदको अभी भी गले लगाये हुए हैं, सच होकर रही। वर्तमान कांग्रेस-सरकार भारतसे धर्म और 'हिंदू' को मिटा देना चाहती है। ऐसी स्थितिमें 'धर्मसंघ-सप्ताह' मनाना कितना महत्वपूर्ण है !

इस सप्ताहका एक-एक दिन महत्वका समझकर व्यर्थ न जाने देना चाहिये। हम हिंदू सनातनियोंके लिए आज कोई

नेशनल इन्डियन कम्पनी लिमिटेड

श्रीलक्ष्मी प्रति सिंघानियाका भाषण

हिस्सेदारोंकी ४० वीं बैठकमें अध्यक्षपदसे

सजनों,

३१ दिसम्बर सन् १९४६ को समाप्त होने वाले वर्षका आय-व्यय और विवरण आपके सम्मुख उपस्थितकरते हुए मुझे हर्ष हो रहा है। सन् १९४६ में प्रकट ७३ लाख ८८ हजार ४०४ रुपयेके मालियतकी २३ हजार ६ सौ ६३ नवी पालिसियां जारी की गयीं। इस तरह अब तक २७ करोड़ ३८ लाख ७६ हजार ५०२ रुपयेकी १ लाख २४ हजार ४४७ पालिसियां जारी हो चुकी है। देशके विभिन्न भागोंमें साम्प्रदायिक दवाविन फैलनेसे हमें इस वर्ष आशानुकूल सफलता न मिल सकी। प्रीमियमसे १ करोड़ २४ लाख ८६ हजार २७१ रुपयेकी आय हुई। जनतामें इस कम्पनीकी लोकप्रियता बढ़ रही है और हम भी अपने ग्राहकोंको अन्य कम्पनियोंसे अधिक सुविधा प्रदान करते हैं। शुद्धकालोन तथा शुद्धोत्तर घटनाओंके कारण प्रीमियमसे यथेष्ट आय नहीं हुई पर कम्पनी इस भारको अपनी शक्ति भर वहन करनेमें समर्थ है। वचत में से १७ लाख ६३ हजार २५३ रुपये पालिगो होकरकी तथा २ लाख ४५ हजार ४२१ रुपये १० प्रतिशतके हिसाबसे हिस्सेदारोंकी बांटे गये। प्रत्येक एक हजार के बीमेपर ५ रुपया बोनस दिया गया है। ब्याजसे २१ लाख ५५ हजार ४०१ रुपये दो आने ४ पार्सकी आमदनी हुई जो पूंजीपर ३.८७ प्रतिशत ब्याजके हिसाबसे होती है। सदस्यी दरमें कमीके कारण हमारी ब्याजकी आमदनी पिछले वर्षोंकी अपेक्षा कम हो रही है। यदि इसी तरह ब्याजकी दर घटानेकी सरकारी नीति जारी रही तो जीवन बीमा कम्पनियोंके लिए बहुत सी कठिनायां उत्पन्न हो

परकर लगानेकी प्रथा रहेगी इस प्रकारके टैक्स लगते हो रहेंगे। स्मरण रखे कि अनुपातके हिसाबपर लगाये हुए करसे वास्तविक रकम प्रतिवर्ष बढ़िपर ही रहेगी। करके बोझसे हम लदे हुए हैं। जनतक जीवन बीमा कम्पनियोंके प्रति न्यायोचित सुविधाएं नहीं दी जाती तब तक शायद ही वे अपने वादोंका पालन कर सकनेमें समर्थ हो सके।

कम्पनीके प्रबन्ध-विभागका सालाना खर्च ४० लाख २ हजार ५४८ रुपये है जो प्रीमियमकी आमदनीका ३२.५ प्रतिशत होता है। शुद्धाकी कवचात् कम होनेके साथ ही साथ जीवननिर्वाहके साधन भी मंझे हो गये हैं। आवश्यक वस्तुओंकी आमद कम है। धार्मिक दृष्टिसे देश निर्धन है। कर्मचारियोंको अधिक वेतन तथा मंहगईका भत्ता देना पड़ा है और जीवोके दाय भी बढ़ गये हैं। प्रीमियम निश्चित करते समय इस खर्चोंका समावेश नहीं किया गया था। चाहे बीमोंपर भी खर्च बेतरह बढ़ गया है। इससे प्रीमियमकी दर बार-बार निश्चित कानो पड़ती है। हम सचेत हैं कि प्रीमियमकी दर समय आनेपर कम भी कर दी जाय जिससे निर्धन वर्गको भी बीमेको स लियत मिलती रहे।

बीमा—कम्पनियोंके राष्ट्रियकरणकी चर्चा भी की जाता है। यह विवादमस्त प्रश्न है और इसके विरोध या पक्षमें बहुत कुछ कहा जा सकता है। मैं बिनादमे पड़ना नहीं चाहता। मेरा विश्वास है कि आज जनताका आर्थिक स्तर ऊँचा करनेकी सबसे बड़ी आवश्यकता है। निजी व्यापार, उद्योग और पूंजीसे बीमा-संस्थापन कायदा नष्ट है। ३२ दिसम्बर

कार्तिक शुक्ल १० रविवार २००४

सन्मार्ग

विचार वीथी



प्रतिशोध, प्रत्यपकार, वा 'बदला' लेने की भावना का अस्तित्व मनुष्य में ही नहीं, प्राणिमात्र में न्यूनाधिक मात्रा में पाया जाता है। जो प्राणी जितना ही उद्बुद्ध होता है, प्रतिशोध की भावना भी उसमें उतनी ही बलवती देखी जाती है। सुषुप्त प्राय प्राणी, हृष्ट और कृतांत अपने जीवनक्षेत्र में उगनेवाले अन्य पेड़-पौधों को निर्बल बना मार डालती हैं। उनकी अपेक्षा अधिक उद्बुद्ध प्राणी पशु हैं। उनमें हम उपर्युक्त भावना को उग्र रूप में देख सकते हैं। कहते हैं—मैंसा बारह बपं तक बैर साधता है। साँप के बारे में भी ऐसा ही कहा जाता है। उस हाथी की कथा भी बहुत प्रसिद्ध है जिसने अपनी सूँड़ में सुई चुमानेवाले दबीले, उसकी दुकान में सूँड़ का गन्दा पानी फेंक ग्राहकों के कपड़े गन्दे करके बदला लिया था। चेतन प्राणियों में यदि इसका कहीं अभाव होता है तो कायरों, नपुंसकों या अतिमानुष महात्माओं में।

अब कोई पहिले किसीके साथ अपकार करता है या किसीका स्वार्थ-आप करता है या किसीको अपमानित करता है, तब दुखी होकर प्रतिपक्षी सहनशीलता की मर्यादा तोड़ उच्चस्वरूप बदला देने के विचार से वादको उसका जो कुछ अपकार करता है उसीको प्रतिशोध कहते हैं।

सुषुप्त प्राणी केवल स्वार्थ-आप के कारण ही प्रत्यपकार में प्रवृत्त होते हैं। यद्यपि वे उपकार, अपकार, प्रत्यपकार तथा प्रतिशोध को जानते नहीं; तथापि नियति या प्रकृति द्वारा संशुद्ध परिचित होकर अपना कार्य करने लगते हैं और प्रतिशोध कर ही लेते हैं।

के लंकादहन, दानव-दहन आदि भी चीता-हरणरूप अपकार से जनित रोष के प्रति-विधान के अतिरिक्त और हो ही क्या सकते हैं ?

महाभारत में तो स्थान-स्थान पर प्रतिशोध का तीव्र समर्थन खुले शब्दों में किया गया है। यहां तक कि हिन्दुओं के सोलह संस्कारों में जो पुंस्वन संस्कार होता है उसमें सुनाने के लिए जो विदुला की कथा है वह प्रतिशोध की भावना को संस्कार-रूप में परिणत करने के लिए ही सुनायी जाती है। विदुला नाम की एक क्षत्राणी अपने पुत्र को, जो समर में विजयवाज से पराजित होकर भाग आया और भूमि पर लेटा पड़ा था, बिनाकारकर कहती है—'कापुस्व ! उठ, पराजित होकर इस प्रकार शव की भांति मत सो। तेरे इस कार्य से शत्रु प्रसन्न और मित्र दुःखी हो रहे हैं। जीवन को मुख्यवान् समझने वाले नपुंसक ! तुम्हें मैं या तेरे पिताने पैदा नहीं किया है, तुम्हें बाहर से आ टपका है। अच्छा होता, मैं बाँझ होती और पड़ोस की बियां मुझे तुम्हें-सरीखे कायर की माता होने का ताना न सुनातीं। अब तु निश्चिन्त होकर सो, क्योंकि तु जीवनमरके लिए स्वस्थ हो चुका। अब बैठे बैठे अपना पैट भरा कर। जो अपने शत्रु के सिर पर, अपकारी की गर्दन पर अपना बायाँ पैर रख अपने वंश की मर्यादा नहीं बचा सकता उसका विकल जीवन बसुन्धरा का भार है' इत्यादि। यह सुन पहिले तो पुत्रने माता से कहा कि 'क्या तु मेरे इस शरीर और जीवन के प्रति मोह नहीं रखती जो मैं बाग्याणों से लेदे डालती हो ?' पर दूसरे ही पल उसका पैर फटकर

हाय रे गोहत्या !

—भारतेन्दु के हृदयोद्गार—

आर्य आतागण ।

जबसे यवन-गण के कण्टकमय चरण इस आर्य-भूमि में आये तबसे गडगडों पर जो दुःख है वह हम लोगों का भी ही जानता है। यद्यपि अंग्रेज लोग भी गो-भक्त हैं, किंतु प्रथम तो मुसलमानों की अपेक्षा इनकी संख्या ही अति-अल्प है। दूसरे इनका बहुत-सा मांस विदेशों में आता है। तीसरे इनके अर्थ जो हस्त-होती है वह प्रकाश रूप से नहीं होती। केवल मुसलमानों की हत्या ऐसी है जिससे सतत हम लोगों को दुःख होता है। विशेष दुःख इस बात से होता है कि अंग्रेज लोग भी इन्हीं का पक्ष करते हैं।



इसका कारण अतिस्पष्ट है। हम-को एक अंगुल भूमि बैठने को नहीं उनको रुम, ईरान, मिस्र, अरब, फारुल अनेक राज्य वर्तमान हैं। हम अत्यन्त सुदु, वे अतिकठोर। हमारी दास-भूति अभ्युत्थित, उनकी नवीन होने के कारण अनभ्युत्थित। हमारे धर्म का मूल धान्ति उनका खड्ग। इधर आकाश, उधर उद्योग। और सबसे मुख्य यह कि इधर रु, उधर

एका। कचहरी के अमला वकील मुखतार बेइया और कारीगर इन विविध रूपों में हम लोगों में वे ऐसे मिल रहे हैं कि धूमना कठिन। ऐसा तो कोई ही माई-का लाल होगा जो इन कष्टों को सहकर इनका सहवास, इनका व्यवहार और इनका सम्बन्ध छोड़ दे। किन्तु हम लोगों को यथासाध्य यत्न तो करना ही चाहिये।



सामयिक समस्या

काश्मीर प्रकृति-देवी का कीला-निकेतन है। अपनी सारी शक्ति खर्च कर उसने इसे सुन्दर बनाने का प्रयत्न किया है। अपनी मनोहर हव्यावली और नैसर्गिक विभूतिके कारण काश्मीर यह पृथ्वी परका स्वर्ग है। सर्वदा हिमाच्छादित गिरिशृंग, चील और देवदाह के घने जंगलों से हरी-भरी पर्वतमालाएं दिगन्तग्रापी श्यामल वनराजियां, मल-मल के समान कोमल लक्ष्मी २ घास की विल्लीर्ण चरागाहें, निनाद करते हुए सरने, गाती हुई सरिताएं, मोठे बल्ले सुंदर सरोवर, गगनचुम्बी सफेद के पेड़ों की पंक्तिबद्ध रमणीय सड़कें, स्वादिष्ट फलों और मनोहर पुष्पों की रम्य वाटिकाएं—इन सब सौंदर्यसाधनों से सम्पन्न प्रकृति-नटी का दिव्य रूप यहां मिलर पड़ता है। आज यह देश अत्यन्त संकटों के बीच गुजर रहा है। देश के कर्णधार उसके सुरक्षाधी जीवानों से लगे हैं। आइये, आज हम प्रस्तुत लेख द्वारा इस दिव्य भूमि के इतिहास का विहावलोकन करें।

काश्मीर नाम कैसे पड़ा ?

कहलार में से छः मन्वन्तर तक यह प्रदेश ब्रह्म (सरोवर) में मग्न था। इसमें माता पार्वती नौका-बिहार किया करती थीं। अतिप्रिय होने के कारण उन्होंने इसका नाम 'सतीसरोवर' रखा था। वहीं जलोद्भव नामक राक्षस राज्य करता था। उसके अत्यन्त प्रजापीडक होने के कारण काश्यप ऋषिने सरोवर को सुखाकर उस राक्षस का वध किया। तभी से इस प्रदेश का नाम काश्यपसर अथवा काश्यपपुर पड़ा। काश्मिर से इसे लोग 'काश्मीर' कहने लगे।

मैं कवि और कवियों में राजा थे। उनमें कठोरता और दयालुता, उदारता और कृपणता, स्वच्छन्दकारिता और परच्छन्द-नुवर्तिता आदि परस्पर विरुद्ध धर्मों का सुंदर समावेश देखते ही बनता था। विलास-सामग्री में बड़ी रकम खर्च करने के कारण खजाने में धन की कमी पड़ी। आगे चलकर उसे पूरी करने के लिए जिन उपायों को काममें लाया गया उससे जनता में राजा के प्रति असन्तोष फैला। विरोधियों ने इसका फायदा उठाकर राजा हर्ष के विरुद्ध बलवा खड़ा कर दिया। स्वयं राजा को रणांगण उतरना पड़ा। किन्तु दुर्भाग्यवश शत्रुओं की ही विजय हुई।

इसी समय मान्यसूर्य मस्त हो गया। इतिहासकों का कहना है कि अन्तिम हिंदु-नरेश राजा हर्ष ही थे। उनके बाद काश्मीर के राजविहासन पर कोई ऐसा पराक्रमी राजा नहीं हुआ जो कुछ काश्तक धान्तिपूर्वक राज्य कर सका हो। कभी जागीरदार बलवा करते, कभी जौन सिर उठाती, कभी मन्त्री राज्य हड़प जाते तो कभी राजा के सरोचम्बनी, राज्य प्राप्त करने के लिए पड़पन्न रचते थे। किन्तु कोई भी स्थायी धान्ति स्थापित न कर सका। लगातार २०० वर्ष तक यही बेदंगी रफ्तार जारी रही, अन्ततः काश्मीर मुसलमानों के हाथ चला ही गया।

मुसलिम-शासन में

काश्मीर में इस प्रकार अराजकता फैलने के साथ ही उस समय आसपास के प्रदेशों में इसलाम का प्रचार जोरों के साथ बढ़ रहा था। सन् १३३९ में शाह मीरने काश्मीर पर अधिकार कर शासन शुरू

कागजी फूल

“मैं कट्टर कांग्रेसी था, जबतक छुरी पेटके पासतक न आयी थी”

—प्रोफेसर गोपीनाथ तिवारी, एम० ए०—

“हां, तो मैं कट्टर कांग्रेसी था। डॉ० गोपीचन्द्र भार्गव के स्थान-में थे। अतः प्रधानमंत्री बन गये। किन्तु मैं ग्रामीण समुदायमें था। प्रकाशमें न आ सका। अन्यथा पंचाबके समस्त कांग्रेसी तथा राष्ट्रभावनानाके शिक्षित जन जानते थे कि मैंने कैसा ठोस कार्य किया था। गाँवोंमें काम करने जब मैं जाता था तो रोटियाँ अपने घरसे ले जाता था कि कहीं कोई यह न कह दे कि सेवाके बदले यह खाना खाता है। जिले-की प्रत्येक पकड़दी मेरे पैरोंसे परिचित थी और प्रत्येक पुरुष या मेरा मित्र। मैं नलसे शिखतक, रोम रोमसे कांग्रेसका अनुयायी था। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ मेरी आँखोंमें वैसा ही काँटा था जैसा कि मिर्चा जिनाकी आँखोंमें सरदार पटेल। हिन्दू मुसलिम एकताका मैं उतना ही प्रबल पक्षपाती था जितना कि महारमा गांधी। किन्तु यह सब केवल २० तारीखतक। एक ही दिनमें, १२ शरीके अन्दर मुझमें विचित्र परिवर्तन हो गया। मेरे सैकड़ों मुसलमान मित्र थे। उनमें कुछ कांग्रेसी भी थे। मेरी इत्थानके लिए किन्हीं ने ५ सौ रुपयेका पुरस्कार रखा था, उनमें से मुसलमान मित्र भी थे। सहायता देनेकी अपेक्षा ये भी मेरे प्राण लेनेपर उतारू हो गये।

स्तान उधरा। भारत-विभाजनसे पूर्व मिर्चा जिना समस्त मुसलमानोंको इस अपवित्र स्थानसे निकालकर पाक-स्थानमें ले जानेके पक्षपाती थे। उन्होंने सम्पूर्ण जनताकी अदला-बदलीकी घोषणा भी कर दी थी। न जाने क्यों उन्होंने वह सतम स्वर धिक्कड़ घोषा कर दिया। अब वे इस नापाक-स्थान (हिन्दुस्थान) को ही पाक-स्थान बनाना चाहते हैं। तभी तो पाकिस्तानके आधार स्तम्भ मियाँ लियाकत अली खाँ अब अपनी पूरी योग्यताका प्रदर्शन करते हुए कहते हैं—“पंजाबके अतिरिक्त युक्तप्रान्त और दिल्लीके मुसलमानोंकी अदलाबदलीके लिए मैं भी प्रस्तुत नहीं। ठीक तो है। क्योंकि मुसलमान ‘जिहाद’ में साथ दें।”

इस भारतीय घटनाओंने इस सन्देह को पूर्णतया पुष्ट कर दिया है। सरदार पटेल तो पहिले से ही कह रहे थे—चपरासीसे लेकर मंत्रीतक प्रत्येक भारतीय मुसलमान लीगी है। माननीय टंडनजी गला फाड़ फाड़कर चिल्ला रहे थे कि इन मुसलमानोंका विश्वास न करो। पर सुनता कौन था? गांधीके स्वर्गीय (१) प्रभावमें सभी लोग नन्दन बनके पारिजातकी मोह वायुका पशं कर रहे थे पर सहसा हमारे ओहपुरुषने दिल्ली पदयन्त्रको सामने ला अपना कथन पुष्ट कर दिया। परमात्माकी परम अनुकम्पा दुर्दैव, नहीं तो हिन्दुस्थानके पाकिस्तान बननेमें क्या बरस रह गयी थी। अब भारतीय कर्णधारोंकी आँखें खुलीं। जगह-जगह मुसलमानोंकी तलाशियाँ हुईं। इन लोकोसे



पुस्तक पारिचय

विक्रम, लोकमान्य, लोकमत, विश्वमित्र, देशदूत, साप्ताहिक हिन्दू, प्रताप, चंडी, ली, मनोहर आदि प्रमुख २ हिन्दी पत्रोंके ‘दीपावली विशेषांक’ या ‘पूजा-दीपावली-अंक’ हमें प्राप्त हुए हैं जो अपने २ कुछ परिगणित लेखों, कविताओं, मेकअप, चित्रों, छपाई आदिको दृष्टिसे अच्छे ही बन पड़े हैं। एतदर्थ हम उनके अत्यन्त आभारी हैं।—संपादक।

अखण्ड भारत

(दीपावली-अंक)

मराठी साप्ताहिक। संपादक—ना० भा० जोशी, एम्० ए० एल्० एल्० बी०। प्राप्ति स्थान—नारायण पेठ पूना। एक प्रतिका एक आना। इस विशेषांकका मूल्य १) रुपये। पृष्ठ संख्या १२५।

सनातनी विद्वान्तों, विशेषतः वर्णाश्रम स्वराज्य संघके पक्षोंका समर्थन करता हुआ यह पत्र गत ४ चार महीनोंसे शक्ति से अधिक ठोस सामग्री प्रत्येक अंकमें अपने पाठकोंकी सेवामें उपस्थित कर रहा है। आज इसका दीपावली विशेषांक हमारे सामने है।

चित्रकार ‘दलाल’ द्वारा चित्रित मुख्यपृष्ठका तिरंगा चित्र (भगवान् मुरली मनोहरका कृष्णाको आश्विन), आदिपेपरपर भगवान् आद्यशंकराचार्य तथा स्वर्गीय धर्मप्राण श्रीकृष्ण शास्त्रीजी का चित्र एवं अन्यान्यचित्रोंमेकअपआदि के द्वारा अंकका बाह्य कलेवर सुन्दर बन पड़ा है। लेख, विषय आदि आन्तर कलेवर भी सन्तोषप्रद है। विभिन्न विषयोंपर लिखे गये ३२ लेखोंमें कै० न० चि० केकरका ‘सनातनी पक्षकी उपयुक्तता और कार्यप्रवृत्ति’, पण्डित ज श्रीराजेश्वर शास्त्रीका ‘भारतीय-राजनीति-प्रवास’ नाम किम्? शीर्षक संस्कृत

और सफल प्रयास अवश्य ही आश्वय जनक है। प्रक संशोधनमें अवश्य कुछ त्रुटि रह गयी है। फिर भी अन्य सभी दृष्टियोंसे अंक सर्वोत्तम बन पड़ा है। सनातनधर्मसे प्रेम रखनेवाले प्रत्येक व्यक्ति के लिए यह पत्र अवश्य संग्रहणीय है। भगवान् विश्वनाथ पत्रका दिन वृत्ता रात चौगुना बढ़ायें।—कुमारिल।

किलोस्कर दिवाली-अंक

संपादक-श्रीमुकुन्द शं० किलोस्कर, किलोस्करबाड़ी, सतारा। पृष्ठसंख्या ८४ वार्षिक मूल्य ५) रुपये।

महाराष्ट्रक प्रगतिशील सुधारक पत्र ‘किलोस्कर’ मासिक रूपमें गत २७ वर्षोंसे मराठीभाषामयकी सेवा कर रहा है। हमारे सामने उसका सन् ४७ का दिवाली अंक है। मुख्य छपर श्रीबाबूराव पेंटरका चित्र उनकी ख्यातिकलाकारिताके अनुरूप ही है। संपादकीय पृष्ठका दिवाली चित्र स्वदेशी भारतसरकारका आकर्षक विज्ञापन बन बैठा है। सौभाग्यवती दीपावली तलिकासे ‘कालेतकते’परके देशभक्तोंके कर्तव्योंमें समयातुकर संशोधन कर रही है। ‘कानून मंग करोके स्थानपर ‘कानून का पालन करो’, अशान्ति (क्रान्ति) निर्माण करो (मचा दो)’ के स्थानपर ‘शान्ति निर्माण करो’ और ‘सरकारसे असहयोग करो’के स्थानपर ‘सरकारसे सहयोग करो’ बनाया जा रहा है।

अधिक होगी कि यदि साधारण व्यक्ति चाहे तो बिल्लीके दम चूनें पर निश्य रखी बना सकेगा। सरकारने इस योजना को अपने हाथमें लिया है, तथापि प्रगति सन्तोषप्रद नहीं है। महाराष्ट्र प्रांतसे इसे सफल बनानेका संपादकीय आग्रह ध्यान देने योग्य है। छपाई, मेकअप आदि प्रशंसनीय है।—अंगार।

माला

मासिक पत्रिका ‘माला’ सम्पादिका—कलावतीदेवी ‘बच्चरी’, प्रकाशक—कला-मन्दिर, दारागंज, इलाहाबाद, वार्षिक मूल्य ४।) और एक अंकका आठ आना। भारतमें ली सम्बन्धी पत्र-पत्रिकाओं का यों ही अभाव है, उनके दैनिक जीवनसे सम्बन्ध रखनेवाली पत्रिकाओंका कहना ही क्या। प्रसन्नताकी बात है कि

इस अभावकी पूर्तिके लिए इलाहाबादके कलामन्दिरने इलाचनीय प्रयत्न किया है और मन्दिरके तत्वावधानमें ‘माला’ नामक मासिक पत्रिकाका प्रकाशन आरम्भ हो गया है। इस पत्रिका द्वारा सीना-पिरोना, बेल-बूटोंका काढ़ना, बुनना, दरी-कालीन बुनना, रुई रुवाई द्वारा सचिकर बस्तुओंको तैयार करना सिखाया जाता है। पत्रिकाके उद्देश्यके बारेमें बताया गया है कि “माला केवल जियोंके शृंगारकी वस्तु न हो बल्कि देवियोंके जीवनमें ऐसी उपयोगी सिद्ध हो कि वे इसके द्वारा आर्थिक समस्याको हल करनेके योग्य हैं।” उद्देश्य निश्चन्द महान और राष्ट्रिय है। आशा है, इस पत्रिकासे महिला समाजकी अधिकाधिक सेवा होती रहेगी और यह समाज दिनानुदिन उन्नत करता चलेगा—

‘परेश’

अकौता—Eczema उकौता-

अकौता-छाजन यह बहुत ही खराब बीमारी है। यह हाथ व पैरोंमें फैल जाती है। इसका जड़ते नाश करनेके लिए ‘अकौतारि’ अति प्रसिद्ध सुस्वा है। इसके जगते हम खुजली, दीर, जलन, फुन्सी आदि रोग बटकर थोड़े दिनमें ही सम्पूर्ण आरती होकर मुक्तयम स्वाभाविक चमड़ी निकल आती है। कीमत २)।

पता:—आरोग्यसदन, कानपुर यू० पी०

ठगोंसे ठगे हुए

कमजोरी, सुस्ती, शीघ्रपतन, स्वप्नदो इत्यादि रोगोंके रोगी हमारे यहाँ आकर इलाज करावें और लाभ होनेके बाद स्व हैषित दाम दें और जो न आप सके वे अपना पूरा हाल बन्द लिफाफेमें भेजकर मुफ्त सलाह दें, हम उनको अपने उत्तरके साथ उनके लाभके लिये अपनी एक पुस्तक ‘विचित्र प्रतयाश्र’

लेवारी के अन्वयान में उद्योग-सूर्य की प्रवर्तना



आर्य उद्योग संघ अमरसुखान देहली

सफेद बाल काला

खिजासे नहीं, हमारे आयुर्वेदिक ‘केय संजीवनी’ (सुगन्धित) तैलसे बालोंका पकना रुककर सफेद बाल जड़ते काला हो जाता है। यह तैल दिमागी ताकत और आँखों की रोशनीको बढ़ाता है। जिन्हें विचार

कातक शुक्ल १० रविवार २००४

तन्माग

५



‘शत्रु धारण कीजिये सम्राट । सैनिक संघटनकी आवश्यकता है ।’ महामंत्रीके शब्दोंमें कम्पन था ।

‘शत्रु ! क्या अहिंसा और धर्मराज्य में भी शत्रुकी आवश्यकता है ?’ मौर्य-सम्राट् ब्रह्मचर्यने प्रश्न किया ।

‘हे अन्नदाता ! शत्रुके बिना शासन असम्भव है । हमें समयके साथ चक्कना है । दुर्तोंने सज्जना दी है कि आर्यावर्तके भीतर यवनोंका विशाल साम्राज्य बन रहा है । विष्णुगतरक देश आज उनकी क्रूर से आक्रान्त हैं । निरथ सहस्रोंकी संख्यामें आर्य वहाँसे भाग रहे हैं । रणियों...’

‘बन्द करो न्यायमान महामंत्री ! सम्राट्को वे बातें अच्छी न लगीं ।—‘हां तो तुम जो सकते हो’

खिन्न मनसे महामंत्री लौट-चला ।

आजसे हजारों वर्ष पहिलेकी बात है। मगधमें मौर्यसाम्राज्य था । मगधका तत्कालीन शासक ब्रह्मचर्य था । बौद्धधर्म राजधर्म था और अहिंसा या उसका महामन्त्र । सैनिक भिन्न हो गये थे । शत्रुका नाम लेना भी पाव था । अहिंसाने कार्यरताका रूप धारण कर लिया था। साथ ही देशकी आन्तरिक स्थिति ‘मो डांवाडोल’ थी । बौद्धोंका गुप्त पटवन्त्र चल रहा था चैत्यों और बिहारमें निरथ नवीन कुचक का आयोजन होता था । उच्च यूनानियों को भारतमें विलुप्तकी हारका बदला लेनेका सुअवसर मिला । मौर्य साम्राज्य को शक्तिहीन पाकर वे बराबर बढ़ रहे थे । आज गांधार, कठपुष्पपुर, परसो पंचनद

खिन्न बना दिया है । तुम्हारा तात्पर्य ? महामन्त्रनि चौककर पूछा ।

‘चौको नहीं महामन्त्री ! वह पुनीत कार्य है मातृभूमिका यवनोंसे उद्धार ।’ ‘किंतु सेनापति हमारे पास न सैनिक है, न विपुल शाखाऔर न भरपूर कोषा देशकी आन्तरिक स्थिति भी तो देख रहे हो ।’

‘देख रहा हूँ और खूब समझ भी रहा हूँ । महामन्त्री प्रजा इस कार्यरतासे ऊन गयी है । इस अहिंसाने उसे क्या दिया अत्याचार, उत्पीडन हीन । आजतक अहिंसाका नारा लगाकर एराने देख लिया कि अहिंसा कैसी है । सुनो ध्यानसे सुनो देश फूसका भाण्डार बना है, एक चिनगारीकी आवश्यकता है फिर ग्लेख राज्यके साथ यह अहिंसा भी मरम हो जायगी ।

‘किंतु सम्राट्...?’

‘यदि वे अहिंसा त्यागनेको तैयार न हों तो उन्हें भी मार्ग...’

‘किंतु यह विश्वासघात होगा सेनापति ।’

‘एक पापसे यदि मातृभूमिकी, धर्म की और अपनी संस्कृतिकी रक्षा होती हो तो—’

इसी समय एक गुप्तचरके आनेका समाचार आया ।

‘क्या सन्देश है ?’

‘महामना धर्मगुप्तने चैत्यों १००० कृपाण और अनेको विस्फोटक पदार्थ संग्रहीत कर रखे हैं ।’

‘और कुछ ?’

‘नहीं’

गोरक्षाका आश्रयसन बहुत जरूरी

जबसे अंग्रेज हिन्दुस्तानमें आये तबसे गोहत्या बहुत बड़ी संख्यामें प्रतिदिन होने लगी । जहां अंग्रेजी फौज है वहीं गोहत्या अधिक होती है । दुर्भाग्यसे ऐसे कई स्थान हैं मथुरा, प्रयाग, काशी आदि जहां मुसलमान बादशाहोंने भी जनताका ध्यान रखकर गोवध, बन्दोका ऐलान किया था । पर जब अंग्रेजी फौजें यहां रखी गयीं हैं, तब से ये कवाईखाने वहां कायम हुए ।

इसलिये अंग्रेजी फौज जब वहांसे जा रहती है, अंग्रेजी हुकूमत यहांसे हटती है तो इसका परिचय एक देहातीको तब ज्ञात होगा जब विधान परिषद् द्वारा गोरक्षाका आश्रयसन जनताको दिया जाय । शासकोंके आजतकके व्यवहारसे इस मामलेमें जनताका विश्वास सरकारमें नहीं रहा है । इसलिए भी इस आश्रयसन की बहुत बड़ी आवश्यकता अनुभव होती है ।

—बाबा राघवदास ‘गोरखपुर’

अनाथ गाय !

दूध आठ सेरकों निपनियां दुग्ध तहां, मक्खन मिलेकी कहा चरचा चलाई है । बी है टाई पाव पै रहत संक चरबी की, मट्ठाकी दवाईको रहत कठिनाई है ॥ जाके पटे जगके पदार्थ घटे हैं सबै, जाकी बुद्धि सब ही अभाव की दवाई है । दीनानाथ सोई कलिकालके प्रभावन सों, हाथ जगपावन अनाथ भई गाई है ।

—स्व० राय देवीप्रसादजी ‘पूर्ण’—



कैसी स्वतन्त्र देशके लोगोंके लिए वहांकी सरकारका उनकी सभ्यता, संस्कृति तथा लाभदायक धार्मिक विद्वान्तों और उसके जीवनकी आवश्यक नीजोंकी रक्षाका वचन देना सार्वभौम सिद्धान्त है । रूस जैसे समाजवादी देशमें भी जहां भिन्न-भिन्न तरहकी सभ्यता भाषा, तथा आचार व्यवहार रखनेवाले लोग बसते हैं, उनके उचित सिद्धांतोंकी रक्षाकी गयी है । संसारके प्रायः सब विधानोंमें ऐसी बुनियादि बातोंका जिक्र है । हमारे देशके लोगोंके जीवनका आधार गोवध है । अन्य देशोंमें जोड़ोंसे खेती होती है पर यहां खेतका मुख्य साधन है बैल । यदि बैल न होता तो न अन्न पैदा हो सकता और न बज तैयार करनेके लिए रुई ही । कुएं चलाने तथा गाँवोंमें बोझ ढोने और सवारीके लिए भी बैल चाहिये । बैलोंके इस महत्वको दृष्टिमें रखते हुए कहा जाता है कि पृथ्वी बैलके सींगपर टिकी हुई है । गायके दूध, बी और छाछ आदिपर ही करोड़ों लोगोंका स्वास्थ्य तथा शारीरिक शक्ति निर्भर है । भूमिकी उर्वरा रखनेके लिए गोबर तथा गोमूत्र ही सर्वोत्तम खाद है । हमारे देशके लोगोंसे गायका ऐसा ही सम्बन्ध है जैसा शरीरका प्राणसे । हमारी आर्थिक तथा शारीरिक स्थिति तथा उन्नतिका मुख्याधार गाय है ।

धार्मिक एवं सांस्कृतिक महत्त्व

आर्थिक तथा शारीरिक दृष्टिकोणके साथ २ गायका धार्मिक, सांस्कृतिक तथा ऐतिहासिक महत्त्व भी है । तीस करोड़ हिन्दू तथा सिल गायका धार्मिक महत्त्व मानते हैं । गाय उनकी संस्कृतिका प्रतीक है । भगवान् राम, भगवान् कृष्ण, महर्षि बसिष्ठ, जमदग्नि, राजा दिलीप, गुरु नानक

और जो गांव और मनुष्य वधको बराबर का दर्जा देते हैं । अतः विधान परिषदके सदस्योंको पारचाय सभ्यताके पुजारी तथा राष्ट्रवादी कहलानेवाले गोरजिम्मेदार लोगोंकी परवाह न करते हुए विधानमें गोवधनिषेधका नियम रखकर उनके आर्थिक व शारीरिक आवश्यकताओं तथा धार्मिक भावनाओं और सभ्यताकी रक्षाकी गारण्टी देनी चाहिये ।

चीनमें गोवध नहीं

गोवध-निषेध नियम न विशुद्ध साम्प्रदायिक प्रश्न है और न कोईनयी मांग, हमारे पड़ोसी चीन देशकी सरकारने जहां लाखों मुसलमान और सब ऐसे लोग बसते हैं जिन्हें गोहत्यासे धार्मिक विरोध नहीं, अच्छी ही नहीं, कमजोर और अपाहिज गाँवोंके कततपर भी पाबन्दो लगायी है । हमारे देशकी प्रायः हिंदू रियासतोंमें जहां डेढ़ करोड़के करीब मुसलमान बसते हैं, गावध नहीं होता ।

भारत सरकारकी ता० २६-७-४४ की आज्ञानुसार बंगाल, सिन्ध तथा आसामको उस समयकी मुगलमि कीगी सरकारोंने तथा हैदराबाद जैसी रियासतोंने भी भारत रक्षा-कानूनके अनुसार १० वर्ष तककी आयुके बैलों, गायों तथा अन्य सब गर्भित और दुधारू गायोंके वधपर पाबन्दो लगानेसे इन्कार नहीं किया । इन पशुओंके वध करनेवालोंके लिए ३ साल कैदका नियम रखा था, बननेवाले विधानमें सिलोंके लिए कृपाण रखनेका नियम रखा गया, जो ठीक है । सिन्ध प्रांतमें सूअरका मांस बिकना बन्द हो गया । तब भारतमें गोवध क्यों न बन्द हो ।

प्रतिशोध

(पृष्ठ ३ काष्ठम ४ से आगे)

हुई वह ऐलान करके—कह-कह करके की गयी थी, यद्यपि आजकलके विचारक प्रतिशोधको एक बहुत बड़ा अपराध मानते हैं और प्रतिशोधकी भावनासे किये गये कार्यको कानून भी क्षमा करनेको कदापि आशा नहीं देता।

कुछ और अन्तरंग परीक्षा करते हुए जब हम अपने इस परम प्राचीन और सम्यताके आदिगुरु भारतवर्षके नौनिहालोंके कार्यकलापको देखते हैं तो यह कहते नहीं बनता कि 'यह प्रतिशोध नहीं है।' अभी हाकमें इसी देशकी सुपुत्री और सुलक्ष्णे विचारोंवाली एक मंत्रिणीने धर्मसंघके स्वयंसेवक, एक विद्वान् व्यक्तिको चपत मारा था। एक दूसरे नम्बरके भारतीय नेताने स्वयंसेवकोंको यह कहकर डाँटा था कि 'आप लोग मेरा स्वभाव तो जानते ही हैं।' गोया आप जाय हैं और कन्दुक भी रखते हैं। यह सब देख-सुनकर और इन्हीं उपर्युक्त कलियुगी महर्षियोंको जब पुनः पंजाल या वक्त्रियोंमें प्रतिशोधसे बचनेका उपदेश देते सुनते हैं तो हठात् मुँहसे निकल पड़ता है कि 'निराश्रया इन्तः। हता मनस्विता।'।

इसलिए उस सुसज्जमान बेचारेसे—जिसका घर बिहारके दंगेमें छुट गया हो, माई मार डाला गया हो और उसकी जवान बहिन अपहृत हो, युवती कन्यापर उसकी आमागी आँखोंके सामने ही बलात्कार हुआ हो या उस हिंदूसे—जो नोआखालीमें अकिञ्चन बना दिया गया हो और मॉन्ट्रिनोकी बेद-बजती आँखों देख चुकनेके बाद भी अपना निर्लक्ष्य शरीर शरणाधीन शिविरमें पाल रहा हो और जो मनुष्य, यदि हम कहें कि 'शांत रहे, प्रतिशोध बुरा है, जो हुआ सो हुआ, क्योंकि ऐसा करनेसे

शोभा नहीं देती। हृदयकी क्षुर दुर्बलता छोड़ उठ और शत्रुसंहार कर। यदि तू मारा जायगा तो स्वर्ग जायगा, जीतेगा तो पृथ्वीका राज्य भोगेगा। और भागेगा तो भी कभी न कभी तुझे शरीरवियोग होगा ही। केवल तुझे लोग भग्न समझाते अपमान करेंगे जो मरनेको अपेक्षा भी तुझे बदतर बना देगा। आत्मा नित्य है और संसार भिसे मरना कहता है वह बाककले बूढ़ होनेके समान अवस्थान्तर-प्राप्तिमात्र है। हाँ। तू सकाम बुद्धिसे मत कह, क्योंकि ऐसा करनेसे तू फलप्राप्तिका अपनेको हेतु समझ सुखी या दुःखी होगा, जो संस्काररूपमें परिणत होकर तुझे आवागमनके चक्करमें डाल देगा। अतः अपना कर्तव्य लोकसंग्रह और लोकमर्यादा रक्षणके लिए कर, जैसे निर्जीव तलवार करण होकर क्रियाविद्धि करती है।'

उपर्युक्त विवेचनसे ज्ञात होगा कि 'प्रतिशोध' रागात्मिका प्रवृत्ति होनेके कारण बन्धन और दुःखका कारण है, इस लिए हेय और अनार्यका कृत्य है। परन्तु ऐसा व्यवहार करनेसे सुधि उच्छिन्न हो सकती है। अतः प्रतिशोधका फल, जो शत्रुदमन है, वह अवश्य होना चाहिये। तभी लोक, राष्ट्र और मर्यादाका रक्षण होगा। किन्तु साथ ही साथ रागाद्रेषसे नहीं, कर्तव्य समझकर और निष्काम भाव से—कर्तव्य-भोक्तृत्वका अभिमान छोड़कर शिष्टकी भाँति दुष्टदमन नितान्त आवश्यक है।

इस प्रसंगमें यदि हम भगवान् बुद्धका दृष्टिकोण देखें तो ज्ञात होगा कि वे भी बहुत ही सुन्दर बात कहते हैं। उनका कहना है कि—

'अकोचिद्धमं, अवधिमं, अजिनिमं अहासि मे।

येच सं नृपनहन्ति येरंते सुप-

गायकी हाय

डकरति हौं, मैं सवहितन, कहि दुख दुसह अपार।
देके दुःख शेलिबो, हमरे लिखा लिलार ॥
मातु समान हौं पालसि हौं, निज दूष पिआयके खायके खानी।
दूष दहीको पीयो रचिचौं, घृत खौं करे पाक सबै मनमानी।
तापर मोकह मारत हैं, जिनके हिय नेक दया न समानी।
गाय गरीबिनकी अरजी पै, करौ मरजी अब शम्भु भवानी ॥ १ ॥
बायके गाय कहि दुख आपनो, पीर हमारी कोऊ नहि जानी।
हैं बछिया अछिया हमरी सबै, मोछनकी सुनो नेक कहानी।
खेतको जोतत गाढ़िहु खैचत, रीचनके लिए ऐंचत पानी।
सिद्ध कहैं या गरीबिन गायकी, हाय सुनो अब शम्भु भवानी ॥ २ ॥
गोबर शुद्ध करे महिको, अब मृत मिटावत रोग निधानी।
खादसे भूमिकी चकि बई, उपजै बहु अन्न सनै जग जानी।
मेयत है तनके सब पाप, ए पांचहु गन्ध महा सुखदानी।
सिद्ध कहैं या गरीबिन गायकी, हाय सुनो अब शम्भु भवानी ॥ ३ ॥
हव्यसे यश सचैं सिंगरे, अब यशहीते बरगै जग पानी।
पानिहिते उपजै सब अन्नभर, अन्नहि ते जग जीवत प्राणी।
मेरे नसे नसिहैं सब लोक, न बूझत बात महा अभिमानी।
सिद्ध कहैं या गरीबिन गायकी, हाय सुनो अब शम्भु भवानी।
जीवत साज सजौ सुखके, बल बुद्धि बड़ाइ सुनो मम बानी।
पार कगावत बैतरनी, मरिषपर बेद पुरान बखानी।
सोंगपै मेरे घरी बरनी, करनी अस मोरि कुरानहु मानी।
सिद्ध कहैं या गरीबिन गायकी, हाय सुनो अब शम्भु भवानी ॥ ४ ॥
धर्मकी बाँक मिटी जन्ते, तन्ते सब होइ गयी मनमानी।
हिंदुहुके घरमें नहि और, हमैं सुनिये यह दुःख कहानी।
गोचर भूमि बची न कहूँ, मोहि भारतमें न मिलै तुन पानी।
सिद्ध कहैं या गरीबिन गायकी, हाय सुनो अब शम्भु भवानी ॥ ५ ॥
राखि सकैं गज बाजि जेऊ, तेउ गाय न राखत हैं सनमानी।
आसको दान प्रदच्छिण पूजन, मौन करै सब मे अपखानी।
रक्षक भक्षक होइ गये, तब अछिछन ते को बचावह आनी।
सिद्ध कहैं या गरीबिन गायकी, हाय सुनो अब शम्भु भवानी ॥ ६ ॥
मोको तो समान हिंदू दुरक इसाई सबै,

पालत समीको मैं पियूषप प्यायके।
मरिष पै चामडू तो चरननकी दासी होइ,
उन्हें नित सेवे यह सोचो चित लायके ॥
सिद्ध करे पाप परितोषके न राह चलो,
जीवन बितायो नित्य घास तुन लायके।
मोहि कहवैं सो तो नाहीं कळये,
कहो कैसे कळये कोऊ मोहि कळयायके ॥

तुम हमारी बातकी अवहेलना करोगे तो मैं बालके पेड़पर चढ़कर कूद पड़ूंगा। तब आप क्यों ऐसी बातें करते हैं? इसलिए समीक्षा करनेसे ज्ञात होता है कि भगवान् कृष्णका बताया मार्ग भ्रष्टकर है। प्रतिशोध बुरी चीज है और नीच मनुष्योंके लिए स्वाभाविक भी है। उससे जगत्को बचाया नहीं जा सकता। उच्च-श्रेणीके व्यक्ति कभी प्रतिशोधकी भावनाको स्थान नहीं दे सकते, पर कर्तव्यको भुला भी नहीं सकते। कर्म करना ही होगा चाहे 'लोकसंग्रहहेतवे' ही क्यों न हो सुधिको उच्छिन्न न होने देना और अत्याचारको प्रभय न देना तत्कालीन व्यक्तियोंका धर्म होता है चाहे वह अपने भाई द्वारा किया जाता हो या सले द्वारा कलेजपर तबा बांधकर भी निष्काम भाव-

से सदाचार सम्मत गरजपान करना ही होता है। इसी प्रश्नको विचारनेके लिए इस लेखका प्रयास है कि विद्वज्जन गवेषण करके मार्ग निर्धारित करें।

इस लेखके संबंधमें अन्तिम निवेदन यह है कि इसका उद्देश्य प्रतिशोधके लिए उमाड़ना नहीं, प्रत्यत इस संबंधमें विद्वानोंको विचार करनेके लिए आमन्त्रित करना है। लेखक प्रतिशोधका पक्षपाती नहीं, पर संस्कार प्रवृत्त होते हैं और अज्ञातरूपमें अपनी छाया व्यक्तिपर छोड़े बिना नहीं रहते इसलिए यदि इसमें कहीं वैसी झलक हो तो वह उसकी नहीं, उसके उमाज और संस्कारकी है। इसमें हल्कीसे हल्की बात, और मोटेसे मोटे सिद्धांतोंपर विचार किया गया है। यदि विद्वान् इस विषयपर अधिक क्लिष्ट तो अच्छा हो।

कमला मिल्स लिमिटेड

परेल, बम्बई

(स्थापित १९३४)

सूत और रेसम

की

कताई और बुनार

भोती, चेक, चादरें, साड़ी, घटिया (कमीज) कोथिंग, कनवत, कांग जाम, और ब्रिज आदिके लिए प्रसिद्ध।

हेड आफिस:—१४५ मुकाराम बाबू स्ट्रीट, कलकत्ता।

बम्बई आफिस:—किलाचन्द देवचन्द बिरिडज,

४४-४७ अपोको स्ट्रीट, बम्बई।



कार्तिक शुक्ल १० रविवार २००४

सन्मार्ग

७

गोवधनिषेध क्यों ?

(पृष्ठ ५, काळम ६ से आगे)

इस देशकी प्रजा गुम्हारे कृतज्ञताके पाशमें बँधकर तुम्हारी कृपापात्र बन सकेगी।

बहादुरशाहके मुल्लाओंकी राय
अकबरके लड़के बहांगीरने पिताके फरमानको सर्वत्र जारी रखा। अकबरने तो जो दिन सप्ताहमें पशु-वधके लिए निषेध कर दिये थे, उनमें भी और अधिक दिन जहाँगीरने जोड़ दिये। नेपालकी तरह उस समय दिल्लीमें भी एकादशीके दिन हूँहनेपर भी मांस नहीं मिलता था। फ्राँच यात्री डा० वनियर्ट लिखते हैं कि बहांगीरने अपने विस्तृत राज्यमें गोवध बन्द कर दिया था। जहाँगीरके परचाउ उसके पुत्र शाह-बहादुरके समयमें भी यह प्रथा जारी रही। औरंगजेबके राज्यकालमें भी इसकी प्रथा उठानेका कहीं उल्लेख नहीं मिलता है बहादुरशाहके समय महाराजाधिराज माधवराव सिंधिया बहादुरने गोवध बन्द करनेकी प्रार्थना की थी। बादशाह उनको बहुत मानते थे। बादशाहने मुल्लाओंको एकत्रित किया और उन लोगोंसे राय ली कि इस्लाम धर्मके आचार्य लोग बताते कि इस्लामधर्ममें गायके बारेमें हदीस शरीफमें क्या है? उस समय बादशाहके पीर मौलवी कुदुसुद्दीन साहिबने बताया कि हदीस शरीफमें चार चीजें वर्जित हैं:-

(१) काते कुल सजर-बढ़, पीपल आदि हर एकको काटने-घालना। (२) घाप डक वसर-मनुष्यको बेचनेवाला। (३) जाँघड़े उल्ल वसर-गायको मारनेवाला। (४) तथा किसीकी खोके साथ कुकर्म करनेवाला। ये चारों पाप करनेवाले कभी नहीं बचसे जायेंगे।

कुरानकी आयत और पूर्वोक्त हदीस भी इस विषयमें मौजूद हो इससे साबित हुआ कि खुदातालाके विशेष रूपसे गोवध वर्जित की है। इस फलके नीचे

और धार्मिक छिटांतोंकी रक्षाकी गारंटी देना विधाननिर्मात्री सभाका सर्वप्रथम कर्तव्य है। जब यह गारंटी न होगी, न स्वराज्यकी स्थापना हो सकेगी और न वह कायम ही रहेगा।

अतः विधानमें गोवधनिषेधका नियम रखनेके बावत लाखों पत्र तथा तार देशकी सार्वजनिक संस्थाओं और लोगोंकी ओरसे विधानपरिषद्के प्रधान डा० राजेन्द्रप्रसादके पास पहुँचने चाहिये। अपने-अपने क्षेत्रके विधान-परिषद्के सदस्योंको भी विधानपरिषद्में गोवधनिषेधकी तजवीज रखनेके लिए लिखें।

गोवध बन्द करानेका यह उपयुक्त समय है। यदि इस समय आलस्य, बेपरवाही या गलतफहमीके कारण इधर ध्यान न दिया गया तो गोवधका ही नहीं हमारा भी अस्त और विनाश होगा। न दुश्-भी मिलेगा, न अन्न ही सम्यक्ता, संस्कृति और भावनाका तो टिकाना ही नहीं रहेगा।

कविसे !

आज कवि ! रण-गान गा दे। क्षीण दुर्बल वृण तनमें नवल बल-संचार ला दे। अब न प्रियके गीत गा दे। मधुर भावोंको सुला दे।

कल्पनाके स्वप्न-जगमें ज्योति-जीवनकी जगा दे। काँप जायें गिर-गगन भी डोक जायें शेष-कन भी शक्ति सागरके उदरमें एक हलचल सा मचा दे। कर अरिद्व संमट जाये काल भी सुन टिग न आये आज उपाकी अक्षयमा-



आसमें नोचते हुए बिहारके आनकारी मन्त्री जग लाल चौधरीने फरमाया है कि 'हिंदू शब्द किसी धर्मग्रन्थमें नहीं, जो हिंदुधर्मके नामपर चिह्नित है वे भूल करते हैं।' का चौधरी। कवन कवन गरम्य पटे हो। आनकारी-विभागका असर तो नहीं है ?

युक्तप्रान्तमें कुछ और मन्त्री नियुक्त होंगे। हमारी तो शुभसम्मति है कि इस प्रान्तके प्रत्येक कांग्रेसीको मन्त्री बनाकर इस प्रान्तका नाम ही 'मन्त्री-प्रांत' रख दिया जाय।

वह जमाना रुद गया जब विलायती गवर्नर केवल तीन या चार सलाहकारों (मंत्रियों) की सहायतासे काम सम्भालता था। तभी तो उस समय अन्न-बज्जके मिलनेमें बाधा भी थी। अब इतने मन्त्री भये हैं इन्हींसे जनता डँटकर सिय ही कचौड़ी छान रही है। दो-एक मंत्री और बढ़ जायें तो सबेरे-संज्ञा मालूमआ चामनेका भी चौचक प्रबन्ध हो जायगा।

मिस्टर कृपालानीने कांग्रेसकी अध्यक्षतासे त्यागपत्र देते हुए बहुत ही कष्ट विचार किया है। आपने कहा कि मन्त्री लोग कांग्रेस अध्यक्षकी रायसे कोई काम ही नहीं करते। सरकारें सर्वतन्त्र-स्वतन्त्र बन बैठी हैं। हाय हाय। कांग्रेस अध्यक्षकी भी-सी प्रतिका गवर्नर बनाकर गदगदायमान क्यों नहीं करते। बम्बईकी गवर्नरी न जाने पाये। लयाक रक्षना दादा।

यह मत समझियेगा कि भारतमाता और हिंदुस्थानके बदले आपका देश केवल 'हिंदिया' बनकर ही रह गया। इसकी तरक्की की गयी है। अब इसे 'ब्रिटिश इंडिया' कहा जाता है।

कानून-मन्त्री श्रीवृणुलम् चेट्टी द्वारा 'ब्रिटिश इंडिया' शब्दके प्रयोगपर जब कुछ सदस्योंने आपत्ति की तो डाक्टर अग्नेडकर बड़े नाराज हुए। उन्होंने फरमाया कि ब्रिटिश इंडियासे भारतके सब प्रांतोंका बोध होता है। समझे मझ्या विरोधियों। वणुलम् स्वका यह अग्नेड-करी वार्तिक। अब आप केवल इंडियन ही नहीं 'ब्रिटिश इंडियन' हैं।

ब्रिटिश रेडक्रास सोसाइटीने पाकिस्तानके शरणार्थियोंकी सहायताके लिए एक लाख पौण्ड दिया है। 'ब्रिटिश इंडिया'को कितने पौण्ड मिले? पाकिस्तानी हिन्दुओंको भी कुछ मिलेगा या बुराकि विश्वबन्धु मुसलमान ही सब चन्दा चाँद जायेंगे।

सिन्धके शरणार्थियोंकी महती सभामें भाषण करते हुए कांग्रेसके अध्यक्ष आचार्य कृपालानी, बिहारके गवर्नर डाक्टर सुवरामदास दोस्ताराम आदिने कहा कि अल्पसंख्यकोंका पाकिस्तानमें सम्मान रहना असम्भव हो गया है। उन्हें नये नेगरोंमें बसानेकी योजनापर विचार हो रहा है। बाह। ये दोनों विश्वबन्धु श्री-काशजीसे नहीं मिले क्या? वे तो कुछ बरा ही राग अलाप रहे हैं।

भारतमें गोरक्षा क्यों नहीं ?

—अख्येय बाबा राघवदास 'गोरक्षपुर'

सभी जानते हैं कि सारे संसारमें चीन देशका किसान सबसे सफल किसान है। वह गोबर, गोमूत्र मनुष्य का मलमूत्र आदिके खादका ठीक-ठीक उपयोग कर अपने खेतके फस को बराबर कायम रखता है। अमेरिका ऐसे नये देशके विशेष खेतिहर भी उस देशके किसानोंको

बच भी नहीं होता। इससे हम अनुभव कर सकेगे कि वहाँ गौकी कितनी बड़ी इज्जत है। और वे उसकी रक्षा कैसे करते हैं।

चीनकी तरह भारत भी खेती प्रधान देश है। इसलिये हमें भी खेतीमें सबसे अधिक आवश्यक गोवधकी रक्षाका भार अपने धरपर लेना ही होगा।

इसलिए विधानमें अगर ऐसी व्यवस्थाकी जाय कि गोरक्षा शासन तन्त्रका एक जरूरी अंग है, तो हमारे राष्ट्र, निर्माण कार्यमें बड़ी सहायता मिलेगी।

आज अमेरिकाके मि० मार्शकने जो योजना बनाई है उनमें यूरोपियन राष्ट्रकी कृष्यक्षति बढानेकी बातें होती हैं। वह कृष्यक्षति हमारे देशमें गोरक्षासे ही बढेगी ऐसा किसान अनुभव करता है।

तो क्या ऐसा अक्षयजन विधान परिषद् हमें देगा ?

धर्मयुद्धका २११ वां दिवस
भनाचार फैला विपुल,
धर्ममार्ग भवदर।
दानवता दमनार्थ पद,
छिड़ा धर्मका युद्ध ॥

देखने गये और उसके सम्बन्धमें अपने अनुभव लिखकर चीनी किसानकी तारीफ की है। उस चीन देशमें अच्छो हो नहीं बुरा, अपाहिज तथा कमजोर गावोंका

भूल सुधार

ता० २१ नवम्बर ४७ के अंकमें पृष्ठ ५, काळम ५ में प्रकाशित अदालती नोटिस में 'बावत खोलने वाला मकान नं० C. K. २०१२४ के स्थानपर २०१२५ छप गया है कृपया सुधार लें।

व्यवस्थापक

मकान विकाऊ

काशीमें गोदोबिया चौधुरानीके निकट पक्का बंगला मकान विकाऊ है।

मशानम नं० १

(बच्चोंके सुखको रोगकी परीक्षित दवा)
तीन दिनमें शत प्रतिशत लाभ।
मूल्य १) डाक महसूल अलग।

संचालक ब्राह्मीभण्डार

१४११२ टेढ़ानाम, बनारस।

१००) इनाम

सिद्ध वशीकरण यंत्रके धारण करनेमें कठिनसे कठिन कार्य सिद्ध होता है आप जित चाहते हैं चाहे वह परवर दिवस क्यों न हो, आपके पास चला आयेगा। इसके माग्यादव, नोकरी, पदोन्नति, प्रसन्नता



शनिवार, २१ नवम्बर

हिंदू जातिपर घोर संकट घुरे कारतूस आदि बरामद

धर्मसंघ सभा में भाषण

कल गोपालजीके पुण्य अवसरपर नगरमें धर्मसंघ सभा प्रसिद्ध सनातनी नेता महोदयोंपाय्य भीमिरीवर धर्मा चतुर्वेदीके सभापतित्वमें मीरघाटस्थित धर्मसंघ महाविद्यालयमें आरम्भ हुआ। प्रातः गो-पुजेस्वर और अपराह्नमें सभा हुई जिसमें सर्वभी गिरिधर धर्मा चतुर्वेदी, महादेव शास्त्री, सूर्यनाथ पाण्डेय, राज-नारायण शास्त्री, विजयानन्द त्रिपाठी, स्वामी आशुदेवाश्रम और श्रीनाथजीके भाषण हुए। वक्ताओंने बतलाया—यह स्थिति विशेषजनक है कि भारत जैसे धर्मप्राण देशमें गोवध-बन्दी और धर्म-मर्यादा रक्षण जैसी सात्विक मार्गोंपर पू य स्वामी श्रीकृष्णजी जैसा भीतराग महात्मा भी जेठमें बन्द कर रखा गया है। सदाकी भांति आज हम उसके पवित्र उपदेशोंको न सुन सकेगे। मुसलिमराज्य तो नेताओंने स्वयं कायम कर डाका पर उसपर हिंदूराज्यको असम्भव बनानेके लिए वे गला फाड़ रहे हैं। हिंदूराज्य अपने प्राचीन आदर्शके अनुसार विवशता का विधान कर सकता है। हिंदू जाति चतुर्विध महान् संकटमें बिर गयी है। दक्षिणके प्रायः सभी तीर्थ भ्रष्ट हो चुके हैं। जबतक धार्मिक जनता इस इदृशावे डडनेको तैयार नहीं होती कि हम प्राण देकर अपनी मर्यादा बचायेंगे तबतक वर्तमान संकटसे पार न मिलेगा।

आजका यह पूर्ण कर्तव्य
शरणार्थियोंकी सहायता

पाकिस्तान जानेवाली ट्रेनसे

कल पुनः स्थानीय खुफिया विभागके अधिकारियोंने मुगल-सराय स्टेशनपर पाकिस्तान जाने-वाली मालगाड़ीके एक डिब्बेकी तलाशी ली। जिसमें २५ बड़े तथा २५ छोटे घुरे, ढेरकी ढेर कारतूस तथा रेलवेके बहुतसे यन्त्र और औजार बरामद हुए। उरी गाड़ीके चार और डिब्बोंकी तलाशी आज होनेवाली है। इन डिब्बोंमें पाकिस्तान गये रेलवे कर्मचारियोंका सामान था।

सड़क नहीं खोदी जायगी

ताजिया निकलनेके लिए

बाइराबादका जो ताजिया गत वर्ष नखास-मुहल्लेमें पीपलके पेड़से अड़ गया था और जिसके निकलनेके लिए जमीन खोदनी पड़ी थी उस सम्बन्धमें ताजिया-बाकों और पुलिस अधिकारियोंसे बातचीत चल रही थी। कहा जाता है कि ताजिया बाकोंने कल मजिस्ट्रेटको लिखकर दिया है कि पीपलकी जाल बल्बेसे कुल ऊपर उठा दी जाय। सड़क खोदनेकी आवश्यकता नहीं। ताजिया यदि कन्पीर रखकर न निकल सकेगा तो ताजियाबाके उसे कंधेसे नीचे हाथपर लेकर निकाल के जायेंगे। डाल काटने या सड़क खोदने-की समस्या नहीं उपस्थित की जायगी।

श्रीत्यागीका पुलिस दल

२४ नवम्बरको काशीमें भरती श्रीत्यागीके पुलिस दलमें भरती होने के लिए बनारससे १०० स्व सेवकोंका नाम मांगा गया है। उनका चुनाव २४

३ दिसम्बरको बैठक

युक्तप्रांतके शिक्षाशास्त्रियोंकी

लखनऊ, २१ नवम्बर। प्रांतीय असेम्बलीके कांग्रेसदली सदस्योंकी आगामी २७ नवम्बरको बैठक होगी और विधान सभेसमय डॉक्टर कैलासनाथ काटजूके रिक्तस्थानके लिए कांग्रेस उम्मेदवारका नाम घोषित किया जायगा।

प्रांतीय सरकार पाकिस्तानसे आये हुए शरणार्थियोंके लिए काम देनेकी बात सोच रही है। कहा जाता है कि अबतक लगभग ३ लाख शरणार्थी प्रांतमें आये हैं। सरकारकी ओरसे केवल २४ हजार शरणार्थियोंको भोजन दिया जाता है। ५ हजार शरणार्थियोंको जनताकी ओरसे भोजन दिया जाता है और शेष मित्रों और सम्बन्धियोंके आश्रित हैं।

प्रयाग। कतिपय शिक्षण संस्थाओंके अध्यक्षोंने कल शिक्षामन्त्री श्रीसम्पूर्णानन्दसे मुलाकात की। शिक्षामन्त्रीने बताया कि आगामी ३ दिसम्बरको शिक्षाशास्त्रियों की बैठक बुलाई जा रही है जिसमें साजेंट-योजना और 'नरेन्द्र देव-योजना' पर विस्तृत रूपसे विचार किया जायगा।

सनातनी पण्डितका स्वर्गवास

जगतगंजके पण्डित रामाबतार पाण्डेय, वकीलके पिता पण्डित दुर्गा प्रसाद पाण्डेयका कल सवेरे स्वर्गवास हो गया। आप यहांके कलक्टरके पेशकार थे। सनातन-धर्मके आप प्रसिद्ध प्रचारक थे। आपके अनुज श्रीधुमावती प्रसाद पाण्डेय सनातनधर्मके अच्छे पण्डित थे।

काशीके लिए मिर्जापुरसे बिजली

मिर्जापुर जिलेके रावटसंगंजमें पानीसे विद्युत् पैदा करनेकी मशीन बैडानेकी योजना सरकार द्वारा जारी की गयी है। इस स्थानसे बनारस, गोरखपुर और मिर्जापुरके लिए बिजलीकी शक्तिदीजायगी। प्रांतीय सरकारके आदेशसे रीजनल उद्योग इंस्पेक्टर बनारसमें खर्च होनेवाली शक्ति का आकड़ा तैयार कर रहे हैं। कहा जाता है कि उसका विवरण २५

श्रीकरिपय्यानियुक्तहुए

पूर्वकमानके प्रधानसेनापति

नयी दिल्ली, २१ नवम्बर। पूर्वी कमानके सेनापति लेफ्टिनेण्ट सर फ्रांसिस्कोने हस्तीफा दे दिया है। आपके स्थानपर भारतीय सेनाके मेजर जनरल के.एम. करियप्पा नियुक्त किये गये हैं। मेजर जनरल प्रथम भारतीय हैं जो एक सेनाके कमाण्डर बनाये गये हैं। श्रीनेहरूने अंग्रेज फौजी व्यक्तियोंके लिए संदेश देते हुए कहा है कि सेनाका यथाशीघ्र राष्ट्रीयकरण हमारा मुख्य ध्येय है। अतः हम यह चाहते हैं कि जो अंग्रेज भारत सेनामें कार्य करना चाहें वे मैत्रीपूर्ण ढंगसे कार्य करें। उन्हें हमारी और हमारी सरकारकी पूर्ण सहानुभूति प्राप्त होगी।

पाकिस्तान जानेवाले मुसलमान अफसरोंको युक्तप्रांतसे ले जाने और आर्थिक सहायता देनेके लिए तीन पाकिस्तानी अंग्रेज अफसर लखनऊ आये हैं। वे उन मुसलमानोंकी सहायता करनेके लिए प्रांतका दौरा कर रहे हैं।

आगरालीगका विघटन

आगरा, २१ नवम्बर। आगरा नगर मुसलिम लीग कौंसिलने एक प्रस्ताव स्वीकार कर लीगका विघटन कर दिया। प्रस्तावमें कहा गया था कि भारतीय संघसे पूषक निर्वाचन न होगा अतः साम्प्रदायिक आधार पर इस संस्थाकी कोई आवश्यकता नहीं है।

पुलिस द्वारा लाठी वर्षा

कलकत्ता, २१ दिसम्बर। आज अपराह्नमें युवकोंके एक झुंडको भङ्ग करनेके लिए पुलिसने आँसू गैसका प्रयोग किया। ६ व्यक्ति जिसमें एक लड़की भी है अस्पतालमें भर्ती किये गये। २ साक पूर्व पुलिसकी गोलीसे हत २ छात्रोंके सम्मानमें यह झुंड निकासी गया था। अन्तमें असेम्बलीके मैदानमें जुड़सवालोंने एक सभा कर पुलिस द्वारा गैस प्रयोगकी आँचकी मांग की। असेम्बलीके अध्यक्षने आँचका आशय दिला है। पुलिस

जाति-धर्मविहीन शिक्षा

स्कूलोंमें देव-चित्र न लगे

त्रिगेडियर पोनप्पाकी भारतभक्ति

प्रयाग-२१ नवम्बर। कल पार्लमेंटी सेक्रेटरी श्रीजगनप्रसाद रावतकी महिला व्यायामशालाकी कन्या छात्राओंने सभा मी दी। पदा, छुरा तथा लाठी चलातेका प्रदर्शन भी हुआ। प्रयाग क्षेत्रके कमाण्डर त्रिगेडियर पोनप्पाने इस अवसरपर कहा कि प्रांतीय रक्षादल दक्षगत रूपसे संघटित न होना चाहिये, बल्कि योग्य व्यक्ति भी अधिकारी बनाये जायें। विर्पा बंगाली ही देशभक्ति के ठेकेदार नहीं। जो लोग कांग्रेसी पोशाक नहीं पहनते वे भी योग्य समझे जानेपर रक्षादलमें किये जायें। श्रीपोनप्पा ने अन्त में कहा कि भारतभक्ति जागरित करनेके लिए पाठशालाओंमें देवता या गांधीजीके चित्र न लगाये जायें अपितु भारतके मानचित्र लगाये जायें, जिसपर यह सिद्धान्त-वाक्य लिखा होना चाहिये—'जबतक हम जीवित हैं, भारत मृत न होगा।' छात्रोंमें ऐसी भावना भरनी चाहिये जिससे उनमें जाति या धर्मकी भावना उत्पन्न न हो सके।

—कानपुर। यहांकी कंट्रोल विरोधी समितिने सब पदार्थोंपरसे कंट्रोल उठा देनेके लिए ५० हजार हस्ताक्षर युक्त एक प्रतिपत्र गांधीजीके पास भेजा है।

—कानपुर। यहांकी छात्र कांग्रेसने २६ नवम्बरको काश्मीर जूतागड़ बिजयोरतव मनानेका निश्चय किया है।

(पृष्ठ १ कालम ६ से आगे)

कि यह शब्द बेधमें नहीं है। यूनानी 'सिंधु' से 'हिन्दू' कहने लगे। मैं केवल वैदिक धर्म और आर्यावर्तका समर्थक न होकर इस्लाम, ईसाई, पारसी, यहूदी, आदि धर्मोंके प्रति सहनशील हिन्दू धर्मका अनुयायी हूँ। ऐसा ही हिन्दू धर्म जीवित रह सकता है। इसके बाद गांधीजीने कहा कि मुझे सूचना मिली है कि दिल्लीके दंगेमें १३० मसजिदें क्षति-

पञ्चाङ्ग

श्रीशुभ संवत् २००४, इक्षिणावन, हेमन्तशुद्ध, कातिक शुक्ल एकादशी सोमवार ४० २६।२५, पू० भा० नवम ४० १।४५, सिद्धि योग ४० ४९।१२ भद्रा करण ४० २६।२५ तता वव करण ४० ५६।१२ ता० २४ नवम्बर ४७ ई०, दिवसी २० सुहर्षम्, कला ८ मार्गशीर्ष, कलसी २६, सूर्योदय ६० ६।४० चर्वास्त ६० ५।२० चन्द्रास्त ६० ३।२१।

प्रवोचिनी एकादशी व्रत (सब सां)

अनेक व्यक्ति हताहत

एटा, २१ नवम्बर। यहां अन्वीरगंज तहसीलके दो गांवोंमें साम्प्रदायिक उपद्रव होनेके कारण ४१ व्यक्ति मारे गये जिला-धीश और पुलिस कप्तान वृत्त पटना स्थलपर पहुंचे और स्थिति को काबू में कर लिया।

सोने व चाँदीके जेवर की

प्रमादिक दुकान बाँके बिहारीलाल भीनारायण रानीकुँआ बनारस।

आजार भाव

ताजिया सांने-बाँसीका बाजार

काशी, शनिवार, २-नवे दिन
पावा कबारीदार १००) भर १५७)
बाँसी मिट्टीवारी १११ १००) १६२)
बाँसी बाबा १६१(=)
शोना बाइमख १०७)
साटका प्रेसरी १०६(=)
शोना सेवानी की बरी १०५)
मिनी राबा ६९(=)

पन्डेबाबाज हाथोहरदास करीफएव

राधारराधा, बनारस।

काशीका चाँदीका बाजार

हिन्दी का भविष्य

[illegible]

आइतबार कुर्या

पाकिस्तान के भोजन मंत्री श्री ग़ज़नफ़र अली ख़ां ने राक़तपिंडी में भाषण देते हुए ज़ल्लख़ीग़ला यह स्वीकार किया है कि भारत में महाराष्ट्रा शास्त्री तुल्य संश्लिष्ट जवा

स्मट्स-सरकार द्वारा संयुक्त राष्ट्र
संघ के प्रस्ताव की उपेक्षा
भारत सरकार ने संयुक्त राष्ट्र संघ को अपनी
रिपोर्ट भेजी

[illegible]

सम्पादक के नाम पत्र

अनर्थ शरणार्थी बन्धु

[illegible]

उन छोटो-छोटो अनाथ बालक को
मालिकता की वसा देकर उसे प्रेम
माल की ओर धुपिपन्न करने हैं जिन्हें प्रेम
पिता, भारी-भरिण मादिर सत्री साम्प्रदाय
उत्पाद के विचार ही होने हैं और निम
परक और जीवन्त नैसा का खेन व
केवल परमात्मा ही हैं। धन-व्ययति
किन्तु हाथ-पैर के सहो-ललातन स्त्री-मु
सर्वाश्रयी तो किसी प्रकार अप
जीविक के साधन बाना ही ठेने
अनाथ बच्चों का भविष्य क्या होगा
प्रेम प्रेता प्रका है यो प्रत्येक हृदय र
बाले बलित होनी डंढापोले किए वि
नहीं रह सकता।

[illegible]

अपनी उन्नत का जो निवृत्त अनायास
था, मुह-मंथनाधी बनता के निम्न-
सुविधा-सुविधा का। तब जब दर्शनों की
तक देख कर आसन्न के और निम्न
रूप के अपने अपने चर्चों को दाखल
पाते थे। उनके दर्शनों के अन्तर्गत के
निम्न का शासन अब भी होना चाहिए
है। तब तक-चौड़ा का दम और होना
लागत का समय-दम देर के अपने
कारण दर्शनाधी बनता को बढ़ा-तक
हूँ। निम्न के ही लोग चर्चों अपने
दर्शनों के साथ अन्त कर निम्न दम देवे
कर नीत रूप और निम्न को दाखल
तक देख भी द अन्तर्गत चौड़ी
के कारण नीत तक चौड़ी-
देख पाए ।

[illegible]

—यमकिसोर मालवीय

मल्लेरिया, हज़रतगढ़ की राजकुमारी

बाट तेली वाला

एयूमिन्त चर

सोलिमेंत एज़नल - पी. एम. हज़रत - हज़रतगढ़

[illegible][illegible][illegible]

मे मगर भी बाबू कुछ हल्ला हो बाबू
 संधारणियों के निम्न बुद्धिवादी बन
 संधारणों के निम्न बुद्धिवादी बन
 भी मेरे इस चुनाव पर ध्यान दे
 हीं और भी बाबू बनने की
 संधारणियों के निम्न बुद्धिवादी बन
 भी मेरे इस चुनाव पर ध्यान दे
 हीं और भी बाबू बनने की
 संधारणियों के निम्न बुद्धिवादी बन
 भी मेरे इस चुनाव पर ध्यान दे
 हीं और भी बाबू बनने की

—प्रधान मंत्री

मैंने रामदत्तों का समय
 (श्रीमन्त रामदत्त की यादों का
 खोजें। इन्होंने सचमुचे हीं इस
 एक सन्देश के प्रसारण में सहायक
 हीं और बाबू बनने धार्मिक कार्यों
 सचमुचे में कोई श्रमदान केम इस-
 हीं सचमुचे हीं बाबू बनने की
 संधारणियों के निम्न बुद्धिवादी बन
 भी मेरे इस चुनाव पर ध्यान दे
 हीं और भी बाबू बनने की
 संधारणियों के निम्न बुद्धिवादी बन
 भी मेरे इस चुनाव पर ध्यान दे
 हीं और भी बाबू बनने की

मान लौटाने
 आश्वासन पर
 वक्तव्य

के तत्पश्चात् ४० संधारण
 संधारण के बीच मेरे
 बाबू हुए निम्न-संधारणों के जो
 संधारणों के निम्न बुद्धिवादी बन
 भी मेरे इस चुनाव पर ध्यान दे
 हीं और भी बाबू बनने की
 संधारणियों के निम्न बुद्धिवादी बन
 भी मेरे इस चुनाव पर ध्यान दे
 हीं और भी बाबू बनने की

मैंने रामदत्तों का समय
 (श्रीमन्त रामदत्त की यादों का
 खोजें। इन्होंने सचमुचे हीं इस
 एक सन्देश के प्रसारण में सहायक
 हीं और बाबू बनने धार्मिक कार्यों
 सचमुचे में कोई श्रमदान केम इस-
 हीं सचमुचे हीं बाबू बनने की
 संधारणियों के निम्न बुद्धिवादी बन
 भी मेरे इस चुनाव पर ध्यान दे
 हीं और भी बाबू बनने की
 संधारणियों के निम्न बुद्धिवादी बन
 भी मेरे इस चुनाव पर ध्यान दे
 हीं और भी बाबू बनने की

मान लौटाने
 आश्वासन पर
 वक्तव्य

के तत्पश्चात् ४० संधारण
 संधारण के बीच मेरे
 बाबू हुए निम्न-संधारणों के जो
 संधारणों के निम्न बुद्धिवादी बन
 भी मेरे इस चुनाव पर ध्यान दे
 हीं और भी बाबू बनने की
 संधारणियों के निम्न बुद्धिवादी बन
 भी मेरे इस चुनाव पर ध्यान दे
 हीं और भी बाबू बनने की

यहाँ मेलारिया का निदान हो ।

झड़ी वाले ज्वर को
तुरन्त ही
संभालने वाला

“मंडु”

मेलरिया मिक्स्चर

शरीरभर की कड़ाहट करने
और उल्टे
समानक हमले की हवा में
बढ़ एक अशुभम जोषित है ।

मण्डु मेलरिया मिक्स्चर :—रोजम, जीरास
और मिर्चारी ज्वर में एवं बरसात की सुविधि में
अकरोर है । अथर्व हो मज्जायुक्त कर लायी करे ।

मण्डु फार्मास्यूटिकल वर्कस लि० बंबई १४
रस्ताइवाट्टा एटो० :—केरत-चंद्रकला कली० बट्टा जालमयवत ।

१९२९ बी०-११-३-४०



**क्या मैं किसी प्रकार अपने
रोग को, जिस पर यह राष्ट्रीय
पताका फहरा रहा है।
आर्थिक स्थिति को सुधारने
और इसको उन्नतिशील
बनाने में सहायक हो सकता हूँ ?**

हां—अपन सहायक बनस हो सकते हैं !

यस बचाव—

प्रत्येक व्यक्ति को कुछ भी मन बंधन कर लेना है, वह केवल उसके
चिन्ते ही सामयिक नहीं, बल उसके द्वारा वह अपने देश के समस्त निवास
व अवधि में सहायक होता है । यदि नाम अर्थिक विचार करें
तो मन बंधन करने का सर से प्रदान और सुख सामय
मेथनब सेविंग्स सर्टिफिकेट्स को ही समझे । यथांश वह
अपनी ही वस्त्रर द्वारा प्रदान हुए सर्टिफिकेट्स हैं और अपने स्वयं के
रूप व काम भी जानकर होता है ।

आपको यह

नेशनल सेविंग्स सर्टिफिकेट्स

कार, द्वारा नियुक्त, अधिकार प्राप्त एजेंटों, आकाशनां
र सेविंग्स ब्यूरो से प्राप्त हो सकते हैं ।

भारत, गुरुवार, २३ अक्टूबर सन १९४० ई०

निजाम सरकार और भारत
सरकार के बीच समझौते
की आशा

नवी शक्ती, ६० अक्टूबर। निम्न
वर्णनात अर्थ आता सरकारने प्रतिनिधित्व
के बीच वामने आता जीवने के मध्ये न वाम
मार्गी स्थिति संघर्ष में द्वय प्रकार समायी
मार्गी है कि स्थिति अब कम अनुपुन, जो एक
पुन मती दिया गया है, जो कुछ या रहा है।
आपने पूरे निश्चित कार्यक्रम के विपरीत
विषय के प्रतिनिधित्व एक हीतराफ समाय
मार्गी हो रहे हैं। वे आता लक्ष्य भावनेमें
मार्गी हो। जो मालूम वे स्थिति में हैं। वे कम
लक्ष्य भावनेमें न केवल विषयों या रहा हैं।
निष्कर्ष का प्रतिनिधित्व एक प्रकार की
हीतराफ समाय कर रहा है और मान्यकर
कम कम पुन स्थिति संघर्ष की आता
की जानती है।

अस्य दृष्ट्या हि एक भारत
सुधारक मोर मिश्रा भारतीय के बीच
सम्बन्धों के लिए एक शक्तिमान मार्गदर्शक
लेखक बने बिना गया है, जिसके द्वारा यों
सुधारकों के बीच (सिद्धांत): १५-अभ्युदय
के लिए एक संक्षेप बना रहा। इस प्रस्तावना
सम्बन्धी एक समुचित ही सहीय सुविधों का
सुधारक बने बिना यों ही अभ्युदयक
के अभ्युदयक बनने के लिए एक प्रसिद्धि का
सम्बन्ध बना है कि (मिश्रा)। इस सुविधों
ही के लिए सहीय बना रहा है किम्वला
विचार यों बन जाता है।

कलकत्ते में तलाशियाँ

संविधान २०अनुसार भारत सरकार के
नृत्य विभाग की स्थापना पुर्विले में कल कल
समय के ही नहीं समित १०० करोड़ और
रुपयों की समविधा थी।

कहा जाता है कि ईश्वर प्रविष्ट रहकर स
बहुत अधिक परिमाण में मिलावट का भी
दिखा गया था और जहाँ भी ईश्वर ने लोहा
जड़ बनाया दिखाया गया था, वही सम्पूर्ण

जिलों के समाचार

मेरठ

देहरादून स्टेशन पर शरणा-
र्थियों को कोढ़े लगाये गये

[illegible]

वस्ती।

श्रद्धार्थियों के लिए सहायता
की अपील

[illegible]

श्रद्धार्थियों का शिकार खेतने
वाले नि० टीडेंस

विश्व प्रसार के बादारत में पाप कमजोर
वाले विनोद टोहल जो अब विद्यमान
निम्न हस्तारत है, २३ सितम्बर १९४०
को मरणाधिक का विचार लेने के निमित्त
आइल विनोद बहलान्दुस मनीषी
में ललाई गई है जो कि विद्यमान के विनोद
विनोद सहायिकों की ओर के चारल सहायिक
के प्रचलन मनीषी में गैरल, मनीषी-
मनीषी मनीषी मनीषी मनीषी के प्रचलन मनीषी
मनीषी के मनीषी मनीषी मनीषी मनीषी मनीषी

पाकिस्तानी सैनिकों द्वारा
लूटभ्राट

[illegible]

मुंगेर में शरणा के लिये
तलाशियां

[illegible]

पिस्तौल लेकर भागने वाला
बालक गिरफ्तार.

पटना, २१ अक्टूबर। पटना निवासी
मार्वाडी में रहिये हुए मार्वाडी तथा मीरवाडी का
पता नालाह के लिये तलाशनी जा
है। ज्ञाना गयी में एक मुजबाना
में एक निवासी तथा एक बहक बर
होई। आज इसी दिन जय तलाशनी
रहती थी। कुछ देरके को लोको लोको
भास्ते हुए देखा गया। उसे पकड़ कर निहा
रि किया गया।

**बिहार के प्रेषान सत्री की
हीरक जयन्ती**

पटना, २१ अक्टूबर। बिहार के पक्ष
मंथी भीषण सिन्धु की हीरक जयन्ती
पठनी मारम कालेन के हलि में पठनी
के मारमिनी ने मनाई।

मारमिनी में बिहार के पक्षनी की अयन
दास दीनर राम ने मारमिनी का आय

सम्राट के प्रधान मन्त्री दिल्ली
रवाना

मार्च, २० अक्टूबर। काँग्रेस के प्रथम
पक्षी राजस्थानी रीतिरूप ही नहीं और
साक में भी के साथ विचार के अन्तर्गत के समि-
रचना हुए हैं। ये पक्षी मांसी के जन्म के समि-
रचना के अन्तर्गत प्रथा रीतिरूप वाले विचार
पर विचार हुए हैं। २१ अक्टूबर तक विचार
महाल लौट आये।

डा० सुकर्णी ने सम्मेलन बुलाये

उद्योगधंधों के मंत्रियों का
नव दिल्ली, २० अक्टूबर। भारत सरकार
के उद्योगधंधों के मंत्री मानीरुल्लाह खान
प्रथम मन्त्री ने विभिन्न प्रांतों के उद्योग-
धंधों के मंत्रियों का सम्मेलन, विचार सम्मेलन
के अन्तर्गत प्रथा रीतिरूप हैं। २१ अक्टूबर
तक विचार पर उद्योग विचार विचार
जायगा।

श्री खेर मांसी जायेंगे

बिहार के प्रधान मंत्री की
नीति लक्ष्मी

पटना, २६ अक्टूबर। बिहार के दश
मंत्री श्री श्रीकृष्ण सिन्हा की होरक जयन्त
पटना सारन्स कालेज के हॉल में पटना
के नागरिकों ने मनाई।

समारोह में बिहार के गवर्नर श्री जय
दास बोला राम ने सभापति का भा

श्री खेर मासी जायंगे
लगावज, २० अक्टूबर। स्वायत्त शासन

के मंत्री श्री ए० जी० खेर कल भास्ती क
बोरा करने के लिये खाना हूँगे।

वैसाधे एजेन्ट धोखा न खावें !!
हालों से होशियार

उस को सिक्के की तरह चलते देख कर निठल्ले आलसी
 और निकम्मों की जमान में पानी भर आया ।
 कर्ते—
 यह कहते हैं कि जितने बच्चे
 हैं, वे सबों का कोई माय नहीं है।
 और मजी बातें—
 यह कहते हैं कि जितने बच्चे
 हैं, वे सबों का कोई माय नहीं है।

[illegible][illegible][illegible]

सो यह है कि जो लोग अपने
बोध देते हैं। वे भी ठीक
यह बात नहीं।
हो मे जीव ज्ञान
प्राप्त हो।

ज

कुवर

१९५०-१९५१-५२

शिकार के जबरन भी करवा
 के पालन करने का नहीं प
 निहाल रहा हवारे बर
 निवाले एक भी, अब टुकट
 भय मरुतला है । कहीं म
 जिए
 के डकर थोड़ी थोड़ी साकर म
 की रहा है आप इसे चेंपे, इसमें
 जिए
 नहीं था, उसकी श्रीगमेश
 अविनाशनर सिंह आनु
 ही था, नक्काल को यह न
 जाता, वे नक्की चीज में
 हजम होती है ।
 माल नक्की नाओं में आये म
 में घर आन्की और दुसरी की
 ही हूँ। हाथ दुआए नहीं आता ।
 प्रलोभन
 न केते हूँ । माल पारलौं उमार हो
 कसे खुदायद करने में बड़े प्रयोग हो
 कर लस्या कर आनेको खुद कर
 बात
 माल वैचक आसदी की बड़ी से बड़ी
 में बड़े मन्त्री, जिन्हीं की ट्या करवा है ।
 में है । पालन को आचार्य की विधि
 । आसर्ष है कि मन्त्रोंमें की बह
 की जानका
 मयुर्वेदिक फा

तुमलक यहै पकड़ो हउ होइ है भय
आप अपने ब्राह्मण को दण्डी नाथ कहा
तो दूत विहायन को ऊन्है रिहल्यो।

मकरध्वज, रत सिद्धार, ताछ ति
बदाईन को रत और जायका एक
है और कोयम में भी फाँद। ये पाँचों
के मिश्रकर (सिगुन) मँबा कर पीत कर
रत्नों की मूल्य, चक्रन, कोयम और जायका
(सिन्धी) की मूल्य करन म जायका।
और करत का जायका मित्रता बुलाता
है। सोह भय मयि विग्रह कर भादि के
नभाज भयन की तरदु रूप र हो जे
रत म मित्रता बुलाता है गुणों में फाँद
आन को खेन हो जायकी। (बहौ को)
की तरदु रूप रत म जायके में नन भायन
का रूप रत म जायका फाँद एक का होइ
म बड़ा रूपन फाँद है।

जरा सु

होम्यौतविक की सभी बदाईनों की
कोई फाँद नहीं पर गुणों में ज्योन जरा
को फाँद जायको बज्जदौटी दाय म जरा
का प्रयत्न मत करिजे। यह बात अवयम
असर की येन मरी बातें आगुनी मातृ
जायना और मत है। औरी हुनकरावती
पर नवनी दया अगुनी नहीं हो बज्जती,
रफता है।

नकली पुड़ि

बेचना निग्रह दस—ये तीन पद
जब निगलन कर गिहें हूएरा जब येन
की हुल्लक है, निगलन के पीर पर पीर
कोई दस जोरा फा है या बेचना और
पेज लिखा गया है। जो पर कर उमकन

के लिए म

पुरानी चावलमयारी

[illegible]

मुसलमान के घर
से लड़की बरामद

इसलिए, २६ अक्टूबर । आज
को सब यहाँ के आर्गनेस डिग्री के
एक समर्थन प्रार्थना सत्र ७०००
को पाकिस्तान सन्ने का एकत्रित
है, के घर की अतिरिक्त विमान
है, डिग्री प्रोक्त सुपरिस्ट्रिक्ट
अतिरिक्त सिटी सविश्रुत ने
को ली ।
उसके घर ने डिग्री की कुछ चीजें तथा
एक डिग्री और सब इसकी संपत्ति के,
विश्रुत सब अपने सब पाकिस्तान के जाना
याहता था, अत्यंत दुर्लभ । संग की
अतिरिक्त कर लिया था है ।

नः तनाव बढ़ा
हिन्दू काफिले पर
परिणाम

मुस्लिम कंप सुरक्षित
 दाव में हिन्दू व तिब्बों के पक्ष
 हो जान के कारण अमृतसर में
 १३ अक्टूबर को जलसर के पास
 खबर-जिसमें बहुत स लोग मार
 मशीन बंद गई ।

संयुक्त प्रांत में कास
घटाने का निष्पत्ति

मागरा, रुद्र भक्तुवटः। यवज्जित के
 जाम्बवेज्जित आंफ पलिक इन्द्रमुक्ताग न
 एक यमो विजितो सन्तो अंजो हकलो
 के नाम जाये को जितन
 विजय जाम्ब के जितविल भव्य
 सोम जेते विजय और फनीयर को
 लेने को जाया हो है।

यह विचार छात्रों की नील चढ़ाने की
मांग के कारण किया गया है। छात्रों
को इस सिर्वासिले में ५० मी० में
आवृत्तित्व कहा किया था।

जनरल फ्रोंको

स्पेनको राजनीतिसे विदा होंगे
लंदन, २७ अप्रैलबर इस बातके बाव-
जूद भी पहले शनरल फुर्नोके अध्यक्षता
हृषकी खबर बहुत पहले आही गयी थी
निरपेक्ष पहले हट्टे गहीं, यहाँ यह आम
तौर पर विश्वास किया जाता है कि
प्रतिस्पर्धा फुर्नोके अध्यक्षता हृष करनेका
निश्चय करही लिया है।

छाया भन्विमंडल बनना
सकता है कि निर्वासित स्वेष्टिया रिप-
सिक्कन सत्तावादी नेता सेना प्रीटी
कम्पुनिल को कोट्टरक तमो कुंको रिपेक्षी
सहित एक छाया भन्विमंडल बनाएंगे।
भासपक्षीय क्षेत्रोंका कटुना है कि
परिपक्वतर छाया भन्विमंडल स्थापित
हो गया तो हमकी सेनाके प्रमुख जनरल
कुंको को राजनीतिसे बिदा लेने पर जोर
आयेगा।

बताते हैं कि छाया मन्त्रिमंडलकी योजना सेना प्रीटो तथा डानजभानके राजनीतिक सलहकार सेवर गोपसत्तन विटिषा विदेश मन्त्री से हर्द्वी गेट के समय उखुं गतायी है फ्रांस के विदेश मन्त्री को भी इसकी सूचना दे दी गयी बताते हैं।

गैर कानूनी यहूदी प्रवासो

किलिस्तान पहुँचनी निश्चित
सन्ध्या, २६ अगस्तपर वहाँ पहुँचने
वाली खबरोंसे अनुसार भूमध्यसागर तथा
कृष्णसागरके मर कानूनी पक्षियों का
किलिस्तान में उतरने की योजनाकी जानकारी
निश्चित है।

इस समय कोल से प्राप्त समाचार के अनुसार
यूरोपिया तथा कम्बोडिया की कृषि
तक कर १० हजार यहूदी एक
एक रोज के समाचारका कहना है
पश्चिम इटालियन समरगाहों
जहाँ जहाँ जर्मन यात्रा में थे
हैं।

संस्कृत के इतिहास के विषय में
जानने के अनुसार ही अज्ञान
के कारणों से वे लोग नाम के समान
मात्रों और मात्राओं के बिना ही
बाल और लता सहित जल में
पड़ना शुरू कर चुके हैं। जल में
पड़ने के बाद लता के अंशों में पड़ने
परिणत हो जा रहे हैं और फिर जल में
जल में लगे हुए रह रहे हैं। यह विचार
अज्ञान के कारण ही है कि जल में
जल में लगे हुए रह रहे हैं। यह विचार
अज्ञान के कारण ही है कि जल में
जल में लगे हुए रह रहे हैं। यह विचार

भारत व बर्मा के बीच समझौता बार्ता
पं० नेहरू के नेतृत्वमें भारतीय मिशन बर्मा जायेगा

एक, २६ अक्टूबर। बर्मा में हंदे-
मिशल नाम्नी धार्मिक मुन्ना ने एक
प्रमाणकर्म में सतनाया है कि भारत के
मन्त्रियों का एक मित्रज गवर्नर के
तीव्रतरे तत्प्राप्त में बर्मा जानाया। विदेशी
सामर्थों के मन्त्रों में नहक इत मित्रज
के संता होंगे। यह मित्रज बर्मा सरकार
के साथ भारत में बर्मा के बीच स्वाधी
सम्पत्ति के मित्रज बीच करेगा। अभी
तक दोनों सरकारों के बीच इत सम्पत्ति
में कुछ बातों हो चुकी है। दोनों सरकारों
के भावी सम्पत्तियों के बारे में मैं अपनी
श्रम भारत सरकार की दे दो। सत्ता
हस्तान्तरण के बाद तो प्र ही हमारे
भारत सम्पत्तियों मित्रज हो
जायेंगे। बर्मा के स्वतंत्र होने के बाद
ही हम सम्पत्तियों की बातचीत कर
सकेंगे। सम्पत्तियों की कपरेता सीमा
अभी। दोनों को कि मित्रज के साथ सम्-
पत्तियों की हैं। यह सम्पत्तियों अर्थ व्यापार
और व्यवसाय के सम्पत्ति रचनाया।
एता का प्रश्न कठना या भूतों प्रकाश का
सा संस्था है। बर्मा को भारत का एक
करोड़ सम्पत्ति देना है को कि अलग
होने के बाद के हमारे अलग अलग हैं।

लूट का माल उ मा कराद
मुक्तान कर्मिन्ने का आदेश

मल्लान २३ अक्टूबर । मल्लान
के शुभिम्बर ने अपनी छिपी हुई १ वन-
छिपी कुमिन्गर्षी की अतिशय श्रद्धा से
कि ये यह सोचना करत कि लट की
तनाम सन्तुष्ट, रिश्तत या मजदुरान
राज को नें जमा करतें । ऐसा करने
पर तनाम अविमर्शसे, साहू ने किसी
पदवी परस्थिति के हों, कड़ा कतिन
किया जायेगा ।

बिहार में मांहुला प्रालिस

पटना, २६ अक्टूबर । पता चला है कि बिहार सरकार ने जालों के इस्तेमाल के लिए जहाज तैयार कर रखे हैं, एक महिला पुलिस बंगाल का निवेदन किया है । पुलिस के इन्स्पेक्टर जनरल को यह पुलिस बंगाल का आदेश दे दिया है ।

वर्षों के बाद लह की नदियां

वर्षों से लहू की नदियाँ बहा कर भारतवर्ष सोच रहा था। पुरस्कार में उसे मिलेगी स्वतन्त्रता — जो सुख, सयुद्धि, सन्तान के प्रकाश से आलोकित होगी, जिसमें जीवन के चिरपोषित सपने मूर्त होंगे। पर हुआ क्या ? देश में शत्रों और घृणा, हिंसा और पशुता का ज्वालामुखी फूट पड़ा और आन को आन में सारा देश ध्वंश-धाय जल उठा।

आप प्रश्न करेंगे, “पर ऐसा हुआ क्यों ?” यदि इस प्रश्न का उत्तर चाहते हैं तो ‘नवयुग’ का दीर्घावली अङ्क पढ़िये।

आगामि १२ नवम्बर को दोहावाली के शुभ-अवसर पर आर्यक प्रिय साप्ताहिक 'नवयुग' का यह अङ्क अत्यन्त आकर्षक कलेवर के साथ आर्यक सेवा में प्रस्तुत होगा। इसमें सलिलकला, साहित्य, राजनिति, व्यवसाय, समाज-सुधार और अनुसन्धान आदि तथा कथा साहित्य से भरा होने के साथ राजनिति की वर्तमान उल्लेखनीय समस्याओं पर विद्वानों के गम्भीर और भजन्य लेख होंगे।

दर्जनां मनाराम चित्र और व्यंग चित्र । पृष्ठ संख्या ७६,
तिंगा मुख पृष्ठ और मूल्य केवल १० आना । आज ही अयन,
प्रति अयवा प्रतिगां सुरक्षित करा लें । विज्ञापक अपना स्थान
बुक करालें । विलम्ब होने पर स्वोत्तर न किया जायगा ।

निवेदन—
 यत्स्थायक—“नवयुग”
 पृ० न० ४६, मीरी गेट - दिल्ली ।

विभिन्न स्थानों में
भिन्न-भिन्न समय होते हैं, परन्तु...



✻ प्रारंभिक एशियाई प्रादेशिक सम्मेलन को



[१] बोनी सिधमंडल के नेता श्री राधो एलियाई सम्मेलन में भाग ले रहे हैं।
[२] बोनी सिधमंडल के सदस्य।
[३] एशियाई सम्मेलन में दलों की हस्तिल से भारत के मंत्री डा० राजेन्द्रप्रसाद, डा० मयारै तथा राजकुमारी अमृतकुमार और साधन कृष्णानी आदि।



स्थानीय समाचार

राशन कपड़े के डिपो शराबाधियों को राशन

मान राशन कमेटी की सभा श्री-पोरीसकर-सुद श्री अम्यक्षता में हुई। जिसमें बहुत ही सुन्दर प्रस्ताव पास हुआ।

१. देहली के मुत्तलमात दुकानदार जिनकी कपड़ों के राशन की दुकानें खाली हुई हैं उनमें से २० प्रतिशत दुकानें उन सरकारी भाड़ियों की देने का फैसला किया गया जिसकी संख्या में कपड़ों की राशन की दुकानें थी।

२. देहली के विला राशन बाजारों की भी साम राशन के दुकानदारों की निस्तता हुई जिनमें से अमल तितम्बर और अमर-दर का आया नाम सरकारी बाजारों के सरकारी फल में दिया जाएगा।

३. मान राशन कपड़ा कमेटी की ओर से भी राशन की दुकानें निस्तता हुई हैं जिनकी कक्षा मया है वह अपनी दुकानों पर एक थोड़ा स्याये जिसकी उनके विषय कोई विचार्यत हो वह मान राशन कपड़ा कमेटी के अध्यक्ष श्री को बल में।

भाषिकोतसब

मानसभाज नीवापदुल, देहली का भाषिकोतसब ५, ६, ७ दिसम्बर १९५० ई० को मनाया जावेगा।

—भास्कर रामगरीहुर लोडिया १५-१०-५० को हाल के ६ बजे जेल मर्माला, बड़ भाड़ा, (माओबाड़ा) में कर्मसाल अवस्था पर आम जलते में भाग्य होने।

कांग्रेस कार्यसमिति को बैठक

प्रमुख कांग्रेस नेता आमन्त्रित गई दिनांक २० जनवरी। कांग्रेस कार्यसमिति की बैठक आगामी ११ जनवरी को हो गयी है। राहुपति ने श्री जयकातासारासब, आचार्य बरिन्दरेड्ड डा० ए. टुंगी सोनारिया, वी० गोविन्द काननराम, श्री वी० जी० जे० श्री ए० के० वाटिल, श्री० रंगा और भास्करादर की बैठक में उपस्थित होने के लिये आमन्त्रित किया है।

(पहले पृष्ठ का का सोच)

श्री एडवर्ड होम गिरडिन इवान्स ने प्रधान मन्त्री के उन भावनों की सराहना की जो उन्होंने सम्मेलन के सामने रखी। उन्होंने अपने आतिथ्य के विषय भारत सरकार को धन्यवाद दिया और कहा कि नेहरू का नाम ऐतबार में बढ़े आधार से लिया जाता है।

अन्तर्राष्ट्रीय धर्म संघ की ओर से उन्होंने भारत और पाकिस्तान का स्वागत किया और आशा प्रकट की कि वे मानवीय भावों की दृष्टि में अपना पूरा योग देंगे।

श्री मिडल होम ने कहा कि इस सम्मेलन के निर्णयों पर हमें एशिया की कुछ समृद्धि और सामाजिक व्यापक शक्ति है। इससे न केवल एशियायी देशों का भला होगा बल्कि इससे अन्तर्राष्ट्रीय धर्म संघ को भी शक्ति मिलेगी। बर्लिन चर्चेश तो सब लोगों के एहसास सहज के स्तर को जला चलाया है दुर्भाग्य से इस समय युक्तिहीन अन्धकार पूर्ण है और अधिकांश अतिविधित हैं केवल कमकुमो योजनाओं और प्रस्तावों से इस सत्र को सफा नहीं पहुँचा जा सकता। सम्मेलनों की हल करने का प्रयास यह है कि सब मिल जुल कर एकमत से कार्य करें।

इस प्रादेशिक सम्मेलन में निम्न देशों की सरकारों, कार्यकारणों के मातृकों और भाषिकों के मंत्रों का सहभागिता हुआ है १ इस समय पूर्व की संस्कृति, बुद्धिमत्ता और अनुभव की लक्ष्मि अधिक आवश्यकता है। अन्तर्राष्ट्रीय धर्म संघ पूर्व और पश्चिम में अधिकाधिक निकट लायेगा।

भारत के विल मातृकों के प्रतिनिधि श्री रामने तथा भाषिकों के प्रतिनिधि श्री लोबनी करने भी सम्मेलन के प्रतिपक्षों का स्वागत किया।

इस दूर के दोनों ने सम्मेलन को सफलता की कामना की गई है। श्रीमती मरीजनी लालू बू की लोकनायक के पुन कामकाज के लिये प्रार्थना है।

एशियाई सम्मेलन

सिलेक्ट कमेटी के सदस्य

मन्त्री दिनांक २० जनवरी। एशियाई प्रादेशिक सम्मेलन की तिलेक्शन कमेटी के सदस्य निम्न स्थिति में चुने गये हैं—

अन्तर्राष्ट्रीय धर्म संघ की प्रधानकारिणी के प्रतिनिधि—

सर मिडलहोम-गिरडिन इवान्स श्री ईस्कर

श्री राघोस श्री एम० एम० जोशी

कारखाने वार गुड भारत-डा० श्री राम

चीन-श्री वू पाकिस्तान-श्री जाल

सिटी-श्री वेडिन हार्ल्ड-मालयेपासिजन

कॉल-मालयेपासिजन बर्लिन-श्री वू

सिन्हा-जनरल सल्लूर मुट्—

भारत-श्री एस० एम० मिरासकर

बर्लिन-पाकिन कुविन चीन-सिन्हा

सिन्हा-सिन्हा लोनीस-श्री एम० रांग

सिटी-श्री एम० रांग बर्लिन-श्री

पाकिस्तान-एम० ए० जाल सगावा-श्री शिम लामु

मालयेपासिजन-श्री मोंक

शाह को वष गाँठ

सोवियत दूत अनुपस्थित

नेहरू, २० जनवरी। ईरान निम्न सोवियत राजदूत दुबान सिन्हाको कल रात के कर्णिलव अवसर पर अनुपस्थित थे, जबकि अन्य सब देशों के राजदूतों ने उत्तर भाग लिया।

स्वनायकन सभाकार श्री इरीहाल मयाहीन श्री विद्यालयवर बर्लिन व पश्चिमपार द्वारा भारत आगमन निमित्त के निम्न निम्नलिखित बर्लिन-मरीजनी लालू बू की लोकनायक के पुन कामकाज के लिये प्रार्थना है।

प्रत्ये

पु

पु

पु

पु

पु

पु

पु

पु

पु

पु

पु

पु

पु

पु

पु

पु

पु

पु

पु

पु

पु

पु

पंजाब की समस्या के हल होने पर ही

भारत का भविष्य निर्भर

दंगे जारी रहे तो अकाल का भय
हिंदू मिला विरोधी भावना शुरू में हो गयी ज़ायदा

“आजारी अपने साथ संध्या का विधान लाने। पंजाब को मानव सम्पत्ति तथा सद्गुणों में विराजमान को भारी कीमत चुकानी पड़े। आज सुन्दर पंचदश अक्षर संध्या स सम्पन्न पड़ा हो रहा है। यद्यपि यह समय पूर्वी पंजाब में वास्तविक भावनाओं से रहित हो रहा है पंजाब में शांति और व्यवस्था स्थापित होनी है। अभी तक पंजाब को लुटारना को तुम्हें पता है। इस पर जोर बाजार बाजार का मिश्रण अक्षर तथा विद्वान् विद्वान् को विश्वास प्रदीपों भावनाएं हैं। आपन सरकार को यह संपत्ति अपनी हूँ करके संध्या जलना की सरकार सद्गुणों कराने की अभी है।”

पंजाब के प्रति कांग्रेस का महान उत्तरदायित्व
श्री शंकरराव देव का रोडियो भाषण

[illegible]

‘काश्मीर का अस्थायी सरकार’

लाहौर, २६ अगस्त, १९४७ : पाकिस्तान के रेडियो ने घोषित किया है कि काश्मीर की "अस्थायी सरकार" में मोहम्मद और बाराकिल्ला के बीच समान बहुमत नगरीय अधिकार कर दिया है। यह "अस्थायी सरकार" पूछ में किसी जगह से थक संचालन कर रही है।

अमरनाथ का 'शतक'
भारत ४५१ रन बना चुका



प्रहोली, २० अक्टूबर। आज के
दिन में सवाचारों में बताया गया है कि
भारतीय लोग में देख के पहिले १२२५
रुप नका दिया है। कमेंटेन अनुसार
में भी अपना धनक (सी रन) पूरा
कर लिया है। साथ में भारतीय लोग
में २५५ रुप बनाया। सब सिपायों
आपरे हो गए। हमारे रहे कि पहिली
बार में आरुंधिना में ५१८ रुप बनाकर
सब नाम कर दिया था।

पृष्ठ संख्या: १०

नवाब जु
करांची

कलकत्ता
 विभाग द्वारा
 गये।
 भाग
 सनाचार
 एक कर्मचारी
 बार के कर्मचारी
 दस्ताने के रूफ
 मधु मी खु
 यहाँ पर बंगल
 बसपीठ कर रहे
 भाग के आद इसने
 दल दिया जायगा

अमृतस
जाप

अधिकारिय
अमृतसर, २६ अक्टूबर
कार्फियों पर
एकाएक फरसना गये
हिन्दुओं और सिखों
पय-जल ही यहाँ पहुँचो

[illegible]

मुसलमान के घर
मे लड़की बगामत

[illegible]

न: तनाव बढ़ा
हिन्दू काफिले पर
परिणाम
मुस्लिम कंप सुरक्षित
पंजाब में हिन्दू व सिक्खों के पंदर
हो जाने के कारण अमृतसर
१. २३ अक्टूबर को अमृतसर के पास
की खबर-जिसमें बहुत से लोग मारे
गए।

संयुक्त प्रांत में फास
घटाने का निर्णय
आगरा, २६ अक्टूबर। भा.स. प्रांत
कार्यदेखर आज पत्रिका दूनदुहास
एक सप्ताही बिबुद्ध सती पंचों ल
के मास जारी की डि
शिक्षण शास्त्र के अतिरिक्त
कोश लेख शिक्षण और कृषिपर
लेख को जारी की है।
यह निर्णय शास्त्री की कोश घटाने
मास के मास किया गया है।
इस निर्णय को पूरा
आगे लेखन जारी किया जा

भारत व बर्मा के बीच समझौता वार्ता

[illegible][illegible]

क्यों से लहू की नदियाँ बहा कर भारतवर्ष सोच रहा था
 पुरस्कार में उसे मिलेगा स्वतन्त्रता — जो सुख, सद्गति, सन्तोष
 के प्रकाश से थालीकित होगा, जिसमें जीवन के चिरासित सपने
 मूर्त होंगे। पर हुआ क्या? देश में बाँटे और भ्रष्टा, रिसा और
 पशुता का ज्वालाखुरी कूट पड़ा और आनन की आन में नाश देश
 धीरे-धीरे जल उठा।

आर प्रश्न क्यों, "पर ऐसा हुआ क्यों?" यदि इस प्रश्न
 का उत्तर चाहते हैं तो "नवयुग" का दावावली अह पढ़िये।

यथामा १२ नवयुग को दोषावली के युग-अवयव पर
 आर के भिन्न भाषाशिक "नवयुग" का यह अह अत्यन्त आश्चर्य-
 कलेवर के साथ आशंकित होता से प्रमाण होगा। इसमें ललितकला,
 वाचन, साहित्य, भाषाशास्त्र, समाजशास्त्र, धर्म, विचार-विमर्श

कहना है कि वह पंचांग की तालिका की
 ओर मुड़ कराना है। आजकल तथा
 कलकत्ता की जिन परीक्षाओं में यह
 व्यवस्था बहुत है और दूसरे स्थान
 परते के इतिहास में कोई भी—संज्ञा
 भारत में। 'संज्ञा' आज पूर्ण पंचांग
 में वास्तविक तालिका नहीं है। यही है
 पर अभी वास्तव में व्यवस्था तालिका
 करती नहीं करती है। अभी तक
 कलकत्ता में ही है और कुछ की
 तुलना अभी बहुत बदलती है। इन
 वास्तविक तालिकाओं में ही वास्तविक
 तालिकाओं में ही वास्तविक तालिकाओं
 में ही वास्तविक तालिकाओं में ही
 वास्तविक तालिकाओं में ही वास्तविक
 तालिकाओं में ही वास्तविक तालिकाओं
 में ही वास्तविक तालिकाओं में ही

आपने सारे कड़ु मित्र (प्रायः की
सम्पत्ति विपुली है—एक मित्रकण तथा
मुक्त सहायता, दूसरी तथा प्राणीय जगत्
का हवाया निर्भरता तथा सामयिक
वर्षों की सहायता। सहायक
को भी हो सकता है कुर नहीं है और
प्रतिमान है कथोड़ के ऊपर सारा
कर नहीं है। आपने सारा मित्रि कर्त-
मान उपजगत्त विपत्ति खरी रही
की सहायता प्रमाण के पत्र में प्र-
काशना। सब ने कड़ी सहायता है
सारी क सहर्ष से जमान तथा भुवि देने
की, इस समस्त की जमान और मुक्त
हल पर ने सहायता की। समुद्रि कर्त
सहायता की साधन (प्रायः की)

[illegible]

भीतर न गुलत और मुरतन मतलब
 है कि हमें कसबेकी ओर न कड़ा बंधन
 होना। यक़ात की रोकना था तब।
 मरहताओं और ज़मानतों के भीन-
 के कालि कूट खड़े हैं।
हुवली में फिर तनातनो
 हुवली, २६ अक्टूबर। कूट खड़े पत
 के फिर कुछ तनातनो हैं। सब कुछों में
 तनातनो लगात है। भावनाएं का
 जितने सुखदेहेडे के भीन-के नेताओं के
 साथ अलग देखा का चीन ख रहा है।
हिन्दू ट्रेन पर हमला
 भीगुवर, २६ अक्टूबर। कुछ जरा-
 भागी भागी हुंदरावार (हिन्दु) के
 हुंकरन की धारा की रचना हुई है।
 हिन्दु सुखोरी के हुन के हुन हुन
 सारन भीड़ के सब दरदरसा दिवा।
 हुन हुन के हुन के भीन दूर है।
 हिन्दुओं की अरन जगन दास की बलि

मात्र। पादों की भाँति दूरदराज तक जाता
गया। तारों के काट वेगे से अधिक
प्रिलुप्त कलाभार नहीं दिखता है। ओषध
के अधिकारियों ने हँसनाभार और जोड़ने
के बीच तत्पक्ष धारियों का जाना जाना
अब कर दिया है।

भारत और पाकिस्तान की
मुसलमान शोध
सही नेतृत्व को आवश्यकता-
पादों, २० अक्टूबर। मुतकमान जवदा।

[illegible]

रत व हिराबाद
 भोले को आशा
 हिराबाद (पंजाब) २५ अक्तूबर
 मृत्यु के साथ धन्य है कि हिरा-
 बाद भारत के सौ प्रेममयी लोग
 का स्वागत किया जाता है।
 कि प्रभु स्वामीने के लिए भारत भर-
 में तो सतों की ओर निम्नान
 के भी सत्तों सत्तों लोगों के साथ
 प्रभु के साथ किया है। आशा की जाती
 है प्रभुजी भी भारत को स्वामी
 के रूप में मान्य है। क्योंकि स्वामीने के
 प्रभु को निम्नान में भी स्वीकार कर
 है। हिराबाद का प्रतिनिधि मंडल
 भारत को निम्नान आये और भवने
 प्रतिनिध निम्नान के लिये भारत तर-
 के सामने पैदा करेगा।
 ता मुग़ल मिला में हड़वाहा
 देवभक्त, २६ अक्तूबर। दिल्ली में

तत्पश्चात्तः कः अन्तर्गतः गीतापुर
नं नमजुरः सति पूषः दृष्टान्तः
रह्ये ह । इयं सितसिते नं भोतिकारी
असारी कः के यी मुकमसिह तथा
की नमजुरः सति गिरपत्तारः कः
मय ह ।

मिलतानेको आंदांलन
शुरू करेंगे
अन्तुल कयुम अंसारी
कि त बीच लारे भारतसयं के

[illegible][illegible]

१७
 १८
 १९
 २०
 २१
 २२
 २३
 २४
 २५
 २६
 २७
 २८
 २९
 ३०
 ३१
 ३२
 ३३
 ३४
 ३५
 ३६
 ३७
 ३८
 ३९
 ४०
 ४१
 ४२
 ४३
 ४४
 ४५
 ४६
 ४७
 ४८
 ४९
 ५०
 ५१
 ५२
 ५३
 ५४
 ५५
 ५६
 ५७
 ५८
 ५९
 ६०
 ६१
 ६२
 ६३
 ६४
 ६५
 ६६
 ६७
 ६८
 ६९
 ७०
 ७१
 ७२
 ७३
 ७४
 ७५
 ७६
 ७७
 ७८
 ७९
 ८०
 ८१
 ८२
 ८३
 ८४
 ८५
 ८६
 ८७
 ८८
 ८९
 ९०
 ९१
 ९२
 ९३
 ९४
 ९५
 ९६
 ९७
 ९८
 ९९
 १००

[illegible]

नरल श्रान्को
जन्मोविले विदा होने
३ प्रभारपर हल बासके बाध-
नगरल भुमके भवकास
महल पकटे बाह्य तपो भी
महल से, महो नवो भाग
महल विद्या काश हो नि
मने अस्वाका हन कनेका
विदा हो
सन्निभ उल वना
निवासिले हेनेति रिप-
नारी नैरा नैरा प्रीदो
महल पर लकी कुली विरोधो
ममिनाका दामावो
कोराल कश्मा हो नि
मा ममिनाका स्थापित
की तेमके प्रभार जनरल
मिति विदा भैने पर जोर

छाया भविष्यकालकी
 ओटो तथा वाहनप्राने
 गृहकार सेतर मेपसम
 म्मी से हुई भेंट के समय
 मांस के विरुद्ध मंढी को
 दे दी गयी बताते हैं ।
 ये यहूदी प्रवासो
 बहुत चना निश्चित
 अस्तुपर यहाँ मजिब
 नुसार भूमण्डलपर तथा
 कानूनी प्रवर्तियों का
 रने को चेष्टाकी जानी

[illegible]

हिन्दू से भरा होने के साथ राजनीति
समाजवादी पर विद्वानों के सम्मोह
नगराज चित्र और ज्योति चित्र। प्र
प्रश्न और मूल्य केवल १० धाना। सा
अतिरिक्त मुद्रित करा है। विचारक
विलम्ब होने पर स्वाकार न किया जा
निवेदन
समाचार—“न
पौ. ०८ ५६, मोनो सेट

स्थानों में
प्रेम-मित्र समय होते हैं,

IN

8-18 am
(भास्कर के घेरे)
अगर आप
दोपहर के ए
राय हैं? बर्हि
म बर्हि के इन्वितितान प्रत्यय तथा विक्रोपिवा
विधान से मने हैं।
हैं। हुनार मोनों के बालन से बर्हि की
हैं। बर्हि का बर विरा। विधिच नवनों में विधि-
हैं। परन्तु 'विश्व एक' जड़ियों के विधानवादी हो
वेत एतए हों।
बर्हि व बर्हिवा
विधान विक्रम
के विधान विधान
(८) १०
BOMBAY & CAL

सुख को बसमान
 और मनन ब
 संख्या ७६,
 व हो ब्रह्मण.
 नरना स्थान
 गा।
 युयु'
 विरक्तो ।

रन्तु....


 लव वरुण
 र वि चिन्तित,
 कागदकार की
 र के अक्षर
 रारे गायन

 रेलिया में धा
 म कानन होते
 रक भोज है।

and
CO.
 TUTTA

भूतता कर रहे हैं। इससे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ जैसी लोकहितैषी संस्थाका कुछ बिगड़नेका नहीं। हाँ, अवसरवादियों की ही अल्पकृता और विवेक शून्यताका परिचय अवश्य मिल जाता है। खेदका विषय है कि रुसका मुँह ताकनेवाले अपने देशके किसी भी शुभकार्यमें निष्कारण अड़ड़ा डालनेकी कुचैला करते रहते हैं।

बेनीपुरीजीका 'फासिस्ट'
पठनेके कई समाचारपत्रोंमें हालमें ही राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघके विषयमें एक लेख प्रकाशित हुआ है, जिसमें श्री रामकृष्ण बेनीपुरीने संघके विरुद्ध दुष्प्रचार किया है। उन्होंने जिस प्रकार मनगढ़न्ध बातें लिखी हैं, उनसे उनके दोषारोपणका सर्वथा खण्डन हो जाता है। फासिस्टकी आलोचना करनेमें उन्होंने जिस फासिस्ट भाषा प्रयोग किया है उससे उनके फासिस्टका पता चक जाता है।

आरम्भमें बेनीपुरीजी लिखते हैं 'उन्होंने (साबरकर) एकबार फिर हिंदुस्थानमें हिंदू साम्राज्य स्थापित किये जानेके सपने देखे थे। साबरकर साहब खुद ही कुछ दिनोंमें अपनी कल्पनाकी व्यर्थता समझ गये। मराठे युवक उनके स्वप्नको सत्य करनेके लिए जमीन आसमान एक कर रहे हैं।' राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघके सम्बन्धमें लेख लिखते समय हिंदू-इस्लाम-सम्राट् बीर साबरकरके 'हिंदू साम्राज्य स्थापित किये जानेके सपने' का उल्लेख करना अप्रासङ्गिक है।

संघ कोई राजनीतिक संस्था नहीं। यह तो विशुद्ध सांस्कृतिक संस्था है। यदि साबरकरजीने हिंदूराज्यका यह सपना भारतमें देखा ही तो लोगवालोंको भले ही मुगल साम्राज्यकी याद आये, बेनीपुरीजीको इससे घबड़ाना नहीं चाहिये। यदि यह सपना भारतमें न देखा जाय तो क्या आस्ट्रेलिया या अफ्रीकानियामें देखा जायगा! यदि यह सपना हिंदुओंके सिरमौर साबरकर नहीं देखें तो क्या यह रुसके पिट्टू देखेंगे? 'कल्पनाकी व्यर्थता' तथा 'मराठे युवकोंका जमीन-आसमान एक करना' परस्पर विरोधी वाक्य हैं जिससे बेनीपुरीजीकी उच्छिन्न स्वतः खंडन हो जाता है।

करना युवा समझा जाता तो देशके लाखों बाबूचर इससे वंचित रहते। देशकी मर्यादित रखनेके लिए अपनेरो वलिष्ठ बनाना नितांत आवश्यक है। इसी उद्देश्यसे राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघके सदस्य दण्ड वैठकी, डूल आदि अनुशासन सम्बन्धी कसरते करते हैं।

लीगी पत्रोंके फेरमें
पण्डित जवाहरकाळ नेहरूके नामकी डुहाई देते हुए बेनीपुरीजी राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघको 'फासिस्ट संस्था' बताने चले हैं। पण्डित जवाहरकाळ इसे फासिस्ट क्यों कहेंगे? वे तो राष्ट्रीय और अन्ताराष्ट्रीय परिस्थितिसे पूर्ण परिचित हैं। यह तो बेनीपुरीजीके लुवी छिद्रांतवाले मस्तिष्ककी उपज है। हो सकता है वे लीगी पत्र 'डान'के फेरमें पड़ गये हों जिससे संघके विरुद्ध दुष्प्रचार करनेमें उन्हें पाकिस्तानी प्रेरणा मिली हो। किसी भी संस्थाको फासिस्ट बनानेके लिए कुछ ठोस तर्क चाहिये। क्या बेनीपुरीजी संघको फासिस्ट बतानेके लिए कोई भी प्रमाण दे सकते हैं? वे लिखते हैं—'इसके लिए पूँजीपतियोंके सँठे आते हैं।' बिना प्रमाण की बातें लिखना सर्वथा अनुचित है। क्या संघवालोंने भी कभी अन्य संस्थाकी भाँति पूँजीपतियोंका मुँह ताका है? क्या संघके सदस्योंने भी किसी गुप्त काररवाई (अण्डरग्राउण्डवर्क) के लिए कभी दौरे कर पूँजीपतियोंके पैसेसे अपनी शोकी मरी है? बेनीपुरीजी यह भी जानते होंगे कि उनकी पार्टी तथा वे स्वयं आज पूँजीपतियोंकी कृपापर ही अश्वस्मित हैं। हाँ, पूँजीवादके विरुद्ध लिखना कुछ और ही है। पूँजीवादकी विरोधिनी संस्था भी आज पूँजीपतियोंपर ही अश्वस्मित है। संघ तो न किसीका समर्थक है और न किसीका विरोधी। वह भगवाभक्तके नीचे अपना उद्देश्य चरितार्थ कर रहा है।

'किसानों, मजदूरों और नीच सतहके मध्यवर्गके लोगोंके लिए संघको खतरा' बताना कोरा हास्यास्पद है। संघ तो किसानों, मजदूरों और नीच सतहके लोगोंकी अपनी संस्था है। वह किसी भी भाँति या बर्ग विरोधकी प्रेरण नहीं।

योजनाएँ तैयार हो चुकी हैं। अब एकमात्र आधार उस विश्वभरका है। आज भाव-कुभाव जिस प्रकार बन पड़े, उसका नाम देने—उसकी धारण करनेपर उसका प्रसाद अतिमुल्य है, क्योंकि वही सच्चे अर्थमें 'दानानाथ' दीनबन्धु है। अतः समस्त सनातनधर्मी जनताका कर्तव्य है कि इस अवसरको हाथसे न जाने दे।

किसानों, मजदूरोंको तो वस्तुतः खतरा है उस संस्थासे जिसके कार्यकर्ता उन्हें बहका रहे हैं, उन्हें आपसमें कड़ाकर अपनी सैली भर रहे हैं, उनके भोलेपनसे अपना नेतागिरी बना रहे हैं। मैं तो बेनीपुरीजीसे कहूँगा कि वे अराजकता फैलानेवाली इस समाज विरोधिनी संस्था—जिससे वे प्रायः परिचित ही होंगे—पर प्रतिबन्ध लगवानेकी चेष्टा करें। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ तो अराजकता और समाज विरोधी अनाचार दूर करनेके लिए सदा तैयार ही है।

विहारके किसान और मजदूर अब किसी भी समाज द्रोही संस्थाके चंशुलमें नहीं पड़ सकते। वे यथार्थता समझ गये हैं। उनका हृत्काव राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघकी ओर है जो देशकी इन संकटमय घड़ियोंमें समाज और सारे राष्ट्रके लिए सर्वथा अनिवार्य है।

अर्धशिक्षित कौन?
बेनीपुरीजीका कहना है कि संघमें 'अर्धशिक्षित' लोग हैं। यह जानी हुई बात है कि संघको स्कूल-कालेजोंके छात्रों और अभ्यापकों, वकीलों, सम्पादकों, डाक्टरों आदि विभिन्न वर्गके लोगोंका सहयोग प्राप्त है। उसके संचालक और कार्यकर्ता बिद्वान् समझकर ही बनाये जाते हैं। तब फिर बेनीपुरीजीकी 'अर्धशिक्षा'से क्या तात्पर्य है वे स्वयं जानें। क्या बेनीपुरीजी बतायेंगे कि उनका सुशिक्षित, अर्धशिक्षित अथवा अशिक्षित होनेका मानदण्ड क्या है? निरंकुशताका भाव प्रदर्शन करना तो इस तर्कमय युगमें उचित नहीं।

अंतमें बेनीपुरीजीके शब्दोंको (व्यंग्यात्मक ही सही) डुहराते हुए मैं यही कहूँगा—'नीचबानो, राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघके शब्दोंके नीचे आओ। हम भी राष्ट्रीय हैं।'

योजनाएँ तैयार हो चुकी हैं। अब एकमात्र आधार उस विश्वभरका है। आज भाव-कुभाव जिस प्रकार बन पड़े, उसका नाम देने—उसकी धारण करनेपर उसका प्रसाद अतिमुल्य है, क्योंकि वही सच्चे अर्थमें 'दानानाथ' दीनबन्धु है। अतः समस्त सनातनधर्मी जनताका कर्तव्य है कि इस अवसरको हाथसे न जाने दे।

वीतराग महाराम कृपाजीजीने सप्ताह मनानेके लिए जो उद्देश्य और प्रकार अपनी ऋतभरा प्रज्ञा द्वारा अनुसन्धान कर हम लोगोंके लिए प्रकाशित किये हैं, प्रस्तुत लेखमें उनका उल्लेख अप्रासंगिक न होगा। 'करतक-भिक्षा' और 'तत्तल-वाचः' का कठोर-मती भारतका यह सच्चा महात्मा इदताके साथ भारतीयोंके नाम आदेश देता है कि—

'धर्म ही समस्त विश्वाका धारण पोषण, संवर्धन-सामञ्जस्य, ऐकमस्य करनेवाला है, अतः भारतियोंका अपने हिनार्थ उसका अनुष्ठान करते रहना जीवनका अत्यावश्यक कर्तव्य है। धर्मसे नाता तोड़ मनुष्य कभी अपनी उन्नति नहीं कर सकता—वर्चिष्णु व्यक्ति या राष्ट्रको बिना धर्मानुष्ठानके कोई चारा ही नहीं। देश, काल एवं परिस्थितिकी विषमताओंको देखते हुए आज भोजः प्रेयका जनक यही धर्मानुष्ठान एक कठिनतम साधन बनता जा रहा है। दैनन्दिनकार्य कलापोंकी व्यस्तताके कारण मानव को अवकाश ही नहीं मिलता कि वह नियमतः भगवदुपासना या धर्मानुष्ठान करे। ऐसे लोगोंके लिए 'धर्मसंघ-सप्ताह'के सात दिन स्वर्ण अवसर है। इन दिनों वह यथा शक्ति नियमतः धर्मानुष्ठान द्वारा भगवदाराधन करे तो उससे भी उसकी उन्नतिमें सहायता पहुँचेगी। इन सात दिनोंमें राष्ट्रके सभी व्यक्ति एक संकल्पसे अपनी संघ शक्ति द्वारा भगवान्को मनार्थ-पुकारें तो राष्ट्रोन्नति सुनिश्चित है।' गोपाधर्मीके दिन राष्ट्र माता गायत्री

आमदनीप है। यथापि सरकारका आदेश आयकर आंकनेकी अन्य विधियाँ भी बतायी जाती हैं पर उनसे वस्तुतः लाभ नहीं हो पाता और न वे ठीक ठीक कार्यान्वित ही की जा सकती। विवरणके आंकड़ों पर विचार करनेसे पता चलेगा कि ठीक आयकरकी दर ही अत्यधिक नहीं पर इसके अतिरिक्त पाकिरी वालोंको दिये जाने वाले ५० प्रतिशत बोनसकी रकम पर भी टैक्स देना पड़ता है। अनुमानित आकड़ेपर अनुपातसे तो हुई रकम भी सरकार वापस नहीं करती। वस्तुतः आयके आधार

सविधि पूजाके बाद यह सप्ताह प्रारंभ कर कार्तिक पूर्णिमातक मनाना चाहिये। प्रति दिन ब्राह्म मुहूर्तमें उठकर भगवन्नाम संकीर्तनके साथ प्रभातफेरी कलनी चाहिये। फिर गंगा या यथासुलभ तीर्थार्थमें स्नानकर 'धर्मस्थानधर्माभ्युत्थाननिवृत्ति' पूर्वक धर्मसंस्थापनार्थ विश्वकल्याणार्थक्य के संकल्पसे अपने हृदयका जप, पाठ, पूजन आदि प्रातःकालीन कुर्य सम्पन्न किये जायें। अपराह्ण समय अपने गांव या नगरके प्रमुख सार्वजनिक स्थानों वा मंदिरोंके प्राङ्गणोंमें प्रति दिन धर्मोपदेशका आयोजन कर्तव्य है। बीचमें एकादशी और पूर्णिमाको उपवास विशेष फलप्रद है। अन्तिम दिन धर्मानुष्ठान और भी अधिक करना चाहिये। इस सप्ताहमें यथाशक्ति दान, होम भूदेव अर्चनादि भी विहित हैं। सार्वजनिक उपदेशादिको व्यवस्था न होनेपर कमसे कम सायंकालके समय घरके सभी पारिवारिक जनोंके साथ उपर्युक्त संकल्पसे भगवत्संकीर्तन करना चाहिये। अपने यहां सप्ताह मनाकर केन्द्रीय कार्यालयमें उसका विवरण भी भेजना चाहिये।

स्मरण रहे कि यह 'धर्मसंघ-सप्ताह' किसी रक्षाविशेषकी वस्तु नहीं, बल्कि समस्त ईश्वरविश्वासी भारतीयों, विशेषतः समस्त सनातन धर्मियोंकी वस्तु है। सनातनधर्ममें धर्मानुष्ठान समग्रविशेषका बड़ा ही महत्त्व माना गया है। कार्तिक मासके ये अन्तिम दिन—जिनमें भगवान् चार मासकी योगनिद्रासे

से ६० हजार नये एजेण्ट प्रतिवर्ष नियुक्त किये जाते हैं। छोड़नेवालोंकी संख्या बाद भी कर रहे हैं तो अनुमानतः १९४६ में १॥ लाख नये एजेण्ट बढ़ें होंगे। १९४५ तक इन एजेण्टोंकी मददसे ५॥ अरबसे भी अधिक रुपयेको २३ लाख पालिसियों जारी हुईं। भारत जैसे आर्थिक दृष्टिसे पिछड़े देशके लिए यह प्रयास उपेक्षणीय नहीं शुद्ध आश्चर्य है कि राष्ट्रीयकरणके पोषक निवा व्यवसाय और पूँजीको (पृष्ठ ७ कालम २ में)

प्रयुक्त होते हैं, धर्मानुष्ठानार्थ परमावश्यक है। धर्मयुद्धकी पांच मांगोंमें 'भारतमें गोवधनदीकी माँग' सर्वप्रथम है। अतः हम सप्ताहमें भारतमें गोवध अवैध घोषित करा देना ही सप्ताहकी सफलता है। इसके लिए प्रत्येक व्यक्ति गोचर-भूमि छोड़े, गोशालाएँ बनायें और 'सर्वसाधारण यथाशक्ति गो-सेवाके साथ अधिकारियोंके पास पत्रों, तारोंका ताँता लगा दे। प्रत्येक हिन्दू बिना 'गोप्रास' निकाळे भोजन ग्रहण न करनेका व्रत ले। अधिकाधिक संख्यामें 'धर्मवीर वल'में भर्ती होगा परमावश्यक है। पण्ड-पुरम धर्मयुद्ध जोरोंपर है, अधिकाधिक संख्यामें वह भी धर्मवीरों की मर-मिटनेके लिए माँग कर रहा है। इसकी उपेक्षा भी कम आत्मघातक न होगी। भारतके कोने-कोनेसे पुण्यपाद स्वामी श्रीकृपाजीजीकी कारामुक्तिके लिए आवाज बुलन्द करना भी हमें न भूलना चाहिये। इसके लिए धर्मसंघकी प्रत्येक शाखा अपने यहां प्रस्ताव पास करे और पत्रों, तारोंका ताँता लगाकर केन्द्रोप एवं प्रांतीय अधिकारियोंको स्वामीजी को छोड़नेके लिए विवश कर दे। स्वामीजीकी अनुसरस्थितिमें 'धर्मसंघ सप्ताह' नाना दुःखद और लज्जास्पद घटना है। धर्मसंघकी करीब हजार संख्यातक पट्टेची हुई 'ये शालासमाप'काम न आयी तो उनका उपयोग ही क्या रहा! आज हमारा भाव तो यह होना चाहिये कि—'इतना स्वर्ग' प्राप्त्यामि, भिक्षा वा महीं भोग्यामि।'

वाराणसी

नासिक के हिंसा मजिस्ट्रेट ने हैदराबाद जानेवाली कुछ मोटरों को मनमाड के पास रोक दिया है। इन ट्रकों में सेमें, बाबरसेर और फौजी इंजीनियरिंग विभाग के सामान युक्त रूपसे के जाये जा रहे थे।

सनातनी जगत

मांदिर शुद्धि आन्दोलन

श्रीशंकराचार्य पंढरपुर पहुंचे

पंढरपुर, २१ नवंबर। मंदिर शुद्धि के लिए गोविन्द बुआ चारगांवकर तथा बेड़ेकर अंगिरस के नेतृत्व में धर्मवीरों का चौथा जत्था बिहड़ल मंदिर में गया। धर्मवीरों ने मंदिर शुद्धि के नारे लगाये। पुलिस और अधिकारियों ने रोकथाम नहीं की। जगद्गुरु श्रीशंकराचार्य यहां पहुंच गये हैं।

गोवध बन्द होगा ?

धर्मसंघ के सत्याग्रही रिहा होंगे ?

लखनऊ, २२ नवंबर। प्रान्तीय सरकार विभिन्न म्युनिसिपल बोर्डों द्वारा गोवध बन्दी के प्रस्तावों पर विचार कर रही है। काशी, प्रयाग आदि तीर्थ स्थानों के प्रस्तावों पर विशेष रूप से ध्यान दिया जायगा। सरकारी बन्दाने बताया कि साम्प्रदायिक सद्भावना के विचार से बकरीद पर गोवध बहुत कम हुआ स्वामी करपात्रीजी द्वारा संचालित गोवध बन्दी सत्याग्रह में गिरफ्तार मयुरा के ५० सत्याग्रहियों को रिहा करने के प्रश्न पर भी विचार हो रहा है। गोवध की समस्या समाप्त प्रायः होने से लोगों ने उन्हें छोड़ने के लिए प्रान्तीय सरकार से अनुरोध किया था।

डाकू ५॥लाख लेकर चम्पत

कराची, २१ नवंबर। यहां दिन दहाड़े एक भीषण डकैती का समाचार मिला है। बैंक आफ इंडिया का चंपरासी ५॥लाख ७० हजार रुपये लेकर बन्दर रोड स्थित अपने दफ्तर में जा रहा था। इतने में पीछे से एक मोटर आयी। मोटर के आदमियों ने उसपर गोलीयाँ चलायी और वे रुपये लेकर चम्पत हो गये।

सिंधु प्रदेश खतरा

सिंध के हिन्दू पाकिस्तान सरकार के मिथ्या आश्वासनों पर भरोसा नहीं करते और अपने जानमाल की सुरक्षा न देखकर वहां अत्यधिक संख्या में हटना चाहते हैं लेकिन पाकिस्तान के अधिकारी उनके हटने के लिए यत्न नहीं कर रहे हैं। केवल हैदराबाद में (सिंध) ही ३० हजार हिन्दू भारत आने की प्रतीक्षा में पड़े हैं। पाकिस्तान सरकार ने जोधपुर आनेवालों को नौ बन्द कर दी है। सिंध के लगभग ३-४ लाख हिन्दू भारत आ चुके हैं और बहुत से आने वाले हैं।

वहां हिंदुओं की स्थिति बड़ी दयनीय है। उन्होंने आत्मरक्षा के उद्देश्य से मुसलमानों की भांति जिना टोपी और मुसलिक पोशाक धारण करना आरम्भ किया है। अधिकांश शिक्षित हिंदू जियां भारत चली आयी हैं, जो हैं भी वे घरो से बाहर नहीं निकलते। पाकिस्तानी अधिकारी अपने आश्वासनों के विपरीत सिंध सरका के पुलिस दल से हिंदुओं को निकास रहे हैं। हिंदू कलकत्ता तक अपने पदों से हटाय जा रहे हैं।

बहावलपुर में अत्याचार
बहावलपुर राज्य के प्रधान मन्त्री नवाब मुस्ताक अहमद गुरमानी ने सरदार पटेल के जवाब में एक वक्तव्य प्रकाशित किया है। सरदार पटेल ने हाल में ही कहा था कि बहावलपुर राज्य में हिंदुओं तथा सिखों को वर्णनातीत संकटों का सामना करना पड़ा। वे ३० हजार की संख्या में मारे गये। नवाब मुस्ताक अहमद का कहना है कि राज्य में कुल १ हजार से अधिक व्यक्ति नहीं मारे गये।

फ्रांसीसी भारत स्वतंत्र

पांडिचेरी, २१ नवंबर। पेरिस से सूचना मिली है कि भारत के ४ प्रौच नगर पांडिचेरी, काकीकट, माही और अनाम स्वतन्त्र नगर घोषित कर दिये गये हैं। चन्द्रनगर पहले ही स्वतन्त्र हो चुका है।

श्रीमामा अमेरिका पहुंचे

न्यूयार्क, २१ नवंबर। भारत के वाणिज्यमन्त्री श्रीमामा आन यहाँ पहुंच गये।

औद्योगिक आर्थिक बिल 'विशेष सामांति' के सिद्धि विदेशी नियन्त्रण बिल स्वीकृत— —संघ व्यवस्थापिका सभा की कार्रवाई

नयी दिल्ली, २१ नवंबर। आज संघ व्यवस्थापक सभा में अर्थमन्त्री का 'औद्योगिक आर्थिक सहायता संघ' बिल सिलेक्ट कमेटी के सुपुर्द हुआ। यह मन्त्री का विदेशी (नियन्त्रण) बिल भी स्वीकृत हुआ। मजदूरों के लिए 'राज बीमा-बिल' पर बहस हो रही थी कि बैठक स्थगित होगी।

आर्थिक बिल पर बहस

अर्थमन्त्री के बिल पर भाषण करते हुए श्री वे. टी. शहने कहा कि इस बिल से पूँजीपतियों को ही अधिक लाभ होगा अतः इसे और भी व्यापक बनाने की आवश्यकता है। श्री हृदयनाथ कुँवर ने कहा कि आर्थिक संघ की पूँजी ५ करोड़ रुपये से अधिक रखनी चाहिये। प्रोफेसर रंगने कहा कि आर्थिक संघ का हिस्से अधिक से अधिक १०० रुपये का रखा जाय और छोटे उद्योगों एवं ग्राम्य उद्योगों की भी सहायता की जाय। अर्थमन्त्री ने बहस पर उत्तर देते हुए बताया कि प्रस्तुत बिल का उद्देश्य व्यापक रूप से विभिन्न उद्योगों की सहायता करना है। मैं चेष्टा करूँगा कि इसी तरह के बिल प्रांतीय द्वारा बर्माओं और देशी राज्यों में भी स्वीकृत किये जाय। कृषक वर्ग की सहायता के लिए केन्द्रीय आर्थिक संघ स्थापित होगा। इससे देश की आर्थिक स्थिति में सुधार होगा शरणार्थियों के पुनर्वास की समस्या सुलझाने में विशेष संघ स्थापना की आवश्यकता पड़ेगी। श्रीचेट्टी ने पुनः कहा कि हमारा उद्देश्य एक ऐसे आर्थिक संघ की स्थापना करना है जो हमारे उद्योगों की सहायता करे। उस पर दल वा व्यक्ति विशेष का एकाधिपत्य न रहेगा। किसी भी प्रकार के शोषण को बन्द करने के लिए हमारे पास पर्याप्त शक्ति और अधिकार हैं। पूँजीपतियों और मजदूरों को जनहित के लिए अनिवार्य संलग्न रहना चाहिये। अर्थमन्त्री श्रीजगन्नीवनराम ने राज बीमा बिल पेश करते हुए बताया कि कल-

कारखाने में काम करनेवाले मजदूरों के लिए यह बिल अत्यन्त लाभ कारक होगा।

सामयिक प्रश्नोत्तर

श्रीमण्डलजीको उत्तर देते हुए नेहरू जीने कहा कि भारत ने संयुक्त राष्ट्र संघ को १९४७ का चन्दा दे दिया है। आपने यह भी बताया कि भारत सरकार ने पूर्वी पंजाब सरकार को आर्थिक सहायता देने का वचन दिया है। श्रीनिधोगीने बताया कि शरणार्थी शिविरों से लोगों के हटाने का कार्य एक सप्ताह में शुरू होगा। नेहरू जीने प्रोफेसर रंगने के प्रश्न के उत्तर में कहा कि 'बर्मा निष्कासन बिल' के सम्बन्ध में बर्मा सरकार से पुनः बातचीत होगी और लंका स्थित भारतीयों के सम्बन्ध में सिंहल सरकार से भी विचार विनिमय होगा। सेठ गोविंददास को उत्तर देते हुए प्रधानमन्त्री ने कहा कि भारत के विरुद्ध विदेशों में जो प्रचार हो रहा है उसे रोकने में सरकार प्रयत्नशील है।

प्राचीन आदर्श न भूलें

प्रयाग में श्रीपंतजी का भाषण

प्रयाग २१ नवंबर। राष्ट्रीय विज्ञान परिषद् के १७ वें अधिवेशन में भाषण करते हुए युक्तप्रांत के प्रधानमन्त्री श्रीगोविन्द वल्लभपन्त ने कहा कि विज्ञान की सहायता से जीवन सुखी बने यही हमारा उद्देश्य होना चाहिये। विज्ञान के मूलभूत सिद्धांतों के सम्बन्ध में प्राचीन भारत में काफी ज्ञान-बीन की गयी थी। भारतीय ऋषियों और अध्यात्मवादियों ने विज्ञान द्वारा जिस लक्ष्य की प्राप्ति की थी वे आज भी अत्यन्त उपयोगी सिद्ध होंगे। वैज्ञानिक उन्नति करते हुए हमें अपने पूर्वजों का आदर्श न भूलना चाहिये।

—पटना। दिसम्बर के तीवरे सप्ताह में विशुद्ध प्रांतीय छात्र कांग्रेस के अधिवेशन का उद्घाटन भारत के शिक्षामंत्री मौजाना आजाद करेंगे।

नगर रक्षकों की मर्ती प्रांतों की रक्षा के लिए आवश्यक

मद्रास, २१ नवंबर। मद्रास सरकार ने पुलिस की सहायता और शान्ति स्थापना के १० जिलों में नगर रक्षकों के संघटन का निर्णय किया है। प्रत्येक जिले में १ हजार नगर रक्षक रहेंगे। मैसूर के भूतपूर्व दीवान सर अलविथन बन्जी ने एक वक्तव्य में कहा है कि वर्तमान नीति के अनुसार सरकार शान्ति स्थापना में समर्थ नहीं हो पा रही है अतः प्रत्येक प्रान्त में एक वर्ग विशेष द्वारा जो हथियार धारण किया जा रहा है उसको रोकने के लिए यह आवश्यक है कि नगर रक्षकों का संघटन हो और उन्हें बन्दूक आदि देने का नियम बनाया जाय। भाषा के आधार पर जो प्रांतों के संघटन को आवाज उठाया जा रही है उसके सम्बन्ध में भी मुझे यह कहना है कि भारत सरकार ने अत्यन्त काफी अनुभव प्राप्त कर लिया है अतः उसे इन प्रश्नों को शीघ्र तय कर देना चाहिये अन्यथा इस अशांति से हमारी सारी योजना विकल हो जायगी।

नयी दिल्ली, २१ नवंबर। आज प्राचीनोत्तरान्त भाषण में पुनः गोविंदजी चर्चा करते हुए गांधीजी ने कहा कि सकेन्द्र बनने मुझे बताया कि मुझे के समस्त देश में सैनिकों के लिए बहुत सी दुग्धशालाएं चलायी गयीं थी जो अब भी बनी हैं। मैंने कुछ वर्षों हुए दंगलोर की एक दुग्धशाला देखी थी। वहाँ एशिया की एक सर्वश्रेष्ठ गाय जो ३७। सेर दूध देती थी। दुग्धशाला का प्रत्यक्ष अर्थ था। बहुत सी बुरी बातें भी थीं। बेकाम बछड़ों को मार डाला जाता था। ऐसी दुग्धशालाओं के पास सेकड़ों एकड़ जमीन है और उनपर करोड़ों रुपये खर्च होते हैं। अब विदेश सैनिक यहां से हट गये हैं। मुझे विश्वास है कि भारतीय सैनिक साधारण नागरिकों से अधिक सुविधा न चाहेंगे। खादी प्रतिष्ठान के जीवतीचन्द्रदास ग्रामने गाय और भैंस के बारे में बहुत उत्तम पुस्तक लिखी है। उसका बगला और हिन्दुस्तानी में अनुवाद भी हुआ है। इस पुस्तक से सबको लाभ होगा। 'हिंदू' शब्द को चर्चा करते हुए गांधीजी ने कहा (५४ काष्ठ ५ में)



हमारे यहां हर तरह की तेज की धानियां (कोल्हू) पावर से चलनेवाली तथा हाथ से तथा बैल से चलनेवाली और हर सार्वजनिक गन्ना (ईल) पेरने की मशीनें तैयार मिलती हैं तथा सार्वजनिक होलर के सब रकम के पार्ट्स तथा सब रकम की तेज की धानियों के तथा गन्ना (ईल) पेरने के कतके पूरे तैयार मिलते हैं। हम इस मामले में स्वयंसेवक हैं तथा सब प्रकार के दलार का काम भी होता है। परीक्षा प्राथमिक।

शिवपुर इन्जीनियरिंग एण्ड फाउण्डरी वर्क्स

१२०, हरीसन रोड, कलकत्ता।

फोन : बी० बी० ५५५१ एवं १०४
